डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-aadhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG-5

# आधुनिक समाचार

PG-8

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

सिनेमाःगंगूबाई काठियावाड़ी' संजय लीला भंसाली की है 10वीं फिल्म

वर्ष -07 अंक -349 प्रयागराज, शुक्रवार 25 फरवारी, 2022 पृष्ठ- 8 मूल्य : 2.00 रूपये

## संक्षिप्त समाचार

**प्रधानमंत्री इमरान खान को अमेरिका की नसीहत कहा- रूस की कार्रवाई पर आपत्ति जताए पाकिस्तान**

**वाशिंगटन।** रूस और यूक्रेन के हालात के बीच पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान दो दिवसीय रूस दौरे पर पहुंच गए हैं। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान की मास्को यात्रा पर संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रतिक्रिया आई है। अमेरिका ने कहा कि रूस द्वारा यूक्रेन पर लिए गए फैसलों पर आपत्ति जताना हर जिम्मेदार देश की जिम्मेदारी है। अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता नेड प्राइस ने बुधवार को कहा कि अमेरिका ने यूक्रेन के हालात पर पाकिस्तान को अपनी स्थिति से अवगत करा दिया है। नेड प्राइस ने एक प्रेस वार्ता के दौरान कहा कि अमेरिका यूक्रेन के साथ अपनी साझेदारी को अमेरिकी हितों के लिए महत्वपूर्ण मानता है। इसलिए हमने रूस द्वारा यूक्रेन पर लिए गए फैसलों के बारे में अपनी स्थिति से पाकिस्तान को अवगत करा दिया है और हमने उन्हें युद्ध पर कूटनीति को आगे बढ़ाने के अपने प्रयासों के बारे में जानकारी दी है। दरअसल, पाकिस्तानी प्रधानमंत्री बुधवार को राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मिलने और आर्थिक सहयोग सहित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए मास्को पहुंचे हैं। बता दें कि खान के मास्को पहुंचने से पहले अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन व अन्य पश्चिमी देशों ने यूक्रेन पर हमला करने के कारण रूस पर कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए। रूस और पश्चिमी देशों के बीच बढ़ते संकट के बाद इमरान खान रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मिलने वाले पहले विदेशी नेता है।

**शहरी स्थानीय निकाय चुनाव में ट्रांसजेंडर उम्मीदवार आर गंगा नायक ने वेल्लोर नगर निगम से जीत हासिल की**

**तमिलनाडु।** तमिलनाडु शहरी स्थानीय निकाय चुनाव की कल, 22 फरवरी को मतगणना हुई, जिसमें 21 निगमों, 138 नगर पालिकाओं और 490 नगर पंचायतों के लिए वोटिंग की गई। ?चुनाव में एमके स्टालिन के नेतृत्व वाली द्रमुक और उसके सहयोगियों ने 12,800 से अधिक वार्ड सदस्य पदों में से दो-तिहाई पर जीत हासिल करते हुए, सभी 21 नगर निगमों पर कब्जा कर लिया। वहीं इस जीत में डीएमके के ट्रांसजेंडर उम्मीदवार आर गंगा को वेल्लोर नगर निगम से 15 मतों के अंतर से जीत मिली है। 49 वर्षीय ट्रांसजेंडर गंगा नायक वेल्लोर निगम से तमिलनाडु शहरी स्थानीय निकाय चुनाव में जीत हासिल की।

## रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने किया जंग का ऐलान, यूक्रेन की राजधानी कीव समेत कई जगह हुए जोरदार धमाके

**मास्को।** रूस और यूक्रेन के बीच विवाद लगातार बढ़ता ही जा रहा है। दोनों देशों के बीच हालात युद्ध के करीब पहुंच चुके हैं। इसी बीच रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन के खिलाफ सैन्य अभियान' की घोषणा कर दी है। उन्होंने कहा युद्ध को टाला नहीं जा सकता। समाचार एजेंसी एएफपी के अनुसार रूस के राष्ट्रपति ने आदेश जारी करते हुए कहा कि अगर यूक्रेन पीछे नहीं हटता है तो जंग होकर रहेगी। पुतिन ने यूक्रेनी सेना को धमकी देते हुए कहा कि जल्द से जल्द हथियार डाल दें नहीं तो युद्ध को टाला नहीं जा सकता है। वहीं यूक्रेन से लगातार धमाकों की आवाज सुने जाने की खबर आ रही है। एएफपी ने जानकारी दी है कि कीव में एक जोरदार धमाका सुना गया है। इससे पहले पूर्वी यूक्रेन में गोलाबारी की आवाज सुनाई दी थी। सोशल मीडिया पर भी कई लोग अलग-अलग जगहों पर ब्लास्ट का दावा कर रहे हैं। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा यूक्रेन में 'सैन्य अभियान' की घोषणा के बाद यूक्रेन में कच्चे तेल की कीमत 100 डालर प्रति बैरल के पार पहुंच गई है। रूसी राष्ट्रपति पुतिन के यूक्रेन के खिलाफ सैन्य अभियान' की घोषणा के तुरंत बाद यूक्रेन में कई जगह धमाकों की आवाज सुनी गई है। एएफपी के अनुसार, यूक्रेन के पूर्वी बंदरगाह शहर मारियुपोल में शक्तिशाली विस्फोट की आवाज सुनी गई है। भारत में यूक्रेन इंटरनेशनल एयरलाइंस के एक अधिकारी ने बताया कि यूक्रेन इंटरनेशनल एयरलाइंस का एक विशेष विमान 182 भारतीय नागरिकों के साथ आज सुबह 7:45 बजे कीव से दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुंचा है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में रूस के प्रतिनिधि ने कहा पुतिन ने जिस स्पेशल आपरेशन का ऐलान किया है, वह यूक्रेन के लोगों को बचाने के लिए है जो सालों से पीडिता थे। जो भी फैसले हुए हैं वे चार्टर के आर्टिकल 51 के हिसाब से है। हम हालातों पर नजर रखे हुए है। रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने कहा है कि जो कोई भी हमारे देश और हमारे लोगों के लिए खतरे पैदा करने की कोशिश करता है, उसे पता होना चाहिए कि रूस की प्रतिक्रिया तत्काल होगी और आपको ऐसे परिणामों की ओर ले जाएगी जैसा आपने अपने इतिहास में पहले कभी अनुभव नहीं किया है। रूसी राष्ट्रपति के ऐलान के बाद यूक्रेन के विदेश मंत्री की प्रतिक्रिया आई है। उन्होंने कहा यूक्रेन अपना बचाव करेगा और जीतेगा। पुतिन ने अभी अभी यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर आक्रमण शुरू किया है। यूक्रेन के शांतिपूर्ण शहरों पर हमले हो रहे

है, यह आक्रामकता का युद्ध है। दुनिया पुतिन को रोक सकती है और उसे भी करना चाहिए। अब कार्रवाई करने का समय है। रूस के साथ युद्ध की आशंका के बीच कीव में धमाके की आवाज सुनी गई है। समाचार एजेंसी के अनुसार, कीव में एक जोरदार धमाका हुआ है। राजधानी कीव के अलावा खार्किव, पूर्वी यूक्रेन के मारियुपोल में धमाकों की आवाज सुनी गई है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन अपने संबोधन में कहा यूक्रेन में (विशेष सैन्य अभियान की) हमारी योजनाओं में यूक्रेनी क्षेत्र पर कब्जा शामिल नहीं है। हमारा लक्ष्य यूक्रेन का गैरफौजीकरण हैं। रूस होगा हमले के लिए जिम्मेदार- जो बाइडेन रूसी राष्ट्रपति के ऐलान के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन की प्रतिक्रिया आई है। उन्होंने कहा इस हमले से होने वाली मौत और तबाही के लिए रूस अकेला जिम्मेदार होगा। अमेरिका और उसके सहयोगी एकजुट और निर्णायक तरीके से जवाब देंगे। पूरी दुनिया की प्रार्थनाएं आज रात यूक्रेन के लोगों के साथ हैं, क्योंकि वे रूसी सैन्य बलों द्वारा एक अनुचित हमले का शिकार हुए हैं। राष्ट्रपति पुतिन ने एक पूर्व नियोजित युद्ध चुना है जो जीवन और मानव जाति के लिए एक विनाशकारी नुकसान लाएगा।रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने लिया संकल्प समाचार एजेंसी एएफपी के मुताबिक, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन के रूसी आपरेशन में हस्तक्षेप करने वाले देश के खिलाफ भी जवाबी कार्रवाई का संकल्प लिया है।पुतिन ने यूक्रेन के खिलाफ सैन्य अभियान की घोषणा रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन के खिलाफ सैन्य अभियान' की घोषणा कर दी है राष्ट्रपति ने आदेश जारी करते हुए कहा कि अगर यूक्रेन पीछे नहीं हटता है तो जंग होकर रहेगी। पुतिन ने यूक्रेनी सेना को धमकी देते हुए कहा कि जल्द से जल्द हथियार डाल दें नहीं तो युद्ध को टाला नहीं जा सकता है में बोले टीएस तिरुमूर्ति संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत के स्थायी प्रतिनिधि टीएस तिरुमूर्ति ने कहा कि हम तत्काल डी एस्केलेशन का आह्वान करते हैं और आगे की किसी भी कार्रवाई से परहेज करते हैं जो स्थिति को बिगड़ने में योगदान दे सकता है।

## केंद्रीय शिक्षण संस्थानों की खाली रिजर्व सीट अब किसी और को नहीं

**नई दिल्ली।** आइआइटी सहित देश भर के केंद्रीय शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षित श्रेणी की खाली सीटें अब ओपन कैटेगरी में तब्दील नहीं होगी,बल्कि जिस वर्ग के लिए आरक्षित है उनसे ही भरी जाएंगी। शिक्षा मंत्रालय ने पीएमओ के दखल के बाद इसे लेकर सभी केंद्रीय शिक्षण संस्थानों को स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए

है। साथ ही कहा है कि आरक्षित श्रेणी की खाली सीटों को भरने के लिए जरूरत पड़ने पर कटआफ को भी नीचे रखने जैसे कदमों को उठाने पर विचार किया जाना चाहिए। शिक्षा मंत्रालय ने इसके साथ ही सभी केंद्रीय शिक्षण संस्थानों से ऐसे कदम तत्काल रोकने के भी निर्देश दिए है जहां आरक्षित श्रेणी की खाली सीटों को ओपन या अनरिजर्व कैटेगरी में तब्दील करके भरा जा रहा था। इसके साथ ही सभी संस्थानों से अमल की रिपोर्ट भी मांगी है। जानकारों की मानें तो ऐसे कदम उठाने वालों में गिने चुने ही केंद्रीय शैक्षणिक संस्थान शामिल थे। हालांकि इसके पीछे उनका तर्क था कि खाली सीटों के बेकार चले जाने से बेहतर है कि इन सीटों को ओपन कैटेगरी में डाल अन्य प्रतिभाशाली छात्रों को मौका दिया जाए। खास बात यह है कि सैद्धांतिक तौर पर तो यह पहल ठीक थी, लेकिन कानूनी रूप से गलत थी। और कहा कि इस पर तत्काल रोक लगाई जाए। साथ ही यह निर्देश भी दिया कि इन खाली आरक्षित सीटों को उसी श्रेणी से भरने की हरसंभव कोशिश की जाए खासकर ओबीसी (नान क्रीमीलेयर) और सामान्य ईडब्लूएस श्रेणी की ऐसी सीटों को भरने के दूसरे विकल्पों पर भी विचार किया जाए।

## कामन सिविल कोड पर देशव्यापी बहस चाहता है संघ, आरएसएस के नेता बोले- धीरे-धीरे इस दिशा में आगे बढ़ रही सरकार

**नई दिल्ली।** लंबे समय से देश में समान नागरिक संहिता (कामन सिविल कोड) की मांग करने वाला राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) अब इस मुद्दे पर देशव्यापी बहस चाहता है। आरएसएस के एक वरिष्ठ नेता ने कामन सिविल कोड के लिए कोई निश्चित समयसीमा तय किए जाने से इन्कार करते हुए कहा कि इसके तहत कई सिविल कानूनों में बदलाव की जरूरत है, जो एक साथ नहीं

हो सकता। सरकार धीरे-धीरे इस दिशा में आगे बढ़ रही है, लेकिन समानता की जरूरत वाले सिविल कानूनों की पहचान और उसके लाभ के बारे में आम जनता के बीच जागरूकता भी जरूरी है। आरएसएस के वरिष्ठ नेता के अनुसार, तत्काल तीन तलाक कानून और देश में लड़कियों की शादी की उम्र लड़कों के समान 21 साल करने का प्रस्तावित कानून कामन सिविल कोड की दिशा में अहम कदम है। इसी तरह से अनुच्छेद-370 निरस्त होने के बाद जम्मू-कश्मीर में लड़कियों के साथ हो रहे भेदभाव को दूर किया जाना भी इसी से जुड़ा है। इससे साफ है कि सरकार संविधान में दिए गए नीति निर्देश के तहत कामन सिविल कोड की दिशा में काम कर रही है। इससे जुड़े मुद्दों पर राष्ट्रीय बहस होने से जनता भी जागरूक होगी और सरकार पर इसके लिए दबाव भी बढ़ेगा। उधर, उत्तर प्रदेश चुनावों में भले ही काशी और मथुरा के मुद्दे को चुनावी रंग देने की कोशिश हुई हो, लेकिन आरएसएस फिलहाल इन दोनों मुद्दों से दूरी बनाए रखने के पक्ष में है।

## सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे ने चार पैरा बटालियन को 'प्रेसिडेंशियल कलर्स' से किया सम्मानित

**बेंगलुरु।** थल सेनाध्यक्ष जनरल एमएम नरवणे ने बुधवार को बेंगलुरु में पैराशूट रेजिमेंट ट्रेनिंग सेंटर में चार पैराशूट बटालियनों को प्रेसिडेंशियल कलर्स प्रदान किए। राष्ट्रपति के रंग या 'निशान' का पुरस्कार युद्ध और शांति दोनों के दौरान राष्ट्र के लिए अपनी असाधारण सेवा की मान्यता में एक सैन्य इकाई को दिए जाने

वाले सर्वोच्च सम्मानों में से एक है। इस सम्मान को हासिल करने वाली चार बटालियन 11 पैरा (विशेष बल), 21 पैरा (विशेष बल), 23 पैरा और 29 पैरा हैं। बता दें कि इस दौरान पैराशूट रेजीमेंट प्रशिक्षण केंद्र (पीआरटीसी) में 'कलर प्रेजेंटेशन परेड' भी आयोजित की गयी। इस मौके पर सेना के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे। परेड में आठ पैरा ट्रूपर्स ने 'कॉम्बैट फ्री फॉल' का प्रदर्शन भी किया गया। हालांकि, तेज हवाओं के कारण पैरामोटर उड़ान का प्रदर्शन बाद में रद कर दिया गया। अधिकारियों ने बताया कि प्रेसिडेंशियल कलर्स पुरस्कार युद्ध तथा शांति दोनों के दौरान राष्ट्र को दी गई असाधारण सेवा के लिए किसी सैन्य टुकड़ी को दिए जाने वाला सबसे बड़ा सम्मान है। यह निशान के नाम से भी प्रसिद्ध है। बता दें कि थलसेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे ने इस दौरान यह संदेश दिया कि भारतीय सेना देश की सीमाओं पर शांति और स्थायित्व बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है और किसी भी संभावित खतरे के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि सेना ने नए हथियारों और आधुनिक उपकरणों में अपनी दक्षता बढ़ाई है। नरवणे ने कहा कि युद्ध क्षेत्र में बदलाव के साथ ही हथियारों के इस्तेमाल, सेनाओं को संगठित करने और युद्ध लड़ने के तरीकों में काफी बदलाव आए हैं। सेना ने नए हथियारों और आधुनिक उपकरणों में अपनी दक्षता बढ़ाई है, लेकिन फिर भी बदलाव की यह प्रक्रिया आगे भी जारी रहेगी।

## रूसी हमले के बाद यूक्रेन का हवाई क्षेत्र बंद, एयर इंडिया के विमान को बीच से ही दिल्ली लौटना पड़ा वापस

**नई दिल्ली।** रूस के हमले का सामना कर रहे पूर्वी यूरोपीय देश यूक्रेन ने अपने हवाई क्षेत्र को बंद करने का ऐलान कर दिया है। इस बीच भारतीयों को वापस लाने के लिए कीव गया एयर इंडिया के

एक विमान को बीच से ही वापस लौटना पड़ा। अधिकारियों के अनुसार जैसे ही यूक्रेनी अधिकारियों ने नागरिक विमान संचालन के लिए देश के हवाई क्षेत्र को बंद कर दिया था एयर इंडिया और केंद्र सरकार ने इसपर विचार करना शुरू कर दिया था, जिसके बाद यह फैसला हुआ। इस बीच कीव से यूक्रेन इंटरनेशनल एयरलाइंस का एक विमान गुरुवार सुबह करीब 7.45 बजे दिल्ली हवाईअड्डे पर उतरा। समूह की निदेशक अंजू वरिया ने बताया कि उड़ान में 182 भारतीय नागरिक थे और उनमें से अधिकांश छात्र थे। बता दें कि यह समूह भारत में यूक्रेन इंटरनेशनल एयरलाइंस के लिए सामान्य बिक्री एजेंट (जीएसए) है। गौरतलब है कि हफ्तों तक चले तनाव के बाद रूस ने गुरुवार को यूक्रेन के खिलाफ सैन्य अभियान की घोषणा की। जिसके बाद यूक्रेनी अधिकारियों ने ठएयरमैन को नोटिसठ जारी किया, जिसमें कहा गया था कि यूक्रेन के भीतर नागरिक विमानों की उड़ानें नागरिक उड्डयन के लिए संभावित खतरे के कारण प्रतिबंधित की गई हैं। कीव से लौटे एक एमबीबीएस छात्रा ने कहा, 'मैं जहां रह रही थी वहां की स्थिति ठीक है क्योंकि वह जगह सीमा से दूर है। लेकिन हमारे दूतावास ने हमें जाने के लिए कहा ओर हम एडवाइजरी जारी होने के बाद वापस आए हैं। एक अन्य छात्र ने कहा कि ठकल रात हमें यूक्रेन में 30 दिनों के लिए आपातकालीन स्थिति के बारे में एक संदेश मिला, इसलिए हम घर वापस आ गए।

## बजरंग दल कार्यकर्ता की हत्या में दो और गिरफ्तार, शिमोगा में 25 तक कर्फ्यू

**शिमोगा।** कर्नाटक में बजरंग दल कार्यकर्ता हर्ष की हत्या के मामले में दो और आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। इस मामले में अब तक आठ आरोपितों को गिरफ्तार किया जा चुका है। तनावपूर्ण स्थिति को देखते हुए शिमोगा में कर्फ्यू को 25 फरवरी तक बढ़ा दिया गया है। राज्य के गृह मंत्री अरागा ज्ञानेंद्र ने बुधवार को कहा कि शिमोगा शहर के कोट और डोडापेट पुलिस स्टेशन में पिछले पांच साल के दौरान तैनात पुलिसकर्मियों की भूमिका की जांच करने का आदेश दे दिया गया है। उन्होंने कहा कि हर्ष की हत्या में गिरफ्तार आठों आरोपितों का आपराधिक इतिहास रहा है और ये सभी शिमोगा के ही रहने वाले हैं ऐसे में यह देखा जाएगा कि इन दोनों थानों में तैनात पुलिसकर्मियों ने इन आरोपितों के खिलाफ क्या कार्रवाई की। उन्होंने कहा कि गैरजिम्मेदार पुलिसकर्मियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

शिमोगा के ज्ञानेंद्र ने कहा कि इस मामले में कुछ लोगों से पूछताछ भी चल रही है। उन्होंने डीजीपी को पत्र लिखकर शिमोगा में असामाजिक तत्वों के बढ़ने के कारणों की जांच करने और उसके लिए जिम्मेदार पुलिसकर्मियों के खिलाफ कार्रवाई करने को कहा है। इस सवाल पर कि क्या हिंदुत्ववादी विचारधारा पर चलने की वजह से हर्ष की हत्या हुई, ज्ञानेंद्र ने कहा कि सभी पहलू से मामले की जांच की जा रही है। इस मामले को सामान्य हत्या के तौर पर नहीं लिया गया है। पापुलर फ्रंट आफ इंडिया, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी आफ इंडिया और कैंपस फ्रंट आफ इंडिया पर पाबंदी संबंधी सवाल पर उन्होंने कहा कि इस मामले में इन संगठनों की भूमिका की भी जांच की जा रही है। जांच के बाद ही कोई फैसला लिया जाएगा।

## तीन साल से विधायक दल की बैठक में नहीं बुलाया : अनिल

**शिमला।** पूर्व मंत्री एवं भाजपा विधायक नेता अनिल शर्मा ने कहा कि उन्हें भाजपा विधायक दल की बैठक में पिछले तीन साल से नहीं बुलाया जा रहा। उन्होंने मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर पर राजनीतिक तौर पर उपेक्षा करने का भी आरोप लगाया। शिमला में बुधवार को पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि उन्हें मंडी विधानसभा क्षेत्र की जनता ने चुनकर भेजा है। मुख्यमंत्री विकास के मामले में मंडी सदर की उपेक्षा कर रहे हैं। एक निर्वाचित विधायक द्वारा उठाए मुद्दों को नजरअंदाज करना उचित नहीं है। उन्हें विधानसभा में रहने के लिए अपेक्षित आवास तक नहीं दिया है। उन्होंने कहा कि शिमला में रहने के लिए उनके पास कोई सुविधा नहीं है। बजट सत्र में शामिल होने के लिए उन्हें ठहरने की व्यवस्था करने के लिए मुख्य सचिव सहित सरकार के कई अन्य आला अधिकारियों से संपर्क करने के बाद सर्किट हाउस में कमरा मिला। सर्किट हाउस में भी कमरा सबसे नीचे धरातल मंजिल में दिया गया। जहां मोबाइल फोन तक का सिगन्ल नहीं होता। इस तरह के क्रियाकलाप एक विधायक से घटित होना साबित करता है कि जानबूझकर राजनीतिक तौर पर नजरअंदाज किया जा रहा है। मेरे बेटे ने कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा, जिसका बदला लिया जा रहा है। मैं मंडी सदर की जनता के बीच में जाउंगा और इस अन्याय से अवगत करवाउंगा।

# वायुसेना की वर्दी पहन कर ठगी करने वाला अभियुक्त गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

**प्रयागराज।** साइबर सेल टीम ने बुधवार को वायुसेना की वर्दी पहन कर साइबर ठगी करने वाले एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार आगरा निवासी आरोपी पारस शर्मा के खिलाफ़ काफ़ी दिनो से शिकायत मिल रही थी। आरोपी किसी भी बिल के ऑनलाइन पेमेंट की फर्जी रसीद बनाता था। वह मॉल और शोरूम से ख़रीदारी करने के बाद इसी बिल की मोबाइल में स्क्रीन शॉट दिखाता था। दुकानदारों के अविश्वास प्रकट करने पर वह टेकिन्कल समस्या का बहाना बना अपनी वायु सेना की फ़ोटो दिखा कहता था की वह यही बमरौली एयरपोर्ट में पोस्टेड है। वह अपना मोबाइल नम्बर दे लोगों पर दवाब बनाता था।

# ग्राम प्रधान सोरांव ने ग्राम वासियों के साथ निकाली भाजपा की मोटरसाइकिल जुलूस

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिलीप जयसवाल

**मेजा प्रयागराज।** मेजा क्षेत्र के उरुवा ब्लाक के प्रधान राजेश द्विवेदी के नेतृत्व में ग्राम सभा के ग्राम वासियों के साथ मेजा चौराहे पर और लोगों से जनसंपर्क कर मेजा विधानसभा 259 की प्रत्याशी नीलम उदय भान करवरिया को जिताने और एक बार पुनः विधायक बनाने का अनुरोध किया। जहां तमाम भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं

विशाल समूह के साथ मोटरसाइकिल पर सवार होकर हाथ में भाजपा का झंडा लेकर भारतीय जनता पार्टी जिन्दाबाद और विधायक नीलम करवरिया जिन्दाबाद के नारे लगाते हुए। चौराहे पर भ्रमण सील बने रहे । ने मोटरसाइकिल जुलूस में शामिल रहे। प्रधान संघ अध्यक्ष ऊरूआ राजेश द्विवेदी, रिंकू ओझा, श्यामू शुक्ला , दीपक द्विदी , आशीष दुबे , राहुल दुबे , पंकज द्विदी , आनन्द दुबे , संदीप पाण्डेय आदि भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

# महाराष्ट्र की शिक्षा मंत्री ने कोरांव से कांग्रेस उम्मीदवार के समर्थन में किया प्रचार

## कोरांव बाजार में रोड शो निकालकर व्यापारियों एवं मतदाताओं से मांगा समर्थन

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिलीप जयसवाल

**कोरांव (प्रयागराज)।** कोरांव (265) सुरक्षित विधानसभा सीट से कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार रामकृपाल कोल के समर्थन में महाराष्ट्र सरकार में शिक्षा मंत्री वर्षा गायकवाड़ ने कोरांव विधानसभा पहुंचकर प्रत्याशी के समर्थन में जहां प्रचार किया, वहीं कोरांव बाजार में रोड शो निकालकर व्यापारियों एवं मतदाताओं से समर्थन मांगा। कोरांव बाजार में पदयात्रा को संबोधित करने के दौरान महाराष्ट्र सरकार की शिक्षा मंत्री वर्षा गायकवाड़ ने कहा कि किसानों गरीबों मजदूरों की तरक्की कांग्रेश सरकार में ही हुई है। उत्तर प्रदेश में अगर सरकार बनी तो किसानों का गेहूं और धान 2500 रुपए कुंतल खरीदा जाएगा। मंत्री वर्षा गायकवाड़ ने कहा कि किसानों गरीबों मजदूरों के लिए कांग्रेस सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं पर भाजपा की नरेंद्र मोदी सरकार ने पानी फेर दिया है। जिससे आज गरीब किसान दर-दर की ठोकरे खा रहा है। उन्होंने कांग्रेस पार्टी द्वारा विधानसभा चुनाव के लिए घोषित किए गए संकल्प पत्र का जिक्र करते हुए कहा कि सरकार बनने पर संकल्प पत्र में उल्लिखित सभी बिंदुओं पर कार्य किया जाएगा। उन्होंने किसानों के कर्ज माफी का

जिक्र करते हुए कहा कि पूर्व में भी कांग्रेस द्वारा था। सरकार बनने पर पुनः किसानों का कर्जा माफ होगा। पदयात्रा में शामिल रहे छत्तीसगढ़ के चित्रकोट से विधायक केंद्रीय पर्यवेक्षक रामजन बेंजाम ने कहा कि उत्तर प्रदेश को भ्रष्टाचार मुक्त एवं माफियाओं से छुटकारा के लिए कांग्रेस सरकार जरूरी है। उन्होंने कहा कि पिछले कई दिनों से कोरांव क्षेत्र में कांग्रेस उम्मीदवार रामकृपाल कोल का प्रचार कर रहा हूं। जहां लोगों का भारी समर्थन मिल रहा है। निश्चित तौर पर कोरांव में कांग्रेस उम्मीदवार रामकृपाल को विजई होंगे। उन्होंने कोरांव की समस्याओं पर बोलते हुए कहा कि यहां सड़क स्वास्थ्य पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं से लोग वंचित हैं। कांग्रेश की सरकार बनने पर कोरांव के पिछड़े क्षेत्र का समुचित विकास होगा। इसी प्रकार कांग्रेस प्रत्याशी रामकृपाल कोल ने पदयात्रा में शामिल भारी संख्या में लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि अगर विधायक बना तो गरीबों मजलूमों पर ढाए जा रहे जुल्म के विरुद्ध सदैव खड़ा मिलूंगा। उनके हक अधिकार की लड़ाई लड़ने का काम करूंगा। पदयात्रा यात्रा में प्रमुख रूप से कांग्रेश के जिला उपाध्यक्ष आनंद प्रकाश शुक्ल उर्फ बबलू शुक्ल, उमाशंकर सिंह, पूर्व ब्लाक प्रमुख रामअवध कुशवाहा, ब्लाक अध्यक्ष आसाराम मिश्र, शिवबालक कोल, गुनई आदिवासी, राम नारायण मौर्या, शंकर लाल कोल, विक्रम कोल समेत भारी संख्या में कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता पदाधिकारी व क्षेत्रीय मतदाता शामिल रहे।

# नारी अपमान का बदला लेगी शिवसेना प्रेस वार्ता में बोले मंत्री शिंदे

## कोरांव में उम्मीदवार आरती कोल के लिए शिवसेना ने झोंकी ताकत कोरांव खीरी लेडियारी बाजार में रोड शो के जरिए शिवसेना ने मांगा समर्थन

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिलीप जयसवाल

**कोरांव (प्रयागराज)।** कोरांव प्रयागराज कोरांव (265) सुरक्षित विधान सभा में शिवसेना प्रत्यासी श्रीमती आरती कोल के समर्थन में महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री एक नाथ

शिन्दे ने कहा कि कोरांव की जनता को नारी के अपमान का बदला लेना होगा।उक्त बातें प्रेस वार्ता में तथा नुक्कड़ सभाओं में मंत्री शिंदे ने कही। उन्होंने कहा कि भाजपा ने आरती कोल का टिकट काट कर उसकी रुसवाई कर जो अपमान,जो नारी का सम्मान खोया है, उसका बदला शिवसेना कोरांव का चुनाव जीत कर खुद लेंगी। उन्होंने कहा कि मेरी पार्टी और संगठन यहां की सरकार से वार्ता कर घृणित कार्य करने वाले लोगों की जांच कराकर विधिक कार्यवाही कराएगी। श्री शिंदे ने कहा कि नारी शसक्तीकरण व महिला सम्मान का झूंठा ढिढोरा पीटने वाली सरकार के विरुद्ध उत्तर प्रदेश के कोरांव से जंग शुरू की है, जिसे भाजपा के झूठे वायदों कारनामों का पर्दाफाश कर भविष्य में यूपी की सत्ता से बाहर कर भाजपा का नामों निशान मिटाने का कार्य करेगी। मंत्री ने कहा कि यूपी की जनता महाराष्ट्र में आकर व्यवसाय करती है,उनका सम्मान,और उनके उपचार रोजगार का ध्यान देती है। कोरोना काल में भी यहां की जनता का विशेष ध्यान दिया गया। उन्होंने जनता से धनुष बाण के सामने वाली बटन दबा कर भारी मतों से जिता कर आरती कोल को विधान सभा में पहुंचाने की अपील कोरांव के मतदाताओं से किया। शिव सेना की उम्मीदवार आरती कोल ने भावुक शब्दों में कहा कि मेरे साथ जो भाजपा ने अन्याय किया है, वह मैं कभी नहीं भूल सकती, उन्होंने कहा कि मेरे साथ जितना अन्याय किया गया मैं बयां नहीं कर सकती। किंतु मुझे आप लोग जीवन दान देने का काम करें।प्रेस वार्ता एवम जन सभा में राजन विचारे सासंद, गुलाब दुबे राष्ट्रीय संगठक शिवसेना, विक्रम प्रताप सिंह नगर सेवक, राजेश सिंह सोमवंशी, अनिल सिंह प्रमुख शिवसेना यूपी, कंचन सिंह, चंदा पटेल, धर्म मिश्रा एडवोकेट महाराष्ट्र आदि लोग उपस्थित रहे। शिवसेना उत्तर प्रदेश के आम चुनाव में दखल देते हुए कोराव से अपना उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतारा है। शिवसेना के प्रवक्ता व जानकारों की माने तो यह लड़ाई नारी के सम्मान व सुरक्षा के दृष्टिगत लड़ी जा रही है। कोरांव विधानसभा सीट पर शिवसेना के मैदान में आ जाने से सपा भाजपा बसपा कांग्रेस समेत कई दलों के चुनावी समीकरण भी बिगाड़ रहे हैं।

# बेरोजगारी से तंग आकर युवक ने दे दी जान

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

**प्रयागराज।** बेरोजगारी और आर्थिक तंगी से परेशान होकर एक व्यक्ति ने बुधवार रात फांसी लगाकर जान दे दी। सुसाइड नोट में उसने अपनी आपबीती लिखी है और परिवार को किसी सदस्य को गलत न फंसाने के लिए पुलिस प्रशासन से अपील की है।वहीं इस घटना से उसके परिवार में कोहराम मचा रहा। सूचना मिलने पर पहुंची धूमनगंज पुलिस ने छानबीन के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। धूमनगंज पुलिस ने बताया कि 45 साल का अशोक कुमार पाल उर्फ गोरे पाल कुछ समय से बेरोजगारी और आर्थिक तंगी से परेशान था। कुछ दिनों पहले उसका

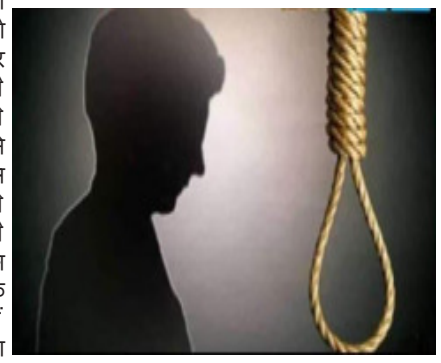

पत्नी से भी विवाद हुआ था। उसकी पत्नी मायके चली गई थी।

# बिना प्रधान के हो रही है प्रधानी, ग्रामीणों ने लगाया अनियमितता का आरोप

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

**प्रतापगढ़।** विकास खण्ड लक्ष्मणपुर के ग्राम पंचायत घरौरा ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि उनके गाँव में प्रधान ही नहीं हैं। बिना प्रधान के इस गाँव के लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। विकास कार्य ठप है।जो विकास कार्य हो भी रहे हैं।उसमें भारी अनियमितता प्रधान के द्वारा की जा रही है।ग्रामीणों का आरोप है कि ग्राम प्रधान मोहम्मद रईस छत्तीसगढ़ में रहकर अपना काम धंधा करते हैं।उनके न रहने पर न तो जरूरी कागजात पर ग्रामीण हस्ताक्षर करवा पाते हैं न ही किसी अन्य विकास कार्य पर उनका हस्ताक्षर होता है।कुछ ग्रामीणों ने बताया कि उनके पुत्र एक ऐसे खड़न्जे का पैसा खारिज करवाना चाह रहे हैं या फिर खारिज हो चुका होगा।इस पर पहले से ही ईंटे बिछी हुई हैं और वह अच्छी हालत में है। यहाँ राशन के वितरण में भी ग्रामवासियों को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। कुछ दिनों पहले कोटेदार को निलंबित कर दिया गया था तो जिस कोटेदार के यहाँ कोटे को संबद्ध किया गया उसके यहाँ वितरण न होकर ग्राम प्रधान मोहम्मद रईस के दरवाजे पर उनके बेटे द्वारा राशन का वितरण करवाया जाता था जिसमें सभी को राशन प्राप्त नहीं हो पाता था। राशन वितरण में भी अच्छी खासी धाँधली करके प्रधान महोदय अपनी जेब भरने में लगे थे। इसी तरह से ग्राम पंचायत के अन्य कार्यों पर प्रधान का हस्ताक्षर नहीं होता है।यहाँ किसके हस्ताक्षर से काम हो रहा है और कैसे इस ग्राम पंचायत की विकास की योजनाएं जो शासन के द्वारा निर्धारित की गई है पूरी हो रही हैं इसे बताने वाला कोई नहीं है।ग्रामीणों का कहना है कि उन लोगों ने कई बार इसकी शिकायत सहायक खंड विकास अधिकारी पंचायत से भी की लेकिन कोई भी कार्यवाही नहीं हो सकी। शासन की योजनाओं को धूल चटाने वाला यह प्रधान जनता के विश्वास को जीतकर ग्राम का प्रथम नागरिक तो बन बैठा लेकिन अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ कर छत्तीसगढ़ में जा बैठा है।जनता भी आज अपने आप को कोस रही है कि उसने गलत व्यक्ति को प्रधान बनाया जिस पर विश्वास करके कि वह ग्राम का विकास करेगा और शासन की नीतियों को जन-जन तक पहुँचाएगा वह यहाँ से नदारद होकर अपने बेटे के लिए ग्राम पंचायत के धन को लूटने का अवसर दे गया है ग्रामीणों ने मुख्य विकास अधिकारी से माँग की है कि ऐसे ग्राम प्रधान के खिलाफ कार्यवाही करते हुए इस गाँव को प्रधान शून्य गाँव घोषित करके फिर से चुनाव करवाने की प्रक्रिया संपन्न की जाए।

# ग्रामीणों का आरोप,भ्रष्ट है ग्राम पंचायत अधिकारी एवं प्रधान

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

**प्रतापगढ़।** विकास खण्ड लक्ष्मणपुर में तैनात ग्राम पंचायत अधिकारी सुधाकर मौर्य के बारे में ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि वह एक भ्रष्ट ग्राम पंचायत अधिकारी है।वह चमरूपुर शुक्लान ग्राम पंचायत का ग्राम पंचायत अधिकारी है लेकिन वह कभी भी इस ग्राम पंचायत में अपना चेहरा नहीं दिखाता है। कहने को यहाँ ग्राम पंचायत भवन बना है लेकिन वह कभी भी ग्राम पंचायत भवन में न तो बैठता है न ही लोगों की समस्याओं के निदान का कार्य करता है।लोग पेंशन, जन्म प्रमाण पत्र,मृत्यु प्रमाण पत्र आदि के लिए उसे ढूँढते रहते हैं लेकिन वह कभी भी इस ग्राम पंचायत में आना मुनासिब नहीं समझता है। लोगों का कहना है कि ऐसे ग्राम पंचायत अधिकारी को न तो लोग पहचानते हैं और न ही दो चार लोगों के सिवा कोई उसका नाम जानता है।वह वास्तविक ग्राम प्रधान के बजाय अपनी जाति के एक व्यक्ति को ग्राम प्रधान मान बैठा है और वह राजा मौर्य नाम के व्यक्ति को ही ग्राम प्रधान समझता है और सबसे उसे ही ग्राम प्रधान बताता है। राजा प्रधान के पास जेसीबी है।उसी से वह जिन ग्रामों में तैनात है ग्राम पंचायत के कार्यों को करवाना उचित समझता है। मनरेगा मजदूरों की भी वह उपेक्षा करता है।जहाँ मेड़बंदी करवाता है,वहाँ खेत का समतलीकरण दिखाकर ग्राम प्रधान निर्मला देवी, राजा मौर्य और स्वयं खुद मिलकर शासन के धन का बंदरबाँट कर लेता है।अभी कुछ महीनों पहले ही उस पर दंडात्मक कार्यवाही करते हुए इस ब्लॉक से हटाया गया था लेकिन राजनीतिक पकड़ के नाते वह फिरसे से ब्लॉक में आ गया है और शासन और प्रशासन की आँखों में धूल झोंक कर अपना महल ऊँचा कर रहा है।ऐसे ग्राम पंचायत अधिकारी सुधाकर मौर्य के कारनामों से इस ग्राम पंचायत के लोग परेशान हैं।वे आक्रोशित भी है।भविष्य में इस ग्राम के लोग उसकी कलयुगी आरती उतारने लगे इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

# ट्रेन से कटी युवती की हुई शिनाख्त

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

**फूलपुर।** बुधवार दोपहर को फूलपुर प्रयागराज रेलवे ट्रैक पर मिली अज्ञात 20 वर्षीय युवती की शिनाख्त हो गई। चंद्रशेखर आजाद इंटर कॉलेज ढोकरी में बीए प्रथम वर्ष की छात्रा कविता विश्वकर्मा पुत्री इंद्र बहादुर विश्वकर्मा जो बहरिया थाने के राजेपुर गांव की निवासिनी थी। किन्हीं अज्ञात कारणों से यह घातक कदम उठा बैठी। थाने पर पहुंचे परिजनों ने बताया। कि कालेज आई थी। परीक्षा भी दिया और 1:30 बजे दिन यह घटना घटी। घरवाले हृदयविदारक घटना का कारण नहीं बता सके।

# शिक्षण संस्थान 28 फरवरी तक जमा करें छात्रवृत्ति आवेदन

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

**प्रतापगढ़।** जिला समाज कल्याण अधिकारी राजीव कुमार ने बताया कि अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति के आवेदन 28 फरवरी तक अवश्य जमा कर दें।इस योजनान्तर्गत दिनांकः11फरवरी से 21फरवरी तक स्कूटनी के उपरान्त छात्रों हेतु संदेहास्पद डाटा सही करने हेतु खुला हुआ था। रिजल्ट नाट यट डिक्लेयर्ड का डाटा छात्रों द्वारा रिजल्ट आने की स्थिति में अंकित करते हुये आवेदन को आनलाइन सही करते हुये सबमिट करना है तथा शिक्षण संस्थान में समस्त अभिलेखों सहित जमा करना है जिससे कि 28 फरवरी तक शिक्षण संस्थान द्वारा पुनः सही किया गया डाटा अग्रसारित किया जा सके। संस्था से अग्रसारण न होने अथवा रिजल्ट न निकलने पर समय-सारिणी के बिन्दु संख्या-3 के अनुसार छात्रों का डाटा रिजेक्ट माना जायेगा जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वयं छात्र एवं सम्बन्धित शिक्षण संस्थान की होगी।


# नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित
ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

| क0सं0 | ट्रेड का नाम | ट्रेड की अवधि | योग्यता |
|---|---|---|---|
| 1. | कोपा | 1 वर्ष | 12वीं पास |
| 2. | फिटर | 2 वर्ष | 10वीं पास |
| 3. | बेसिक कम्प्युटिंग | 6 माह | साक्षर |
| 4. | डाटा इंट्री ऑपरेटर | 6 माह | 10वीं पास |
| 5. | फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी | 6 माह | 8वीं पास |
| 6. | सेक्योरिटी सर्विस | 6 माह | 8वीं पास |
| 7. | कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली | 1 वर्ष | 10वीं पास |
| 8. | सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन | 1 वर्ष | 10वीं पास |
| 9. | इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स | 1 वर्ष | 8वीं पास |
| 10. | रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग | 1 वर्ष | 8वीं पास |
| 11. | योगा असिस्टेन्ट | 1 वर्ष | 10वीं पास |
| 12. | वेल्डिंग टेक्नोलॉजी | 1 वर्ष | 8वीं पास |
| 13. | कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स | 1 वर्ष | 10वीं पास |

**1.प्रमाण पत्रः-** सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते हैं तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 28 फरवरी 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710,
9807278552, 9415608790

# पेड न्यूज़ पर रखी जा रही है नजर, होगी कड़ी कार्यवाही: बी0आर0 बालाकृष्णन

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**डॉ0रणजीत सिंह**

**प्रतापगढ़।** विधानसभा चुनाव को दृष्टि में रखकर विशेष व्यय प्रेक्षक द्वारा की गई समीक्षा बैठक में चुनाव को निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण तरीके से करवाने की रणनीति तैयार की गई।साथ ही विशेष व्यय प्रेक्षक बी0आर0 बालाकृष्णन ने कहा कि पेड न्यूज़ पर नजर रखी जा रही है। उन्होंने कहा कि ऐसी खबरों पर कार्यवाही की जाएगी।नकद धनराशि के वितरण पर सघन पेट्रोलिंग करक जाँच की जाय।स्टार कैम्पेनर की जन सभाओं की वीडियो रिकार्डिंग करायी जाय तथा अवैध शस्त्रों व शराब के परिवहन पर नजर रखी जाय।विशेष व्यय प्रेक्षक बी0 आर0 बालाकृष्णन ने विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल, निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण, निर्विघन एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने का संकल्प दोहराया।अफीम कोठी स्थित मीटिंग हाल में अधिकारियों के साथ बैठक में जिलाधिकारा जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि जनपद की सातों विधानसभाओं में निर्वाचन को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु 63 फ्लाइंग स्कवायड टीमें 24 घंटे परिभ्रमण कर आदर्श आचार संहिता के शत् प्रतिशत अनुपालन एवं नकद धनराशि के परिवहन, अवैध मदिरा व अवैध सामग्री के परिवहन पर लगातार निगरानी रखी जा रही है, इस टीम में 01 मजिस्ट्रेट, 01 पुलिस अधिकारी तथा 02 कान्सटेबल लगाये गये है। इसी तरह 63 स्टैटिक टीमें निर्धारित स्थानों पर तैनात की गयी है।उन्होंने बताया कि 07 वीडियो निगरानी टीमों के माध्यम से प्रत्याशियों एवं स्टार कन्टेनर की जनसभाओं की वीडियो रिकार्डिंग करायी जा रही है।इसके अलावा मीडिया प्रमाणन एवं अनुवीक्षण समिति द्वारा प्रत्याशियों के प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया में

जारी किये गये विज्ञापन के कन्टेन्ट को अनुवीक्षण एवं सत्यापन के उपरान्त प्रमाणित किया जा रहा है तथा सोशल मीडिया टीम द्वारा प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रानिक व सोशल मीडिया के प्लेटफार्म फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, इन्सटाग्राम, यूट्यूब आदि पर पेड न्यूज से सम्बन्धित खबरों पर 24 घंटे नजर रखी जा रही है। जिलाधिकारी द्वारा बताया गया कि अब तक 06 कैश ट्रान्जेक्शन चिह्नित किये गये है जिन्हें इनकम टैक्स विभाग को आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित किया गया है।जिले में कमर्शियल बैंक की 237 बैंक की शखायें, सहकारी बैंक की 25 एवं एलडीबी की 05 शखायें है। इन बैंकों में बड़े ट्रान्जेक्शन पर एल0डी0एम0 के माध्यम से नजर रखी जा रही है। अब तक 1786173 रूपये एफएसटी एसएसटी टीम द्वारा जब्त किये गये है। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल द्वारा बताया गया कि जनपद में 41 पुलिस चेकपोस्ट स्थापित है जिसके माध्यम से पड़ोसी जनपद से आने वाले वाहनों की जांच की जा रही है। इसी तरह 21 नाकों पर स्टैटिक मजिस्ट्रेट की टीम लगायी गयी है।अभी तक आबकारी विभाग द्वारा 12975 लीटर तथा पुलिस विभाग द्वारा 5878.5 लीटर अवैध शराब सीज की गयी है। बैठक में विशेष व्यय प्रेक्षक ने कहा कि नकद धनराशि के वितरण पर सघन पेट्रोलिंग की जाये और आयकर अधिकारी ऐसे खातों पर भी नजर रखें जिनमें 1 लाख से ऊपर ट्रान्जेक्शन किये जा रहे है। स्टार कैम्पेनर की जनसभाओं की वीडियो रिकार्डिंग करायी जाये तथा अवैध शस्त्रों व शराब के परिवहन पर भी नजर रखी जाये। उन्होने एलडीएम को निर्देशित किया कि बैंकों के कैश वैन पर भी कड़ी निगरानी की जाये तथा टोल प्लाजा एवं बैंकों के करेन्सी चेस्ट तथा शराब की दुकानों पर भी कड़ी नजर रखी जाये। नगरीय क्षेत्रों में बड़े मॉल तथा दुकानों जहाँ से बल्क परचेजिंग की जा रही है उन पर भी नजर रखी जाये। इसके अतिरिक्त रेलवे स्टेशन की भी जीआरपी के माध्यम से कड़ी निगरानी की जाये। उन्होंने उपायुक्त जीएसटी को निर्देश दिया कि इस दौरान वाणिज्यकर की सर्विलान्स टीमों के माध्यम से कड़ी निगरानी रखी जाय। अन्त में जिलाधिकारी ने विशेष व्यय प्रेक्षक को आश्वस्त किया कि जनपद में विधानसभा सामान्य निर्वाचन को शान्तिपूर्ण, निष्पक्ष एवं सकुशल सम्पन्न कराने हेतु सभी आवश्यक तैयारियॉ कर ली गयी है। निर्वाचन के पूर्व एफ एस टी एवं एसएसटी टीमों के माध्यम से तथा बैंक एवं आयकर विभाग व वाणिज्य विभाग के अधिकारी पूरी मुस्तैदी से निर्वाचन के दौरान अवैध नकद धनराशि के वितरण एवं शराब तथा अन्य सामग्री के वितरण हेतु सर्विलान्स टीमें लगा दी गयी है। आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायतों के निस्तारण हेतु डिस्ट्रिक्ट कान्टैक्ट सेन्टर में 1950 नम्बर तथा सी-विजिल के माध्यम से 24 घंटे मानीटरिंग की जा रही है।बैठक में व्यय प्रेक्षक स्मिता वी नायर, व्यय प्रेक्षक एस0एम0 सुरेन्द्रनाथ, जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ0नितिन बंसल, वरिष्ठ कोषाधिकारी दीपक बाबू, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, एलडीएम अमित वाजपेयी, उपायुक्त जीएसटी राम भुवन, जिला आबकारी अधिकारी राजेश कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

# पीएम स्वनिधि योजना से रेहड़ी दुकानदारों को मिली जीने का राह

**बिल्थराराोड (बलिया) ।** प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना रेहड़ी व फुटकर दुकानदारों के लिए कोरोनाकाल में डूबते को तिनके का सहारा बनी है। नगरपंचायत के वार्ड संख्या सात की निवासी गायत्री देवी को इस योजना ने स्वावलंबी बनाया है। उन्होंने बताया कि लाकडाउन में गैर प्रांत सूरत में काम कर रहे पति संजय मौर्य घर लौट आए। उनका तबियत खराब हो गई। स्वयं गायत्री भी बीमार थीं। घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ती गई। चार बेटियों के साथ घर का खर्च चलाना मुश्किल हो गया। इस बीच नगरपंचायत कार्यालय से पीएम स्वनिधि योजना के तहत सहायता मिलने की सूचना मिली। कागजी खानापूर्ति के बाद पैसा मिला तो उन्होंने घर में ही जनरल स्टोर की दुकान खोल दी। आमदनी बढ़ी तो पति और खुद का इलाज करवाया। दुकान से ही घर का खर्च चलाया। अब उनका सुखमय जीवन है। डीहबाबा वाली गली मोड़ पर सड़क की पटरी पर सब्जी की रेहड़ी लगाने वाले वार्ड सं. सात निवासी रामजन्म मौर्य ने बताया कि स्वनिधि योजना के तहत बैंक से मिले दस हजार रुपये से उन्हें सब्जी की दुकान चलाने में काफी सहयोग मिला। वह आज भी अपनी दुकान अच्छे से चला रहीं हैं। बाटा वाली गली मोड़ पर ठेले पर सब्जी की दुकान लगाने वाले दिनेश जायसवाल ने कहा कि कोरोनाकाल में उनका व्यवसाय चैपट हो गया था। अधिकांश फल खराब हो गए। वह कर्ज में डूब गए। इसी बीच उन्हें स्वनिधि योजना के तहत बैंक से लोन के रूप में दस हजार मिले और वे फिर से अपनी दुकान लगाने लगे। अब वे अपना कर्ज भी दे चुके हैं। यूनाइटेड क्लब में ठेले पर आचार मोरब्बा की दुकान से परिवार चलाने वाले कृष्णा कुमार जायसवाल ने बताया कि स्वनिधि योजना के तहत मिले रुपये से उसकी दुकान फिर से खड़ा हो सका। आज वे बैंक का कर्ज भी दे चुके है और दुकान में सामान भी दोगुना हो गया है। जिससे उनकी दुकानदारी पहले से अच्छी चल रही है।

# चुनाव 331 कर्मचारी प्रदेश के बाहर से करेंगे मतदान

**सिकंदरपुर (बलिया)।** विधानसभा क्षेत्र में निवास करने वाले 331 कर्मचारियों ने फार्म भरकर पोस्टल बैलेट के जरिए वोट देने की अनुमति मांगी थी। जिस पर त्वरित रुप से कार्रवाई करते हुए रिटर्निंग अफसर सिकंदरपुर प्रशांत कुमार नायक ने 331 मतदाताओं में से 243 मतदाताओं को बैलट पेपर रजिस्टर्ड डाक के तहसीलदार सुनील कुमार ने बताया कि निर्वाचन आयोग के निर्देश पर फार्म 12 भरने वाले गैर जनपद या गैर प्रांत में रहने वाले कर्मचारियों को मताधिकार का प्रयोग करने हेतु बैलेट पेपर भेजा जा रहा है।

# छितौनी गांव की बजबजाती बस्ती, सिसक रही जिदगी

**रसड़ा (बलिया)।** जर्जर सड़क, संकरी गली, कूड़े का अंबार व सड़कों पर गंदगी की मार बजबजाती बस्तियों में सिसक रही जिदगी। यह दशा है रसड़ा ब्लाक से सटे छितौनी गांव की। जहां सड़कों पर गंदे पानी के जमाव से ग्रामीणों की जिदगी नारकीय बन गई है। जबकि

ग्राम प्रधान द्वारा न तो इसकी साफ सफाई कराई जा रही है और न ही इसके स्थायी समाधान की पहल ही की जा सकी। गांव की दलित सहित अनेक बस्तियों में बजबजाती नालियां और बेहिसाब गंदगी भयावाह तस्वीर बयां करती है। वहीं डीह बाबा मंदिर के समीप वर्षो से पानी निकासी की समस्या का स्थायी समाधान नहीं निकाले जाने से सड़कों पर हमेशा गंदा पानी बहता रहता है। साथ ही डीह बाबा मंदिर से सटे बाबू लघु माध्यमिक विद्यालय भी है जहां प्रतिदिन सैकड़ों बच्चे गंदे पानी से होकर बचते-बचाते पढ़ने आते-जाते हैं। वहीं जिम्मेदार अपनी आंखों पर पट्टी बांध रखे हैं। पांच हजार से अधिक की आबादी वाले इस गांव में सफाई सहित नालियों, सड़कों का दयनीय हाल है। ग्रामीण ग्राम प्रधान सहित ब्लाक के अधिकारियों का चक्कर लगाकर थक चुके हैं लेकिन इनकी कोई सुनने वाला नहीं है। इस संबंध में ग्राम प्रधान गणेश गुप्ता ने कहा कि नालियों के नव निर्माण सहित नालियों की सफाई के लिए वह ब्लाक के अधिकारियों का चक्कर लगा रहे हैं किंतु कोई सुनवाई नहीं होने से यह स्थिति बनी हुई है। यदि ब्लाक से सफाई कर्मी मिल जाते तो सफाई शीघ्र हो जाती। छलका ग्रामीणों का दर्द डीह बाबा मंदिर के समीप वर्षो से सड़क पर गंदा पानी बहता है। इससे जहां आस्था को ठेस पहुंच रही है वहीं अधिकारी व ग्राम प्रधान सुनने को तैयार नहीं है। गांव की अधिकांश बस्तियों में सफाई व्यवस्था जहां ध्वस्त पड़ी है वहीं जनप्रतिनिधियों की उदासीन रवैये के चलते ग्रामीणों की जिदगी बदतर हो गई है। अखिलेश सैनी ग्राम प्रधान की अनदेखी से अधिकांश बस्तियां गंदगी के ढेर में तब्दील होकर रह गई हैं। सड़कों पर बह रहे मल-जल से संक्रामक बीमारियों का खतरा है। जनप्रतिनिधियों की उदासीनता के चलते गांव की अधिकांश बस्तियां बुनियादी सुविधाओं से जूझ रही हैं। वहीं जिम्मेदारी अपनी जेब भारी करने में लगे हुए हैं।

# शराब की अवैध फैक्ट्री का राजफाश, सात गिरफ्तार

**सरायमीर (आजमगढ़)।** अहरौला थाना क्षेत्र के रुपाईपुर गांव में मंगलवार की देर रात पुलिस ने दवा कारोबारी के मकान में संचालित शराब की अवैध फैक्ट्री का राजफाश किया है। इस मामले में सात लोग गिरफ्तार किए गए। मकान से भारी मात्रा में शराब व

केमिकल बरामद हुआ। शराब बनाने का केमिकल ड्रम में भरकर जमीन में गाड़ा गया था, जिसे निकालने के लिए जेसीबी मंगानी पड़ी। पूरी कार्रवाई गिरफ्तार आरोपितों से पूछताछ के आधार पर की गई माहुल में शराब से हुई मौतों के बाद पलटवार के मूड में आई पुलिस ने दुकान के आसपास के सीसी फुटेज को खंगाला तो साफ हो गया कि आपूर्ति करने वाले कौन लोग हैं। पकड़े गए लोगों ने फहीम का नाम बताया तो उसे साथ लेकर पुलिस ने उसके मकान पर छापा मारा। कार्रवाई की कमान खुद पुलिस अधीक्षक अनुराग आर्य ने संभाली, तो हर बिंदु पर काम दिखने लगा। पुलिस अधीक्षक ने बताया मोहम्मद फहीम अपने भाइयों के साथ मिलकर शराब की अवैध फैक्ट्री का संचालन करता था। मोहम्मद फहीम के घर के निचले हिस्से से 15 पेटी शराब, छत पर कमरे से दो पेटी, मारुति वैन से पांच पेटी, आटो रिक्शा से तीन पेटी शराब बरामद हुई है। इसके अलावा छह ड्रम लहन, भारी संख्या में रैपर , पैकिंग मशीन, 15 पेटी ओनरेक्स सीरप दवा, 20 हजार खाली बोतलें, विभिन्न प्रकार के फ्लेवर्स की बोतलें,10 हजार फर्जी बारकोड, वैन, आटो रिक्शा, मोटरसाइकिल एवं एक स्कूटी बरामद हुई है। एसपी ने बताया लगभग 30 लाख रुपये से ऊपर की बरामदगी हुई है। मोहम्मद फहीम माहुल बाजार में हरा वाला रोड पर नेशनल मेडिकल स्टोर चलाता है। छापामारी टीम में सीओ लालगंज मनोज रघुवंशी, इंस्पेक्टर अनिल कुमार सिंह, स्वाट टीम प्रभारी संजय सिंह, राजकुमार सिंह, थानाध्यक्ष अहरौला संजय कुमार सिंह सहित कई थानों की फोर्स शामिल थी। एसपी ने बताया लगभग 30 लाख रुपये से ऊपर की बरामदगी हुई है। मोहम्मद फहीम माहुल बाजार में हरा वाला रोड पर नेशनल मेडिकल स्टोर चलाता है। छापामारी टीम में सीओ लालगंज मनोज रघुवंशी, इंस्पेक्टर अनिल कुमार सिंह, स्वाट टीम प्रभारी संजय सिंह, राजकुमार सिंह, थानाध्यक्ष अहरौला संजय कुमार सिंह सहित कई थानों की फोर्स शामिल थी। शराब से मौत मामले में फरार छह पर 25-25 हजार का इनाम आजमगढ़ अहरौला थाना क्षेत्र के माहुल में जहरीली शराब के सेवन से हुई मौत के मामले में फरार चल रहे छह आरोपितों पर पुलिस अधीक्षक ने 25-25 हजार रुपये का इनाम बुधवार को घोषित किया है। आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस उनके संभावित ठिकानों पर लगातार छापेमारी कर रही है। फरार आरोपितों में मोहम्मद नदीम, मोहम्मद कलीम, मोहम्मद नईम, मोहम्मद सलीम निवासी रुपाईपुर, सहबाज व सलमान निवासी माहुल शामिल है।

# कौन है इंटौरी का ग्राम पंचायत अधिकारी,लोगों को नहीं मालूम

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**डॉ0रणजीत सिंह**

**प्रतापगढ़।** विकास खण्ड लक्ष्मणपुर की ग्राम पंचायत इंटौरी के लोगों को अपने ग्राम पंचायत अधिकारी का चेहरा देखने का मौका अभी तक नहीं मिला है। इस ग्राम पंचायत के ग्राम पंचायत अधिकारी लगभग दो महीने पहले इस ग्राम पंचायत का कार्यभार ग्रहण किए थे लेकिन इन 2 महीनों में न तो वह यहाँ अपना चेहरा दिखाने आए और न ही ग्रामवासी आज तक उनका चेहरा पहचानते है।लोग मृत्यु प्रमाण पत्र एवं जन्म प्रमाण पत्र बनवाने के लिए उन्हें ढूँढ रहे है लेकिन उनका दीदार नहीं हो पा रहा है। विकास खण्ड कार्यालय पर भी लोग जाते हैं तो वह वहाँ भी उपलब्ध नहीं रहते है।ग्रामीणों का कहना है एडीओ पंचायत से भी शिकायत करने पर जवाब मिलता है कि वह 6 ग्राम पंचायतों के ग्राम पंचायत अधिकारी है वह कहाँ- कहाँ जाएंगे और कहाँ- कहाँ बैठेंगे।शासन ने प्रत्येक ग्राम पंचायत अधिकारी को आदेशित एवं निर्देशित किया है कि वह ग्राम ग्राम पंचायत में प्रतिदिन अवश्य बैठे।अलावा ग्राम प्रधान,स्वास्थ्य विभाग की परिचारिका,पुलिस, कंप्यूटर ऑपरेटर/रोजगार सेवक आदि को पंचायत भवन में बैठना आवश्यक है लेकिन इस ग्राम पंचायत में यह सब देखने को नहीं मिल रहा है। इस तरह अपने मनमानेपन से शासन की नीतियों को दरकिनार करके अपने ढंग से नौकरी करते हुए इस ग्राम पंचायत के ग्राम पंचायत अधिकारी ने न केवल सरकारी योजनाओं को समय पर क्रियान्वित न करने का संकल्प ले लिया है बल्कि ग्रामीणों को भी उनकी गैरमौजूदगी से भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।इस ग्राम की प्रधान मिथिलेश का भी लगता है ग्रामीणों से कुछ लेना देना नहीं है।उनके पति महोदय बेसिक स्कूल में शिक्षक हैं।कौन प्रधान प्रधान का कार्य देखता है न तो गाँव वाले बता पा रहे हैं और न ही प्रधान से किसी प्रकार का संपर्क हो पाता है। ग्रामीणों का कहना है कि ग्राम प्रधान द्वारा नए पंचायत भवन का निर्माण करवाया जा रहा था जिसमें घटिया ईटों का प्रयोग किया जा रहा था।जब उस समय तैनात ग्राम पंचायत अधिकारी ने विरोध किया तो ग्राम प्रधान के लड़के उस ग्राम पंचायत अधिकारी से मारपीट करने पर आमादा हो गए।ऐसी स्थिति में इस ग्राम पंचायत में कैसे निष्पक्ष एवं पारदर्शी व ईमानदारी से कार्य होगा इसकी सहज कल्पना कर सकते हैं।वर्तमान में तैनात ग्राम पंचायत अधिकारी ज्ञान प्रकाश शुक्ल बताए जाते हैं।वह अपनी मनमानी कार्यशैली के लिए पहले से ही ब्लॉक में चर्चित रहे हैं। कुछ ग्राम पंचायतों में उन पर अपात्रों को आवास देने का आरोप लगाया है जबकि पात्रों के आवास को काटने का भी आरोप लगाया जा चुका है। फिलहाल इटौरी ग्राम पंचायत के ग्रामीण अपने ग्राम पंचायत अधिकारी की राह देख रहे हैं कि कब उनसे भेंट हो और वे जन्म प्रमाण पत्र,मृत्यु प्रमाण पत्र एवं पेंशन आदि के कागजों पर उनकी संस्तुति एवं हस्ताक्षर ले सकें।

# पोलिग पार्टियों के लिए डिस्पैच सेंटर पर होगी विशेष व्यवस्था

**आजमगढ़।** डीएम अमृत त्रिपाठी ने बुधवार को दो मार्च तक ज्योति निकेतन स्कूल में आयोजित मतदान कर्मियां के प्रशिक्षण कार्यक्रम का निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने बताया कि इस बार पोलिग पार्टियों के लिए डिस्पैच सेंटर पर

विशेष व्यवस्था की जाएगी। डिस्पैच सेंटर से ही परिवहन गाड़ी ले जाएगी और वापस भी डिस्पैच सेंटर पर पहुंचाएगी। सीडीओ आनंद कुमार शुक्ल को डिस्पैच सेंटर पर ही चाय पानी की विशेष व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कार्मिकों के वाहनों को खड़ा करने के लिए डिस्पैच सेंटर पर पार्किंग एवं टोकन की व्यवस्था बनाई जाएगी। पोलिग पार्टियों को आवश्यक सूचनाएं प्रदान करने के लिए माइक से घोषणा कराई जाएगी। सभी कक्ष में जाकर प्रशिक्षण देने वाले मास्टर ट्रेनर और पीठासीन अधिकारियों से मतदान प्रक्रिया, माक पोल, ईवीएम एवं वीवी पैट से संबंधित प्रशन पूछे। उन्होंने कार्मिकों से माक पोल प्रक्रिया की जानी चाहिए, इसकी जानकारी प्राप्त ली। प्रशिक्षित किए जो रहे कार्मिकों का डमी सर्टिफिकेट उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कमजोर पोलिग पार्टी को चिह्नित कर विशेष प्रशिक्षण दिया जाए। कहा कि मतदान प्रक्रिया के दौरान निर्धारित चुनाव चिह्न का बटन दबाने पर यदि वीवी पैट में दूसरे चुनाव चिह्न की पर्ची दिखे तो तत्काल सेक्टर मजिस्ट्रेट को सूचना देंगे। डीआइओएस डा.वीके शर्मा, बीएसए अतुल कुमार,स्टेट लेवल मास्टर ट्रेनर इंजीनियर कुलभूषण सिंह सहित अन्य सभी विभागों के संबंधित अधिकारी थे।

# भाजपा सरकार नौजवान किसान विरोधी जनादेश सपा के पक्ष में: अखिलेश यादव

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**सरफराज अहमद**

**फूलपुर।** फूलपुर के लंका मैदान में एक ऐतिहासिक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा। कि भाजपा सरकार में किसानों और नौजवानों के साथ बहुत ही ना इंसाफी हुई है। क्योंकि किसानों की आमदनी आधी हो गई है। जो कि सरकार ने किसानों की आय दोगुनी करने की बात कही थी उनको अपनी उपज का बराबर मूल नहीं मिल पा रहा है तथा उनकी फसल भी छुट्टा जानवरों द्वारा नष्ट की जा रही है। इसी प्रकार नौजवानों के विषय में भी लापरवाही बरती जा रही है। क्योंकि 67 हजार अध्यापक भर्ती में जो घोटाला हुआ है।उसे भी आरक्षण का पालन न करते हुए भर्ती की जाएगी। उन्होंने कहा कि किसी भी विभागों में कोई नई भर्ती नहीं की जा रही है। यदि मेरी सरकार बनती है। तो जो 11 लाख पद खाली है। वह भतिर्यां कराते हुए नौजवानों को अधिक से अधिक नौकरियों में नियुक्ति दिलाई जाएगी। संविदा कर्मियों का भी समायोजन करके उनके पदों को स्थाई किया जाएगा। रोजगार सेवको का भी मानदेय बढ़ाया जाएगा। किसानों को 300 यूनिट बिजली फ्री तथा सिंचाई के लिए मुफ्त बिजली दी जाएगी। तथा हमारी सरकार बनती है। तो तीन माह के अंदर जाति जनगणना कराते हुए उन्हें फायदा दिलाया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा। कि वर्तमान

सरकार ने हवाई जहाज, रेलगाड़ी, एयरपोर्ट्स, बंदरगाह, पानी की जहाज सब बेच दिया है। अंत में उन्हों ने कहा। कि फूलपुर विधानसभा से हाजी मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी व प्रतापपुर विधानसभा से विजमा यादव तथा सोरांव विधानसभा से गीता पासी को आप लोग आने वाले 27 फरवरी को साइकिल के सामने वाली बटन दबाकर भारी मतों से विजयी बनाने का काम करें। वक्ताओं की कड़ी में इंद्रजीत सरोज राष्ट्रीय महासचिव, जिला अध्यक्ष सपा योगेश यादव, पूर्व विधायक जोखू लाल यादव, प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष तिवारी, पूर्व चेयरमैन मंसूर आलम, पूर्व सांसद धर्मराज पटेल, पूर्व लोकसभा प्रत्याशी प्रमोद पटेल, एम एल सी बासुदेव यादव, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष अनीता श्रीवास्तव, पूर्व ब्लाक प्रमुख बहरिया अनिल यादव, पूर्व ब्लाक प्रमुख फूलपुर सुषमा पासी, एस बी यादव सैयद सोहेल अहमद नवाब आलम मं अरकान उर रहमान सूरीआदि लोगों ने अपने अपने वक्तव्य में सपा पार्टी के प्रत्याशियों को जिताने की अपील की।

# एस ए एस हॉस्पिटल में नेत्र एवं न्यूरोसर्जरी विभाग के शुरुआत द ग्रेट खली ने शुभारंभ किये.....

**(आधुनिक समाचार सेवा)**
**सर्वेश कुमार यश**

**हरहुआ (वाराणसी)।** विकास खंड क्षेत्र हरहुआ धनेश्वरी विश्वप्रसिद्ध चैंपियन श्री दलीप सिंह राणा (द ग्रेट खली) का आगमन हुआ। आज का ये आयोजन, हॉस्पिटल में आयुष्मान भारत के तहत नेत्र रोग विभाग की पहली सर्जरी एवं न्यूरोसर्जरी विभाग के

उद्घाटन के सन्दर्भ में सम्पादित किया गया। इस अवसर पर द ग्रेट खली ने क्षेत्र की जनता को विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधाएं अत्यंत रियायती दरों पर प्रदान करने के लिए हॉस्पिटल का आभार जताया और हॉस्पिटल के उज्जवल भविष्य की कामना की है। उन्होंने ये विश्वास जताया है कि भविष्य में भी हॉस्पिटल हरहुआ समग्र पूर्वांचल के लोगों के लिए विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराती रहेगी इस कार्यक्रम में डॉ. अशोक कुमार पाण्डेय (चैयरमेन हॉस्पिटल), सेक्रेटरी डॉ. गीता पाण्डेय , डायरेक्टर डॉ. अनीश पाण्डेय , डायरेक्टर डॉ. यश पाण्डेय, डॉ रिया पाण्डेय उपस्थित रहे। पत्रकारों से बातचीत के दौरान चैंपियन खिलाड़ी खली ने बताया कि भाजपा पूर्ण बहुमत से सरकार बन रही है हम उनका समर्थन करते हैं।

# बाइक पेड़ से टकराई, दो युवकों की मौत

**मार्टीनगंज (आजमगढ़) ।** बरदह थाना क्षेत्र के महुजा नेवादा-सराय मोहन मार्ग स्थित पुराने गनन मिल के समीप बुधवार की शाम करीब पांच बजे अनियंत्रित अपाचे बाइक पेड़ से जा टकराई। जबरदस्त हादसे में बाइक सवार गोरख राजभर (25) पुत्र जसवीर निवासी रंगडीह थाना सरायमीर व नीरज राजभर (28) निवासी लतीरपुर बेलवइया जिला अंबेडकरनगर की मौत हो गई। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई में जुट गई है। घटना से पीड़ित परिवारों में कोहराम मच गया। गोरख राजभर के बुआ की लड़की, जो दीदारगंज अंतर्गत रसावा गांव में रहती है की बुधवार को शादी थी। महुजा नेवादा अष्टभुजी मंदिर में शादी के बाद सभी लोग अपने घर रसावा चले गए। स्वजन कुछ सामान मंदिर पर भूल गए थे। गोरख उन सामानों को लाने के लिए अपने रिश्तेदार नीरज राजभर के साथ बाइक से मंदिर जा रहा था कि रफ्तार तेज होने के कारण दोनों शीशम के पेड़ में टकराने के बाद खाई में जा गिरे। हादसे में गंभीर घायल दोनों युवकों को एंबुलेंस से प्राथमिक स्वास्थ केंद्र मार्टीनगंज भेजा गया। इलाज के दौरान दोनों ने तोड़ दिया। पुलिस ने स्वजन को घटना की जानकारी दी। गोरख राजभर तीन भाइयों में दूसरे नंबर का था। गोरख उन सामानों को लाने के लिए अपने रिश्तेदार नीरज राजभर के साथ बाइक से मंदिर जा रहा था कि रफ्तार तेज होने के कारण दोनों शीशम के पेड़ में टकराने के बाद खाई में जा गिरे।

# मील का पत्थर साबित होगा एवोलुशन कार्यक्रम

**सोनभद्र ।** राजकीय इंजीनियरिग कॉलेज सोनभद्र में बुधवार को तीन दिवसीय एवोलुशन 2.0 कार्यक्रम की शुरुआत हुई। आयोजक कंपनी इन्क्यूटोपिआ प्राइवेट लिमिटेड एवं दो और स्टार्टअप जीएस एनर्जी, ऑटोमेशन प्राइवेट लिमिटेड एवं लूडो वेंचर्स

प्राइवेट लिमिटेड को प्रस्तुत किया। राजकीय इंजीनियरिग कालेज के इन्क्यूबेशन प्रोग्राम में पंजीकृत कराया गया। इस दौरान इन्क्यूबेशन सेंटर के समन्यवक डा. विजय प्रताप एवं धर्मेंद्र दीक्षित ने बताया कि यह कार्यक्रम जिले के विकास के लिए मील का पत्थर साबित होगा। संस्थान के निदेशक प्रो गीतम सिंह तोमर ने इसे एक बड़ी उपलब्धि बताया। नए स्टार्टअप्स को हर संभव मदद प्रदान करने का आश्वासन दिया। कालेज के रजिस्ट्रार डा. आमोद तिवारी ने बताया कि आज के समय में छात्रों को पढ़ाई के अलावा स्टार्ट अप के बारे में भी सोचना चाहिए। समन्यवक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि पिछले तीन महीने के प्रयास से यह संभव हुआ। मार्च 2022 तक 10 स्टार्टअप से जिले को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हम प्रयासरत हैं। इन्क्यूटोपिआ के निदेशक प्रतीक जैन, जीएस एनर्जी के गोविद एवं लूडो वेंचर्स के आनंद राय ने अतिथियों एवं छात्रों को अपने संस्थान के कार्यों के बारे में विस्तृत रूप से बताया। हर संभव सहयोग एवं साथ में कार्य करने को प्रेरित किया। अध्यक्षता करते हुए ज्ञान इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक शोक कुमार ने भविष्य के लिए बेहतर योजनाओं पर काम करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर संस्थान के सभी फैकल्टी और स्टाफ, कंपनियों के सभी सदस्य आदि मौजूद रहे गौरतलब है कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ अन्य विधाओं का ज्ञान देने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

# पोस्टर बैलेट पेपर से मतदान की तैयारियों पर विमर्श

**सोनभद्र ।** पोस्टर बैलेट पेपर के माध्यम से मतदान प्रक्रिया की तैयारियों को लेकर अपर जिलाधिकारी राकेश सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट में बैठक हुई। इस दौरान अपर जिलाधिकारी ने सभी रिटर्निंग आफिसर को निर्देशित कर कहा कि 24 फरवरी से मतदान कार्मिकों के ट्रेनिग के दौरान ही पोस्टर बैलेट पेपर के माध्यम से मतदान प्रक्रिया की जानी है। सभी रिटर्निंग आफिसर, उप निदेशक कृषि प्रशिक्षण स्थल पर बैलेट पेपर के माध्यम से किये जाने वाले मतदान प्रक्रिया के संबन्ध में आवश्यक तैयारियां सुनिश्चित कर लें। प्रशिक्षण के दौरान जनपद सोनभद्र के निवासी, कार्मिक ही बैलेट पेपर के माध्यम से मतदान करेंगे। मतदान प्रक्रिया में वह कार्मिक ही सम्मिलित होंगे जिनकी ड्यूटी निर्वाचन कार्य में लगी है। 80 वर्ष आयु पूर्ण करने वाले व उससे अधिक उम्र के मतदाताओं को मतदान करने की व्यवस्थाओं के लिए रूटचार्ट तैयार कर लिया जाय। इस मौके पर उप निदेशक कृषि दिनेश कुमार गुप्ता, उप जिलाधिकारी सदर राजेश कुमार सिंह, उप जिलाधिकारी घोरावल रमेश कुमार, उप जिलाधिकारी ओबरा सिंह, उप जिलाधिकारी दुद्धी प्रमोद तिवारी, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह, सहायक निर्वाचन अधिकारी जगरूप सिंह आदि मौजूद रहे।

# अज्ञात वाहन की चपेट में आने से बुजुर्ग की गई जान

**सोनभद्र ।** राबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र के बुड़हर कला गांव में बुधवार की सुबह करीब छह बजे अज्ञात वाहन की चपेट में आने से 70 वर्षीय बुजुर्ग अमरनाथ की मौत हो गई। घटना वाराणसी-शक्तिनगर मार्ग पार हुई। हादसे की जानकारी होते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए। लोगों ने घटना की जानकारी पुलिस को दी। इस पर राबर्ट्सगंज कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंच गई। शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा।

# डीएम व एसपी ने वाहन चेकिग का लिया जायजा, दिए निर्देश

**चील्ह (मीरजापुर)।** जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार व पुलिस अधीक्षक अजय कुमार सिंह बुधवार को चुनाव के मद्देनजर चलाए गए वाहन चेकिग अभियान का जायजा लेने चील्ह चौराहा पहुंचे। हिदायत दी कि आने-जाने वाले वाहनों की सघन तलाशी के बाद ही आगे जाने दिया जाए। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। विधानसभा चुनाव को देखते हुए असामाजिक तत्वों द्वारा असलहा, धन तथा मादक पदार्थ सहित अन्य आपत्तिजनक सामग्रियों की सघन जांच के लिए उड़नदस्ता की कई टीमें लगाई गई हैं। बुधवार को चील्ह चौराहा पर सुशील कुमार विश्वकर्मा और शैलेंद्र कुमार सिंह उड़नदस्ता प्रभारी नगर विधानसभा द्वारा अभियान चलाया जा रहा था। इसी बीच डीएम व एसपी मौके पर पहुंचकर जांच के लिए आवश्यक निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने कहा कि आज के परिवेश में आपत्तिजनक सामग्री ले

जाने वाले लोग अपने तरीके में परिवर्तन किए हैं। इसलिए आप लोग बारीकी से वाहनों की जांच करें, किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो। इस मौके पर थानाध्यक्ष अजीत कुमार श्रीवास्तव, चौकी ढेढ़वा प्रभारी चंद्रकांत त्रिपाठी आदि रहे।

# जवानों ने मार्च कर सुरक्षा का कराया अहसास

**सोनभद्र।** विधानसभा चुनाव के मद्देनजर जवानों ने फ्लैग मार्च कर मतदाताओं को सुरक्षा का अहसास कराया। शांतिपूर्वक, निष्पक्ष मतदान के लिए आमजन को जागरूक किया। इस दौरान अधिकारियों ने सीमावर्ती इलाकों में सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने के साथ ही नक्सल गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। आदर्श चुनाव आचार संहिता का अनुपालन हर स्तर पर करने के लिए प्रेरित किया गया। संवेदनशील व अति संवेदनशील मतदान केंद्रों की भी जांच की गई। कोतवाली घोरावल के कोरट के साथ वनरेबल व क्रिटिकल गांव में पीएसी कम्पनी के साथ जवानों ने मार्च किया। इस दौरान स्थानीय लोगों से संपर्क किया गया। उनकी विभिनन समस्याओं के बारे में जानकारी करते हुए हरसंभव समाधान कराने का भरोसा दिलाया। ग्रामीणों से अपील की कि वे भयमुक्त होकर आगामी विधानसभा चुनाव में मतदान करें। किसी के बहकावे में न आते हुए पुलिस का सहयोग करें। इलाके में दिखाई देने वाले संदिग्ध व्यक्तियों और घटनाओं की जानकारी तत्काल पुलिस को दें ताकि आवश्यक कार्रवाई की जा सके। अधिकारियों ने स्थानीय पुलिस को भी जनता से अच्छा व मानवीय व्यवहार करने के लिए कहा। कोतवाली निरीक्षक देवता नंद सिंह ने बताया कि लोगों की समस्याओं के त्वरित निस्तारण कराने के लिएआवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। घोरावल विधानसभा में अपलोडिग की कार्रवाई पूरी घोरावल विधानसभा घोरावल 400 में नामांकन और पोस्टल बैलेट पेपर, मतपत्र और इटीबीपीएस की अपलोडिग की कार्रवाई मंगलवार को पूर्ण कर ली गई। एसडीएम घोरावल व रिटर्निंग ऑफिसर रमेश कुमार ने बताया कि घोरावल विधानसभा में कुल 12 प्रत्याशी मैदान में हैं, जिन्हें सोमवार को चुनाव चिन्ह आवंटित कर दिए गए हैं। सभी प्रत्याशियों को सूचना और अनुमति प्राप्त करने के लिए एकल पटल प्रभारी तहसील कार्यालय में अखिलेश मिश्र 8858530739 को प्रभारी बनाया गया प्रत्याशियों और उनके एजेंटों की सुविधा के लिए उन्हें पूरी प्रक्रिया बता दी गई है। यह अनुरोध किया गया है कि निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों और आदर्श आचार संहिता का पालन करते हुए शुचिता पूर्ण ढंग से चुनाव पूर्ण कराने में अपना योगदान दें।

# सुनील व अभय माता-पिता के थे इकलौते पुत्र

**सोनभद्र।** पन्नूगंज थाना क्षेत्र के इमिलियाडीह गांव में मंगलवार की रात दो बाइकों की टक्कर में हुई तीन लोगों की मौत हो गई थी। इनमें दो युवक अपने-अपने घर के इकलौते चिराग थे। तीनों की मौत से स्वजन में कोहराम मच गया। पूरी रात जिला अस्पताल के पोस्टमार्टम हाउस पर मृतकों के स्वजन की भीड़ लगी रही। पूरा माहौल गमगीन हो गया। हादसे में मृत अभय मिश्र व सुनील अपने-अपने माता- पिता के इकलौते संतान थे जबकि तीसरे मृतक बृजेश शुक्ला की पत्नी प्रयागराज में पुलिस विभाग में सिपाही हैं। पुलिस ने रात में ही तीनों शवों का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया। तीनों का बुधवार की सुबह दाह संस्कार किया गया। रायपुर थाना क्षेत्र के चकया गांव निवासी सुनील (19) पुत्र राजकुमार, आजाद अली (20)

पुत्र सरफुद्दीन व दिनेश (23) पुत्र पप्पू, जुगलेश (21) पुत्र नंदलाल शटरिग का कार्य राबर्ट्सगंज में करते हैं। चारों एक ही बाइक से रात में गांव लौट रहे थे। इसी दौरान अभय मिश्र (18) पुत्र स्वतंत्र कुमार निवासी सेमरी व बृजेश शुक्ला (20) पुत्र आलोक शुक्ला निवासी राकी एक ही बाइक से पनूगंज की तरह से रामगढ़ की ओर आ रहे थे। दोनों मौसेरे भाई हैं। इमिलियाडीह गांव के पास दोनों बाइकों की आमने-सामने टक्कर हो गई। इसमें एक बाइक पर सवार अभय व बृजेश व दूसरे बाइक पर सवार सुनील की घटनास्थल पर ही मौत हो गई जबकि आजाद, दिनेश व जुगलेश गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने लोगों की मदद से घायलों को जिला अस्पताल भेजा जहां से घायलों को वाराणसी ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया गया। ट्रामा सेंटर में उपचार के बाद जुगलेश घर लौट आया जबकि आजाद व दिनेश वहां भर्ती हैं।

# विधायक ने कार्यकर्ताओं के सामने लगाई उठक-बैठक

**सोनभद्र।** मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी के त्रिदेव सम्मेलन में राबर्ट्सगंज के विधायक भूपेश चौबे ने अचानक ने मंच पर उठक-बैठक कर सबको चौका दिया। कार्यकर्ताओं के सामने सार्वजनिक माफी मांगते हुए मंच पर ही उठक बैठक लगाना शुरू कर दिया। विधायक के इस अंदाज को देख मंच पर बैठे पदाधिकारी व कार्यकर्ता हतप्रभ हो गए। जब तक मंच के लोग उन्हें बैठने के लिए कहते, वह छह बार उठक-बैठक कर चुके थे। राबर्ट्सगंज स्थित एक निजी होटल परिसर में विधायक ने माइक संभालते हुए यह तक कह दिया कि जब तक चुनाव संपन्न नहीं होता वह अन्न व पदवेश से दूरी बनाए रखेंगे। मतदान के बाद ही इन सबका ग्रहण करेंगे। विधानसभा क्षेत्र के मंडल व बूथ कार्यकर्ताओं के सामने विधायक ने उठक- बैठक की। इस दौरान लगातार कार्यकर्ताओं की नाराजगी की बात सुनकर विधायक भावुक हो गए और बिना समय गंवाए मंच पर लगी कुर्सी पर खड़े होकर कार्यकर्ताओं

से सार्वजनिक माफी मांगने लगे। विधायक ने भविष्य में अपनी कमियों को दूर करने और दोबारा गलती न करने की बात कही। कहा कि आप लोग मुझे एक बार फिर से मौका दें, काफी कुछ किया, कुछ नहीं हो सका लेकिन किसी को कोई शिकायत का मौका आगे नहीं दूंगा। आश्वासन दिया कि जो भी कमियां है उसे दूर करने के लिए पूरी मेहनत करेंगे। विधायक को भावुक देख कार्यकर्ता भी सन्न रह गए। विधायक अब नंगे पांव चल रहे हैं। यह क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। जनता जनार्दन के सामने नहीं जाऊंगा पदवेश में भाजपा विधायक भूपेश चौबे का कहना है कि जनता के सहयोग से राम मंदिर का निर्माण हुआ। बाबा भोलेनाथ का दरबार सजा, आतंकवाद का खात्मा व धारा 370 हटा दी गई। इसके लिए सभी से एक वोट भाजपा को देने का आग्रह कर रहा हूं। इस महान कार्य में जिस जनता का पवित्र सहयोग रहा है, उसके सामने चुनाव में पदवेश धारण कर नहीं मिलना चाहता। अन्न के प्रश्न पर कहा कि सादगी से फलाहार लेना है।

# फ्लाई ऐश के 50वें रैक को भेजकर एनटीपीसी रिहंद ने बनाया नया कीर्तिमान

**सोनभद्र।** राख उपयोगिता को बढ़ाने के लिए एनटीपीसी रिहंद सदैव ही नई विधाओं के विकास एवं परियोजना में प्रतिबद्ध है। एनटीपीसी रिहंद ने रेल डिब्बों के माध्यम से विभिन्न सीमेंट संयंत्रों को राख की 50वीं रैक भेजकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। एनटीपीसी रिहंद और भारतीय रेलवे के संयुक्त प्रयास से 51 वैगन की 50वीं रैक बुधवार को बिरला सीमेंट के मैहर संयंत्र को भेजी गई। विगत छह महीनों में एनटीपीसी रिहंद ने लगभग 81000 टन फ्लाई ऐश रेल डिब्बों से देश के विभिन्न सीमेंट संयंत्रों को भेजा है। यह क्रम आगे भी बना रहे इसके लिए एनटीपीसी रिहंद सदैव प्रयासरत है। मुख्य महाप्रबंधक देवव्रत पॉल ने कहा कि एनटीपीसी लिमिटेड और भारतीय रेलवे के संयुक्त प्रयासों के बाद राख उपयोग के नए युग की शुरुआत हुई है। यह शत प्रतिशत राख उपयोग के विशाल लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस क्रिया से जुड़े सभी कर्मचारियों को बधाई देते हुए उनके योगदान की सराहना की। इस दौरान मुख्य महाप्रबंधक देवव्रत पाल एवं दीपक कुमार मण्डल यातायात प्रबंधक भारतीय रेल ने हरी झंडी दिखाकर एनटीपीसी रिहंद से 50वीं रैक को रवाना किया। इस मौके पर एके चट्टोपाध्याय महाव्रपंधक ओएंडएम, एसएस कृष्णा महाव्रपंधक तकनीकी सेवाएं, एके पापनेजा महाप्रबंधक अनुरक्षण, के गोपाल कृष्ण महाव्रपंधक ईंधन प्रबंधन, पंकज मेदिरत्ता महाप्रबंधक ऑपरेशन, राजीव कुमार सिन्हा महाप्रबंधक एडीएएम मौजूद रहे।

# राष्ट्रीय लोक अदालत के प्रचार के लिए वाहन रवाना

**सोनभद्र।** जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में आगामी 12 मार्च को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया है। इसके प्रचार वाहन को न्यायालय परिसर से जनपद न्यायाधीश अशोक कुमार यादव प्रथम ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। अपर जिला जज प्रथम खलीकुज्जमा ने बताया कि इस वाहन के माध्यम से राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में लोगों को जानकारी तो होगी ही, साथ ही विभाग के कार्यो के बारे में भी लोगों को जानकारी होगी। वाहन के माध्यम से कानूनी सलाह और मदद के कार्यो से अवगत कराया जाएगा। इस अवसर राष्ट्रीय लोक अदालत

के नोडल अधिकारी निहारिका सिंह चौहान ने कहा कि राष्ट्रीय लोक अदालत का व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार के लिए यह वाहन लोगों के बीच जागरूकता फैलाने में सहायक होगा। जरूरतमंद एवं असक्षम लोगों को जागरूक करने का विशेष कार्य करेगा। यह प्रचार वाहन शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों को विधिक जानकारी देगी ताकि अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें। इस मौके पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पूर्णकालिक सचिव पंकज कुमार ने कहा कि यह प्रचार वाहन आदिवासी बाहुल्य व सुदूर इलाको में जाकर लोगो को पंपलेट्स व बुकलेट्स वितरित कर आम जनमानस को विधिक अधिकारों के बारे में जागरूक करेगा। इस मौके पर पैरा लीगल वॉलिटियर्स राजन चौबे, अजित, ज्ञान प्रकाश सहित कई पैरालीगल वॉलिटियर्स उपस्थित रहे।

# प्रेक्षक ने जाना बूथों का हाल, जरूरतों को परखा

**मीरजापुर ।** विधानसभा चुनाव को सकुशल एवं आदर्श आचार संहिता के तहत संपन्न कराने के लिए बुधवार को प्रेक्षकों ने अपन अपने विधानसभा क्षेत्रों के बूथों का निरीक्षण कर कमियों को दूर करने के लिए संबंधित को निर्देशित

किया। चेताया कि मतदान के दिन दिव्यांग व वृद्धजनों के लिए खासतौर से व्यवस्था हो, जैसे रैंप व व्हीलचेयर जरूरी है। पटेहरा : मड़िहान विधानसभा क्षेत्र के दर्जनभर बूथों के साथ पटेहरा क्षेत्र के दो दर्जन बूथों का निरीक्षण छत्तीसगढ़ से आए प्रेक्षक पी दयानंद ने कर व्यवस्था को देखा। बूथ पर उपस्थित बीएलओ से पिछले एमपी व एमएलए चुनाव में पड़े मत प्रतिशत की जानकारी ली। कुबरी पटेहरा कला के बूथ संख्या 25 व 26 में प्रकाश, शौचालय, पेयजल, लाइट, डस्टबिन, थर्मल स्कैनर आदि व्यवस्था दुरुस्त रखने के लिए उद्यान अधिकारी मेवाराम व मड़िहान नायब तहसीलदार विदूनंदन सिंह को कहा। पटेहरा के बीएलओ जगदीश चंद श्रीवास्तव व गीतादेवी से बच्चों की उपस्थिति से लेकर विद्यालय की व्यवस्था की जानकारी ली। चील्ह कोन क्षेत्र के चील्ह चौराहा पर व्यय प्रेक्षक ने उड़नदस्ता टीम को आवश्यक निर्देश दिए। प्रेक्षक प्रशांत कुमार जो राजस्थान कैडर के आईएएस अधिकारी हैं, उन्हें जनपद में व्यय प्रेक्षक के रूप में भेजा गया है। उन्होंने चील्ह चौराहे पर टीम को कहा कि वाहनों की जांच की जाए। कोई भी आपत्तिजनक सामग्री लेकर पार न कर सके, इस पर पैनी नजर रखी जाए। चौराहा पर बैरेकेडिग कर वाहनों की जांच करने के लिए निर्देश दिए। गैपुरा : भाजपा के प्रचार वाहन (एलईडी) को विध्याचल क्षेत्र के सगरा के समीप प्रेक्षक एम भल्लार ने रोक कर आदेश मांगा। मौके पर चालक आलोक चंद्र एवं आपरेटर शैलेंद्र शुक्ला ने अनुमति पत्र नहीं दिखा पाए। मोबाइल पर दिखाने का प्रयास किया परन्तु प्रेक्षक संतुष्ट नहीं हुए और प्रचार वाहन को गैपुरा पुलिस चौकी में खड़ा करा दिया। इंस्पेक्टर विध्याचल नीरज पाठक ने बताया कि वाहन का अनुमति पत्र है, लेकिन मौके पर चालक नहीं दिखा पाया। इसीलिए वाहन को रोका गया था, किंतु अनुमति मेरे पास आ गया है, जिसको जल्द ही प्रेक्षक के पास भेज कर प्रचार वाहन को छोड़ दिया जाएगा।

# आरपीएफ ने किशोरी को रेलवे चाइल्ड लाइन को सौंपा

**मीरजापुर।** स्थानीय रेलवे स्टेशन पर रेलवे सुरक्षा बल के सहायक उप निरीक्षक अखिलेश कुमार तिवारी ने किशोरी को रेलवे चाइल्ड लाइन को सौंपा। वह हमराहियों के साथ गश्त कर रहे थे। इसी दौरान प्लेटफार्म दो पर स्थित चाय स्टाल के पास बने बेंच पर एक 17 वर्षीय किशोरी बैठी हुई मिली। पूछताछ पर उसने अपने को अदलहाट थाना क्षेत्र के एक गांव का निवासी बताया। आरपीएफ ने स्वजन के मोबाइल नंबर पर सूचना देने के साथ ही किशोरी की देखभाल के लिए रेलवे चाइल्ड लाइन हेल्प डेस्क की महिला सदस्य अंकिता मिश्रा, नीलू तिवारी, नितिन भार्गव एवं मोहम्मद अर्सलान को सुपुर्द कर दिया।

# चाक, डस्टर, ब्लैक बोर्ड हस्ताक्षर अभियान चला मतदान को किया प्रेरित

**मीरजापुर ।** चाक एवं डस्टर, ब्लैक बोर्ड हस्ताक्षर अभियान विकास खंड सिटी के प्राथमिक विद्यालय भरुहना में चलाया गया। विधानसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान करने के लिए प्रेरित किया। शिक्षकों द्वारा ग्रामीणों को शपथ दिलाया कि विधानसभा चुनाव में स्वयं मतदान करें और दूसरे लोगों को भी करवाएं। विधानसभा चुनाव के दौरान विध्य क्षेत्र में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए अनूठी पहल आरंभ की गई है। इसके तहत 50 फीसद से कम मतदान वाले बूथों के स्कूल के शिक्षक अभियान चला लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों के सहयोग से मुख्य विकास अधिकारी व प्रभारी अधिकारी स्वीप श्रीलक्ष्मी वीएस चाक एवं डस्टर, ब्लैक बोर्ड हस्ताक्षर कैंपेन चलवा रही हैं। अभियान के तहत शिक्षकों द्वारा स्कूलों में मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है साथ ही साथ अभिभावकों से ब्लैक बोर्ड पर हस्ताक्षर कराया जा रहा है। निर्वाचन आयोग संग जिला प्रशासन द्वारा विधानसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए हर संभव उपाय किया जा रहा है। इसके लिए जिला प्रशासन द्वारा 50 फीसद से कम मतदान वाले 126 बूथों को चिह्नित किया गया है। मीरजापुर विधानसभा क्षेत्र के विकास खंड कोन के मल्लेपुर, तिलठी, भटेवरा, पखवैया, पूरबपट्टी, चेकसारी, जगदीशपुर, गोबरहा, सिटी के भरुहना, तरकापुर ग्रामीण अघवार, छानबे के धौरहरा घमहापुर, बबुरा, बीजरबंद, कंतित कठवैया, बिरौरा पांडेय, विजयपुर तेलियानी, नीबी गहरवार, नदिनी अकोढ़ी तथा नगरीय क्षेत्र घंटाघर बरियाघाट, बथुआ, बरौंधा बाजीराव कटरा, बाग कुंजलगिर, बल्ली का अड्डा, ब्रहमचारी का कुआ, कंतित में पिछले चुनाव में 50 फीसद से कम मतदान हुआ था।

# मतदाता फीसद बढ़ाने को ब्लाक कर्मियों ने निकाली रैली

**मीरजापुर** जनपद के विभिन्न ब्लाकों के कर्मियों ने बुधवार को मतदान फीसद बढ़ाने के साथ अधिक से अधिक मतदान करने के लिए बाइक रैली व पदयात्रा कर लोगों को जागरूक किया। ब्लाक कर्मियों ने गांव-गांव भ्रमण कर लोगों को अच्छी सरकार व अच्छे जनप्रतिनिधि के चुनाव के लिए लोकतंत्र के महापर्व पर बढ़-चढ़

कर मतदान करने की अपील की। जमालपुर बीडीओ रविद्र कुमार सिंह ने सुरहा ग्राम पंचायत स्थित पंचायत भवन के पास से मतदाता जागरूकता बाइक रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ब्लाक कर्मियों ने बाइक रैली में भाग लिया एवं लोगों को सात मार्च को सारे काम छोड़कर पहले मतदान करने की अपील की। रैली पूरे गांव का भ्रमण कर पंचायत भवन परिसर में आकर समाप्त हुई। बीडीओ ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने की जिम्मेदारी हम सब लोगों की है। एडीओ पंचायत छोटेलाल, ग्राम प्रधान तेतरा देवी, कन्हैयालाल बिद, अशोक कुमार आदि रहे। हलिया : ब्लाक मुख्यालय से बीडीओ विजय कुमार ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सगरा, सोनगढा, मनिगढा, मतवार आदि गांवों में मतदान फीसद 50 प्रतिशत ही था। इन गांवों में मतदाता जागरूकता रैली निकालकर मतदाताओं को अधिक से अधिक मतदान के लिए प्रेरित किया गया। इसके पूर्व सगरा प्राथमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बीडीओ ने मतदाताओं को जागरूक बढ चढकर मतदान में हिस्सा लेने की अपील की। सहायक विकास अधिकारी पंचायत अरुण कुमार, एडीओ एसटी मनोहर लाल, वरिष्ठ लिपिक राकेश शुक्ल, सचिव विजयपाल मिश्रा, शिवशंकर सिंह, सत्येंद्र कुमार, जयशंकर शर्मा रहे। चील्ह कोन विकास खंड क्षेत्र में मतदाता जागरूकता रैली निकालकर लोगों को मतदान करने के लिए प्रेरित किया गया। क्षेत्र के जगदीशपुर, तिलठी, भटेवरा, पखवैया, अनुरुद्धपूर पूरब पट्टी, गोबरहा, मल्लेपुर, चेकसारी में मतदान 50 प्रतिशत के नीचे रहता है। इसको देखते हुए बीडीओ कोन शिवनरायन सिंह के नेतृत्व में विशाल मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई। रैली ब्लाक मुख्यालय से चलकर मलाधरपुर, मझिगवां, तिलठी, पखवैया, मिश्रधाप, चेतगंज, अनुरुद्धपुर पश्चिम पट्टी व पूरब पट्टी होते हुए ब्लाक पहुंचकर समाप्त हुआ। इस मौके पर अशोक कुमार श्रीवास्तव सहायक बीडीओ कृषि, हरिशंकर पांडेय सहायक विकास अधिकारी पंचायत, रंजीत कुमार सहायक विकास अधिकारी समाज कल्याण, बृजेश सिंह, मंगल सिंह आदि रहे।

## आरपीएफ ने किशोरी को रेलवे चाइल्ड लाइन को सौंपा

**मीरजापुर ।** स्थानीय रेलवे स्टेशन पर रेलवे सुरक्षा बल के सहायक उप निरीक्षक अखिलेश कुमार तिवारी ने किशोरी को रेलवे चाइल्ड लाइन को सौंपा। गंगेश्वर प्रसाद, शीतला प्रसाद, चंद्रकला, भगवानदास आदि किसानों ने आरोप लगाया कि सोमवार को उनके खाते में 14 सौ रुपये प्रति क्विंटल दर से भुगतान भेजा गया है, जबकि केंद्र प्रभारी द्वारा सरजू-52 धान में चावल का फीसद कम पड़ने के नाम पर पांच किलो प्रति क्विंटल की कटौती भी की गई थी। इतना ही नहीं 20 रुपये क्विंटल की दर से इसकी तौलवाई भी दी गई थी। इसके बावजूद जहां 1920 की दर से भुगतान होना था वहां मात्र 1400 रुपये की दर से खाते में रुपये भेजे गए हैं। इसके चलते गोदाम में ताला जड़ा गया। वह हमराहियों के साथ गश्त कर रहे थे। इसी दौरान प्लेटफार्म दो पर स्थित चाय स्टाल के पास बने बेंच पर एक 17 वर्षीय किशोरी बैठी हुई मिली। पूछताछ पर उसने अपने को अदलहाट थाना क्षेत्र के एक गांव का निवासी बताया। आरपीएफ ने स्वजन के मोबाइल नंबर पर सूचना देने के साथ ही किशोरी की देखभाल के लिए रेलवे चाइल्ड लाइन हेल्प डेस्क की महिला सदस्य अंकिता मिश्रा, नीलू तिवारी, नितिन भार्गव एवं मोहम्मद अर्सलान को सुपुर्द कर दिया।

# आखिरकार टीम इंडिया को न्यूजीलैंड दौरे पर मिली जीत, मंधाना हरमनप्रीत व मिताली का अर्धशतक

**नई दिल्ली।** स्मृति मंधाना, मिताली राज और हरमनप्रीत कौर ने बल्ले से शानदार प्रदर्शन किया और इंडियन वुमेंस क्रिकेट टीम ने गुरुवार को क्वींसटाउन के जान डेविस ओवल में पांचवें और अंतिम एकदिवसीय मैच में न्यूजीलैंड को छह विकेट से हराया। इस जीत के साथ भारत ने सीरीज की अपनी पहली जीत दर्ज की और क्लीन स्वीप से बच गई। कीवी टीम ने वनडे सीरीज 4-1 से अपने नाम कर ली है। इससे पहले एक मात्र टी-20 मैच में भी टीम इंडिया को हार का सामना करना पड़ा था। खराब फार्म से जूझ रहीं हरमनप्रीत कौर ने 63 रनों की पारी खेली। टीम को जीत के लिए 27 रनों की जरूरत थी तब उनका विकेट गिरा। हालांकि, कप्तान मिताली राज नाबाद 57 और ऋचा घोष नाबाद 7 ने इसके बाद टीम को झटका नहीं लगने दिया और छह विकेट से जीत दिला दी। इससे पहले अमेलिया केर ने 66 रनों की पारी खेली और न्यूजीलैंड ने निर्धारित पचास ओवरों में 251/9 का स्कोर बनाया। भारत की ओर से राजेश्वरी गायकवाड़, दीप्ति शर्मा और सनेह राणा ने दो-दो विकेट लिए। सोफी डिवाइन (34), लारेन डाउन (30) और हेले जेनसेन (30) ने भी उपयोगी पारियां खेली, जिससे मेजबान टीम को 250 से अधिक रन बनाने में मदद मिली।

# भारत-श्रीलंका टी20 सीरीज की शुरुआत, लाइव मैच का मजा उठाने के लिए आजमाएं ये तरीका

**नई दिल्ली।** भारतीय टीम से श्रीलंका के खिलाफ टी20 सीरीज की शुरुआत करने जा रही है। तीन मैचों की सीरीज में टीम इंडिया नंबर वन की रैंकिंग के साथ शुरुआत करने जा रही है। हासिला सीरीज में वेस्टइंडीज का क्लीन स्वीप करने के बाद टीम ने नंबर एक की कुर्सी हासिल की है। भारत को सीरीज की शुरुआत से पहले ही सूर्यकुमार यादव और दीपक चाहर के रूप में दो पड़े झटके लगे हैं। भारत और श्रीलंका के बीच सीरीज का पहला टी20 मुकाबला 24 फरवरी गुरुवार को खेला जाएगा। कहां खेला जाएगा भारत और श्रीलंका के बीच पहला टी20 मैच भारत और श्रीलंका के बीच पहला टी20 लखनऊ के भारत रतन श्री अटल बिहारी वाजपेयी इकाना क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। कितने बजे खेला जाएगा भारत और श्रीलंका के बीच पहला टी20 मैच भारत और श्रीलंका के बीच पहले टी20 भारतीय समय के मुताबिक शाम 7.00 बजे शुरू होगा।कितने बजे होगा भारत और श्रीलंका के बीच पहले टी20 मैच में टास भारत और श्रीलंका के बीच मुकाबले में टास मैच से आधे घंटे 6.30 बजे किया जाएगा। कहां देखा जा सकेगा भारत और श्रीलंका के बीच पहले टी20 का सीधा प्रसारण भारत और वेस्टइंडीज के बीच होने वाले पहले टी20 का सीधा प्रसारण स्टार नेटवर्क के स्पोर्ट्स चैनल पर देखा जा सकेगा। स्टार स्पोर्ट्स स्टार स्पोर्ट्स एचडी, स्टार स्पोर्ट्स 1 और स्टार स्पोर्ट्स 1 एचडी पर देखा जा सकेगा। मैच की लाइव स्ट्रीमिंग हाट स्टार पर देख सकते हैं। इसके अलावा मैच से जुड़ी पल पल की खबर के लिए दैनिक जागरण वेबसाइट पर जा सकते हैं।

# जब सचिन तेंदुलकर ने रचा था इतिहास, बने थे वनडे में दोहरा शतक लगाने वाले पहले बल्लेबाज

**नई दिल्ली।** 24 फरवरी का दिन क्रिकेट प्रेमियों के लिए कभी न भूलने वाला दिन बन गया तो इसके पीछे की वजह थे महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर जिन्होंने पहली बार वनडे क्रिकेट में 200 रन की ऐतिहासिक पारी खेली। इस बात को भले ही 12 साल का लंबा वक्त बीत गया हो लेकिन क्रिकेट प्रेमियों के लिए आज भी वो दिन रोमांच पैदा करती है साउथ अफ्रीका के खिलाफ ग्वालियर के कैप्टन रूप सिंह स्टेडियम में खेला गया यह मैच और मैचों की तरह एक आम मैच होता लेकिन सचिन कुछ और ही सोच कर आए थे। सचिन ने इस मैच में केवल 147 गेंदों पर नाबाद 200 रन की पारी खेली। इस पारी में सचिन ने 25 चौकों के साथ 3 छक्के भी लगाए। सचिन की इस ऐतिहासिक पारी के दम पर भारत ने न केवल 3 विकेट पर 401 रन बनाए बल्कि साउथ अफ्रीका की टीम को 153 रनों के बडे अंतर से हराया। सचिन की ये पारी इसलिए भी अहम थी क्योंकि पहली बार वनडे में यह कारनामा किया गया था। सचिन ने बाकी बल्लेबाजों के लिए एक राह बना दी थी कि वनडे में 200 का आंकड़ा भी छूआ जा सकता है। भारत की तरफ से वीरेंद्र सहवाग ऐसा करने वाले दूसरे बल्लेबाज बने जबकि इस रिकार्ड को और बेहतर करते हुए हिटमैन रोहित शर्मा ने तीन बार दोहरा शतक लगाया। अब तक वनडे में कुल छह बल्लेबाजों ने दोहरा शतक बनाया है। इसमें से तीन भारतीय हैं और सबसे ज्यादा दोहरा शतक भी भारतीय के नाम दर्ज है। भारत के सचिन तेंदुलकर (2010), वीरेंद्र सहवाग (2011), रोहित शर्मा (2013, 2014, 2017), वेस्टइंडीज के क्रिस गेल (2015), न्यूजीलैंड के मार्टिन गुप्टिल (2015), पाकिस्तान के फखर जमां (2018) ने यह कमाल किया है। वर्तमान में वनडे में सर्वाधिक व्यक्तिगत रनों का रिकार्ड रोहित शर्मा के नाम है जिन्होंने 2014 में श्रीलंका के खिलाफ कोलकाता में 173 में 264 रनों की पारी खेली थी। इस सूची में दूसरे नंबर पर न्यूजीलैंड के बल्लेबाज मार्टिन गुप्टिल हैं जिनके नाम 237 की पारी खेलने का रिकार्ड है जो उन्होंने 2015 में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेली थी।

# शिखर धवन नहीं यह खिलाड़ी होगा पंजाब किंग्स का कप्तान, जल्द होगी घोषणा

**नई दिल्ली।** इंडियन प्रीमियर लीग 2022 की शुरुआत मार्च के अंत में होने की संभावना है, लेकिन दो फ्रेंचाइजियों ने अभी तक अपने कप्तान की घोषणा नहीं की है। ये दोनों टीमें पंजाब किंग्स और रायल चैलेंजर्स बैंगलोर हैं। पंजाब की बात करें तो कप्तानी की दौड़ में शिखर धवन और मयंक अग्रवाल आग चल रहे हैं। इस बीच खबर है कि मयंक टीम का नेतृत्व करेंगे। दाएं हाथ के बल्लेबाज भारतीय टेस्ट टीम का हिस्सा हैं और इस महीने की शुरुआत में मेगा आक्शन से पहले युवा तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह के साथ फ्रेंचाइजी द्वारा रिटने किए गए दो खिलाड़ियों में से एक थे। जल्द ही इसकी औपचारिक घोषणा होने की उम्मीद है। समाचार एजेंसी पीटीआइ से आइपीएल के एक सूत्र ने कहा, 'पूरी संभावना है कि मयंक टीम की कप्तानी करेंगे। घोषणा इस सप्ताह के अंत में होने की उम्मीद है।' पंजाब सबसे अधिक रकम के साथ नीलामी में गया था। उसने शिखर धवन, जानी बेयरस्टो, लियाम लिविंगस्टोन, कैगिसो रबाडा और बाएं हाथ के स्पिनर हरप्रीत बराडर और तमिलनाडु के विस्फोटक बल्लेबाज शाहरुख खान को खरीदकर इसका अच्छा इस्तेमाल किया। कप्तान के रूप में धवन का नाम भी चर्चा में था, लेकिन प्रबंधन नीलामी से पहले ही अग्रवाल को कप्तान बनाना चाहता था। सूत्र ने कहा, 'धवन नीलामी में हमेशा रडार पर थे। वह एक चैंपियन खिलाड़ी है, लेकिन ऐसा लगता है कि जब से केएल राहुल ने टीम छोड़ी तब से पंजाब मयंक को कप्तान के रूप में देखना चाहता था।' अग्रवाल और राहुल ने पिछले कुछ वर्षों में आइपीएल में सबसे शानदार ओपनिंग जोड़ी में से एक थी। राहुल इस सीजन में लखनऊ सुपरजायंट्स की कमान संभालेंगे। अग्रवाल ने पिछले साल कुछ समय के लिए टीम की कप्तानी की थी, जब राहुल चोटिल हो गए थे। ने पिछले दो सत्रों में 400 से अधिक रन बनाए। उन्होंने 2011 में आइपीएल में पदार्पण किया था और अब तक 100 मैच खेल चुके हैं।

# IPL से पहले चेन्नई सुपर किंग्स की बढ़ी मुसीबत, 14 करोड़ में खरीदा ये खिलाड़ी हो सकता है टूर्नामेंट से बाहर

**नई दिल्ली।** भारतीय क्रिकेट टीम के श्रीलंका के खिलाफ होने वाली सीरीज के बाद इंडियन प्रीमियर लीग की शुरुआत होनी है। टूर्नामेंट से ठीक पहले चेनन्ई सुपर किंग्स के लिए एक बड़ी मुश्किल खड़ी हो गई है। टीम इंडिया के तेज गेंदबाज दीपक चाहर जिनको टीम ने इस बार के मेगा आक्शन में 14 करोड़ की उंची बोली लगाकर खरीदा था उनके खेलने पर संशय पैदा गया है। मंगलवार को भारतीय टीम के तेज गेंदबाज चाहर के चोटिल होने की खबर आई थी। बुधवार को बीसीसीआइ ने इस बात की जानकारी दी और बताया कि वह श्रीलंका के खिलाफ खेली जाने वाली सीरीज से बाहर हो गए हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ खेली गई टी20 सीरीज के दूसरे मुकाबले के दौरान उनको चोट लगी थी। इसके बाद वह तीसरे मुकाबले में नहीं खेले थे। इसके बाद से ही एक टीम उनकी फिटनेस पर नजर बनाए हुई थी। अब बताया गया है कि वह बैंगलोर के नेशनल क्रिकेट अकादमी में रिहैब से होकर गुजरेंगे। चाहर की हैमस्ट्रिंग इंजरी को गंभीर बताया जा रहा है और वह इस साल के आइपीएल से भी बाहर रह सकते हैं। सूत्र ने एक अंग्रेजी अखबार से बात करते हुए बताया, उनकी चोट ज्यादा गंभीर नजर आ रही है। हो सकता है कि वह इस आइपीएल के सीजन से भी (चेनन्ई सुपर किंग्स की टीम ने 14 करोड़ में मेगा आक्शन में खरीदा है) बाहर हो जाएं। एक अंग्रेजी खेल वेबसाइट क्रिकबज की रिपोर्ट के अनुसार 15वें इस सीजन में खेलने वाली कुल 10 टीमों के बीच गुरुप स्टेज में 70 मैच खेले जाएंगे। इन सभी टीमों के बीच होने वाले 70 में से 55 ग्रुप मुकाबले मुंबई के तीन स्टेडियम में आयोजित किए जाएंगे।

# अपना दूसरा मुकाबला खेलने उतरेंगे रहाणे और पुजारा, बड़ी पारी पर नजर

**अहमदाबाद।** भारतीय टेस्ट टीम से बाहर किए गए अजिंक्य रहाणे और चेतेश्वर पुजारा के प्रदर्शन पर गुरुवार से शुरू होने वाले रणजी ट्राफी के गुरुप चरण के दूसरे दौर के मैचों के दौरान फिर से सभी की निगाहें टिकी रहेंगी। मुंबई की टीम एलीट गुरुप डी में गोवा का सामना करेगी, जिसमें रहाणे बड़ी पारी खेलने की कोशिश करेंगे। रहाणे ने सौराष्ट्र के खिलाफ पहले मैच में 129 रन बनाए थे, लेकिन उन्हें श्रीलंका के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज के लिए टीम में नहीं चुना गया। यह मैच ड्रा छूटा था जिसमें पुजारा पहली पारी में खाता खोलने में नाकाम रहे थे, लेकिन दूसरी पारी में उन्होंने 91 रन की बड़ी पारी खेली थी। पुजारा फिर से राष्ट्रीय चयनकर्ताओं का ध्यान खींचने के लिए ओडिशा के खिलाफ होने वाले मैच में बड़ी पारी खेलने का प्रयास करेंगे। उधर गुवाहाटी में दिल्ली और झारखंड के बीच गुरुप-एच के मैच में भारतीय टीम से बाहर किए गए एक अन्य खिलाड़ी तेज गेंदबाज इशांत शर्मा के अलावा युवा सलामी बल्लेबाज यश ढुल पर सभी का ध्यान रहेगा। इशांत पहले रणजी ट्राफी में नहीं खेलना चाहते थे, लेकिन आइपीएल की नीलामी में नहीं चुने जाने के बाद उन्होंने अपना मन बदल दिया था। वह पहले मैच में नहीं खेल पाए थे। भारत की अंडर-19 टीम के कप्तान ढुल ने तमिलनाडु के खिलाफ अपने पदार्पण मैच में ही दोनों पारियों में शतक जड़ने का कारनामा किया था और वह अपनी इस शानदार फार्म को बरकरार रखकर दिल्ली को पूरे अंक दिलवाने में अहम योगदान देना चाहेंगे।प्लेट गुरुप में सभी निगाहें की बिहार के युवा बल्लेबाज शकीबुल गनी टिकी रहेंगी, जिन्होंने मिजोरम के खिलाफ प्रथम श्रेणी क्रिकेट में अपने पदार्पण मैच में तिहरा शतक (341 रन) बनाकर नया इतिहास रचा था। बिहार का सामना सिक्किम से होगा।

# युवराज सिंह के इमोशनल लेटर का विराट कोहली ने दिया जवाब

**नई दिल्ली।** भारत के पूर्व आलराउंडर युवराज सिंह ने मंगलवार को पूर्व कप्तान विराट कोहली को एक भावुक पत्र लिखा था। इसमें उन्होंने कहा कि मैंने उन्हें एक क्रिकेटर और एक व्यक्ति के रूप में विकसित होते देखा है। 304 वनडे मैचों के अनुभवी युवराज ने कोहली के साथ मैदान पर और बाहर की कई बातचीत के बारे में बताया। दोनों 2014 में भारतीय टीम और आइपीएल फ्रेंचाइजी रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरबीसी) के लिए एक साथ खेले हैं। अब कोहली ने उनके पत्र का जवाब दिया है। 'युवी पा इस प्यार के लिए धन्यवाद। कैंसर से जंग जीतना क्रिकेट ही नहीं जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों के लिए एक प्रेरणा है। आप हमेशा उदार रहे हैं और अपने आस-पास के लोगों की देखभाल करते रहे हैं। मैं आपके लिए खुशियों की कामना करता हूं, भगवान भला करे। युवराज ने बताया कि कैंसे कोहली ने अपनी कड़ी मेहनत से देश के कई खिलाड़ियों को प्रेरित किया।युवराज ने ट्वीट किया, 'दिल्ली के छोटे लड़के (विराट कोहली) को मैं अपने विशेष जूते समर्पित करना चाहता हूं। वह कप्तान के रूप में अपने करियर का जशन मना रहे हैं, जिन्होंने दुनियाभर में लाखों प्रशंसकों को मुस्कान दी है।

# फ्लाप रहे इस खिलाड़ी के टैलेंट के कदरदान रोहित शर्मा

**नई दिल्ली।** भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने श्रीलंका के खिलाफ होने वाली टी20 सीरीज से पहले मीडिया के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने टीम में शामिल किए गए विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन की जमकर तारीफ की। कहा उनके जैसे शाट्स सभी नहीं लगा सकते हैं। आस्ट्रेलिया में होने वाले टी20 विश्व कप में उनकी जरूरत होने वाली है। संजू सैमसन की क्या बात करूं, उस खिलाड़ी के पास काफी टैलेंट है। जब कभी भी हमने उनके देखा है आइपीएल हो या फिर किसी और क्रिकेट में उन्होंने जो भी पारी खेली है उसके देखकर लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। उनके पास वो हुनर है जिससे सफलता मिलती है लेकिन यही वो अहम बात है इस खेल की काफी सारे लोग है जिनके पास हुनर होता है, टैलेंट होता है, सबसे जरुरी बात होती है कि आप इसका इस्तेमाल कैसे करते हैं। आगे रोहित ने कहा, देखिए अब यह सबकुछ संजू पर निर्भर करता है कि वह अपने टैलेंट और हुनर का सही इस्तेमाल कैसे करते हैं। क्योंकि एक टीम के तौर पर टीम मैनेजमेंट के तौर पर हम उनके अंदर काफी ज्यादा संभावनाएं देखते हैं। उनके अंदर काफी ज्यादा टैलेंट है उससे सहीं ज्यादा हम उनके अंदर मैच विनर की काबिलियत देखते हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि उनको हम वो आत्मविश्वास जगा पाएं, जहां उनको टीम की तरफ से खेलने का मौका मिले। मैं समझता हूं कि वह इस बात को समझें और वो यकीनन हमारी नजर में हैं उनके उपर चर्चा होती है इसी वजह से वह टीम का हिस्सा भी हैं। उनका बैकफुट का खेल कमाल है, कुछ शाट उनके आपने आइपीएल के दौरान देखे होंगे। पिक अप पुल, कट शाट और खड़े होकर गेंदबाज के सिर के उपर से शाट लगाना। इस तरह से शाट को लगाना कोई आसान काम नहीं होता। विश्व कप में खेलने पर उनका कहना था, मैं मानता हूं कि जब आप आस्ट्रेलिया में जाएंगे तो इस तरह शाट्स की जरूरत पड़ेगी। सैमसन वो खिलाड़ी हैं जिनके पास इस तरह से सारे ही शाट हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि उनके लिए सबकुछ अच्छा हो और वो अपनी प्रतिभा का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा पाएं। मेरी तरफ से उनको ढेर सारी शुभकामनाएं हैं।

# राशिफल

**मेष-:** आज आप बौद्धिक कार्यों से धन अर्जित करेंगे. भौतिक संसाधनों की ओर अधिक झुकाव के कारण इनमें वृद्धि हो सकती है। यात्रा की स्थिति सुखद और लाभकारी रहेगी।

**वृष-:** आज आपका किसी से तीखा झगड़ा हो सकता है. इस झगड़े से बचने की पूरी कोशिश करें, आपको बाद में पछताना पड़ सकता है। इस दौरान किया गया कोई भी झगड़ा भयानक रूप ले सकता है।

**मिथुन-:** आज आपका दिन पहले से बेहतर रहेगा. आप अपने भविष्य के बारे में थोड़ा सोच सकते हैं। संबंध बेहतर रहेंगे। कार्यस्थल पर आपको सहयोग मिल सकता है।

**कर्क-:** आज ही भविष्य के लिए अपनी आर्थिक योजना बनाएं और अपनी योजना और लक्ष्य तय करने का प्रयास करें. कार्यस्थल पर विवाद खत्म होने से सुख शांति में वृद्धि होगी।

**सिंह-:** आज आपके परिवार में खुशियों की वृद्धि होगी. संतान की शिक्षा में उन्नति संभव है। माता-पिता का स्वास्थ्य आज बहुत अच्छा रहेगा। उनसे भी आपको पूरा सहयोग मिलने की उम्मीद है

**कन्या-:** आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आप अपनी सूझबूझ से सारे काम संभाल लेंगे। नौकरीपेशा लोगों को साथ काम करने वालों से मदद मिलेगी।

**तुला-:** आज आपको आर्थिक और पारिवारिक क्षेत्र में भी लाभ होने की संभावना है। आज मनपसंद खाना खाकर आपको आनंद मिलेगा।नौकरी में अधिक मेहनत करें।

**वृश्चिक-:** आज आपको व्यापार में सफलता मिलेगी. जो आपको गर्व और जोश से भर देगा। इस तरक्की को हासिल करने से आपको एहसास होगा कि आपने सही समय पर सही कदम उठाए है।

**धनु-:** आज अधिकारी आपकी प्रशंसा करेंगे. छात्रों को किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में अच्छे अंक मिलेंगे। वैवाहिक जीवन में आप अच्छा महसूस करेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

**मकर-:** आज आपको शुभ समाचार मिलेगा. सुबह व्यायाम करें, अतिरिक्त लाभ मिलेगा। आपका पार्टनर काफी नाराज़ रहेगा फिर भी अपने जीवन की सभी समस्याओं को नज़रअंदाज करते हुए।

**कुंभ-:** आज आपको कारोबार में सफलता मिलेगी. जो आपको गर्व और जोश से भर देगा। इस तरक्की को हासिल करने से आपको एहसास होगा कि आपने सही समय पर सही कदम उठाए

**मीन-:** आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। परिवार वालों की सलाह आपके लिए अहम रहेगी। साथ ही आप उनकी हर संभव मदद भी करेंगे। आपके भौतिक सुखों में वृद्धि होगी।

## सम्पादकीय

# यदि भारत का मुसलमान अपनी लड़कियों का भविष्य संवारना चाहता है तो उसे हिजाब, बुर्का आदि छोड़ना होगा

इन दिनों मुस्लिम महिलाओं की पर्दा प्रथा पर खूब चर्चा हो रही है। इसका कारण कर्नाटक के उडुपी में एक कालेज से उठा वह विवाद है, जिसमें मुस्लिम छात्राओं को कक्षा के अंदर हिजाब पहने की इजाजत नहीं दी गई। इसके विरोध में छह लड़कियां धरने पर बैठ गईं। धीरे-धीरे उनका समर्थन करने वाले सामने आ गए। माना जा रहा है कि हिजाब के लिए लड़कियों को उकसाने का काम कैंपस फ्रंट आफ इंडिया के इशारे पर हुआ, जो अतिवादी संगठन पापुलर फ्रंट आफ इंडिया की छात्र शाखा है। मुस्लिम समाज और खासकर इस समाज की महिलाओं को इससे परिचित होना चाहिए कि 1979 में इस्लामी जगत में तीन बड़ी घटनाएं हुईं, जिन्होंने रूढ़िवादी तौर-तरीकों को पनपाया। पहली, रूस ने अफगानिस्तान में अपनी सेनाएं भेज दीं, जिनका सामना करने के लिए मुजाहिदीन आ गए। दूसरी घटना मक्का शरीफ में आतंकियों के हमले की थी। इन आतंकियों ने सैकड़ों लोगों को बंधक बनाने के बाद एलान किया कि सऊदी शासक इस्लाम के रास्ते से भटक गए हैं। इन आतंकियों से निपटने के लिए सऊदी शासकों ने अन्य देशों से मदद लेकर सैन्य कार्रवाई की। 1979 की तीसरी अहम घटना थी पेरिस में रह रहे आयतुल्ला खुमैनी की ईरान में वापसी और ईरान का वहाबी और सलाफी इस्लाम को अपनाना। इन तीनों घटनाओं ने एशिया के मुसलमानों को सदियों पीछे पहुंचा दिया। इन घटनाओं का असर कश्मीर घाटी में भी हुआ। पाकिस्तान के सैन्य तानाशाह जनरल जिया ने आइएसआइ की शह से कश्मीर में आतंकवाद भड़काना शुरू किया। इसके नतीजे में 1989-90 में घाटी से कश्मीरी पंडितों को पलायन करना पड़ा। इस दौरान घाटी के सेक्युलर मुसलमानों को भी निशाना बनाया गया। मैं श्रीनगर के लाल चौक इलाके से हूं और मुझे याद है कि कश्मीर में आतंक के उभार के साथ आतंकियों ने किस तरह लड़कियों और महिलाओं पर हिजाब, बुर्का, नकाब आदि थोपना शुरू कर दिया था। उन दिनों मस्जिदों और बिजली के खंभों पर पोस्टर चिपकाए जाते थे कि बुर्का न पहनने वाली महिलाओं पर एसिड फेंक दिया जाएगा। ब्यूटी पार्लर चलाने वाली महिलाओं और सिनेमाघर मालिकों को भी निशाना बनाया जाने लगा। यह सब सलाफी और वहाबी इस्लाम के कारण हो रहा था, जो सऊदी अरब और अन्य इस्लामी देशों से पेट्रो डालर के जरिये फैलाया जा रहा था। सलाफी मुल्ला-मौलवी मुसलमानों को यह समझाते थे कि दुनिया में जहां भी काफिर रहते हैं, वह सब जगह इस्लाम के दायरे में आनी चाहिए। इसके लिए वे हदीसों और अन्य इस्लामी साहित्य की बातों को तोड़-मरोड़ कर पेश करते। सारा इस्लामिक साहित्य अरबी भाषा में है और आम मुसलमान को इतनी फुरसत नहीं कि वह उसे सही तरह पढ़ और समझ सके। वे आलिम पर भरोसा करते हैं और यह मानते हैं कि वे ही उसे सही राह दिखाते हैं। जब पेट्रो डालर के जरिये वहाबी और सलाफी इस्लाम अन्य देशों में फैलाया जा रहा था, तब अपने देश की भी कुछ इस्लामी संस्थाओं ने उसे अपने स्तर पर फैलाना शुरू कर दिया। यह समझने की जरूरत है कि कुरान की आयतों में खिमार और जिलबाब का जिक्र तो है, लेकिन वह महिलाओं को पर्दे में रखने के लिए नहीं है। फिर भी शुक्रवार को होने वाली तकरीरों में मुस्लिम मर्दो को ऐसा ही बताया जाने लगा। जब अपने देश में ऐसा हो रहा था, तब ट्यूनीशिया, मोरक्को, मिस्र, तुर्की आदि देशों में मुस्लिम महिला स्कालर कुरान की व्याख्या करके यह स्पष्ट कर रही थीं कि मर्द आलिमों ने अपने मंसूबों को पूरा करने के लिए हदीसों को अपने ढंग से लिखा और महिलाओं पर पर्दा थोपा। जो मुल्ला मौलवीं न कि मुहम्मद साहब के समय में। आज जब दुनिया आगे बढ़ गई है, तब रोजमर्रा की जिंदगी जीने के तौर तरीके कुरान की तफ्सीर यानी व्याख्या, हदीस, सिरा आदि में खोजना खुद को 14 सौ साल पीछे ले जाना है। यह ध्यान रहे कि कुरान की तफ्सीरें, हदीसें वगैरह मुहम्मद साहब के जाने के करीब दो सौ साल बाद लिखी गईं। आखिर भारत जैसा सेक्युलर देश अपने सभी समुदायों के लिए समान नागरिक संहिता क्यों नहीं ला सकता देश ने मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड बनाकर जो गलती की, उससे सबक लेना चाहिए।

# क्रिप्टो करेंसी की राह पर चलना जरा संभल कर, आभासी मुद्रा के हैकिंग की बढ़ी आशंका

आज लगभग पूरे विश्व में क्रिप्टो करेंसी चर्चा में है। इसमें निवेश करने वालों की संख्या और निवेशित धन को देखते हुए अनेक देशों की सरकारें इसे वैध बनाने की दिशा में अग्रसर दिख रही हैं। हालांकि दुनिया में अल सल्वाडोर जैसे देशों के उदाहरण बहुत कम हैं, जहां बिटकाइन जैसी आभासी (क्रिप्टो या वर्चुअल) करेंसी को कानूनी मान्यता मिली है। इसके बावजूद दुनिया भर के युवाओं में क्रिप्टो करेंसी में निवेश का क्रेज है। दरअसल हाल के वर्षों में जिस तरह से रातों-रात इनकी कीमतों में उछाल आया है, खास तौर से युवाओं ने भीषण गिरावट के खतरे के बावजूद इनमें निवेश का जोखिम लिया है। उससे यह सवाल पैदा हुआ है कि दुनिया में इस वक्त जो लाखों लोग बिटकाइन डिजिटल मुद्राओं के कारोबार में लगे हुए हैं, कहीं वे किसी जुए जैसी लत के शिकार तो नहीं हो गए हैं। खतरा यह है कि बेरोजगारी की मार और शेयर से लेकर रियलिटी सेक्टर में गिरावट से जूझती दुनिया में क्रिप्टो की दीवानगी एक बड़ा मर्ज न बन जाए। कभी अर्श पर, तो कभी फर्श पर : आज की तारीख में ब्लाकचेन तकनीक पर आधारित बिटकाइन जैसी क्रिप्टो मुद्राओं की संख्या हजारों में है। हालिया अतीत देखें तो इनमें से कई क्रिप्टो मुद्राओं ने अपने निवेशकों को हजारों गुना रिटर्न भी दिया है। कुछ दावों के मुताबिक कई नई क्रिप्टो करेंसी ऐसी भी आई हैं जिन्होंने अपने निवेशकों को रातोंरात करोड़पति- अरबपति भी बना दिया है। इनकी कहानियां खास तौर पर इंटरनेट मीडिया पर छाई रहती हैं। ऐसे विस्मयकारी रिटर्न ने कोरोना महामारी के दौर में लोगों का रुझान इनकी तरफ कायम कर दिया। डिजिटल मुद्रा ट्रेडिंग प्लेटफार्म क्रिप्टो डाट काम के मुताबिक फिलहाल दुनिया भर में 22.1 करोड़ लोग ऐसी मुद्राओं में ट्रेडिंग (कारोबार) कर रहे हैं। चीन स्थित क्रिप्टो विश्लेषक फर्म -चाइना एनालिसिस- के मुताबिक जुलाई, 2020 से जून, 2021 के बीच भारत में क्रिप्टो का कारोबार 641 प्रतिशत बढ़ गया। यह बढ़त एशियाई देशों में सबसे ज्यादा मानी जा रही है। आकलन यह है कि मध्य और दक्षिण एशियाई देशों में समान अवधि में 572.5 अरब डालर क्रिप्टो में झोंके गए। इसमें यदि एक करोड़ डालर से ऊपर के कारोबार की बात करें, तो भारत में ऐसे सौदों का प्रतिशत इस क्षेत्र में 42 प्रतिशत रहा, जबकि पाकिस्तान में 28 प्रतिशत और वियतनाम में 29 फीसद रहा। इससे दो तथ्य उभरकर सामने आते हैं। एक तो यह कि भारत में क्रिप्टो को लेकर काफी संजीदगी दिख रही है। दूसरा तथ्य यह है कि कई देशों के मुकाबले भारत में क्रिप्टो के कारोबार में उतरने वाली आबादी ज्यादा युवा और तकनीक की जानकार (टेक-सेवी) है। इसी सिलसिले में जो तीसरी अहम बात सामने आती है, वह यह है कि जैसे-जैसे युवाओं में क्रिप्टो की चाह बढ़ी है, उसी तरह इन मुद्राओं का तेज पतन भी हुआ है। मिसाल के तौर नवंबर, 2021 को 60 हजार डालर वाले एक बिटकाइन की कीमत छह महीने से कम समय में आधी से भी नीचे चली गई थी। इस बीच किसी नई और अनजान क्रिप्टो करेंसी में तेज उछाल की खबरें आती हैं, तो युवा अपनी बची पूंजी भी इनमें झोंकने से खुद को रोक नहीं पाते हैं। लेकिन




जिस तेजी से नई क्रिप्टो करेंसी उभरती है, उससे भी ज्यादा तेजी से उसके पतन की खबरें आती हैं। निश्चय ही इस पूरे ट्रेंड के खतरनाक नतीजे निकलने का अंदेशा है। ठीक उसी तरह, जैसे पिछले कुछ वर्षों से देश में स्टार्टअप के नाम पर हजारों छोटी-मोटी कंपनियां बनाई गईं और उनमें से ज्यादातर अनुभवहीनता, कारोबार की समझ नहीं होने और बड़ी कंपनियों की आक्रामक नीतियों के लागू होने के कारण ठप हो गईं। क्रिप्टो करेंसी के छलिया भविष्य का तानाबाना भी युवाओं को बुरी तरह ठग रहा है। भावनात्मक संकट : क्रिप्टो करेंसी की कीमतों में उतार-चढ़ाव की अटकलों में उलझे और अपने निवेश के चुटकियों में कई गुना हो जाने का ख्वाब इन युवाओं को भावनात्मक संकट में डाल रहा है। चूंकि ये डिजिटल मुद्राएं अपने स्वभाव में अस्थिर हैं, ऐसे में इनमें पैसा झोंकने वाले युवा हर समय चिंताग्रस्त रहते हैं। ऐसा इसलिए है कि इन मुद्राओं में मिलने वाला लाभ कई बार चंद मिनटों में ही स्वाहा हो जाता है। हालात ये हैं कि डिजिटल या क्रिप्टो करेंसी में पैसा लगाने वाले हजारों-लाखों युवाओं की जिंदगी किसी रोलर-कोस्टर की सवारी जैसी हो गई है, जहां वे कभी आसमान पर होते हैं, तो कभी एकदम फर्श पर आ जाते हैं। इसका असर युवाओं की मानसिक स्थिति पर भी पड़ रहा है। यही वजह है कि स्काटलैंड के एक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र कैसल क्रेग ने दुनिया में क्रिप्टो करेंसी की खरीद-फरोख्त की बढ़ती लत को नए जमाने की महामारी घोषित कर दिया है। क्या पाबंदी ही है सही इलाज : सवाल यह है कि इस महामारी से मुकाबला कैसे किया जाए। असल में, क्रिप्टो करेंसी और स्टार्टअप जैसी चीजों में बिना ज्यादा जानकारी हासिल किए और आगा-पीछा सोचे बगैर कूद पडा खतरों को न्यौत रहा है। दूसरों की देखादेखी अधकचरे ज्ञान के बल पर खुद की और दूसरों से हासिल की गई पूंजी से खोले गए ज्यादातर स्टार्टअप औंधे मुंह गिर रहे हैं। ठीक वही हाल क्रिप्टो में पांव धरते ही धड़ाम हो रहे युवाओं का हो रहा है। इधर चूंकि भारत सरकार को क्रिप्टो करेंसी के खतरों का अंदाजा है, इसलिए वह इसे किसी भी किस्म की मान्यता देने से साफ बच रही है। हमारे देश में चर्चा यहां तक होती रही है कि कहीं भारत सरकार क्रिप्टो के कारोबार को ही प्रतिबंधित न कर दे और सभी वर्चुअल मुद्राओं को गैरकानूनी न घोषित कर दे। हालांकि सरकार ने अभी तक ऐसी पाबंदी लगाने से खुद को दूर रखा है, लेकिन इसकी खरीद-फरोख्त पर लाभ की स्थिति में 30 प्रतिशत के टैक्स ने साबित कर दिया है कि वह निवेशकों और युवाओं को इससे दूर रखना चाहती है। किसने बनाया क्रिप्टो को विलेन। आज भारत अकेला ऐसा देश नहीं है जहां क्रिप्टो करेंसी की उठापटक और प्रचलन चिंता का कारण बन गया है। कुछ ही समय पहले इंडोनेशिया की नेशनल उलेमा काउंसिल (एमयूआइ) ने क्रिप्टो करेंसी को प्रतिबंधित घोषित किया है। इस काउंसिल ने कहा कि चूंकि क्रिप्टो करेंसी के चरित्र में अनिश्चितता, नुकसान और जुएबाजी जैसे तत्व शामिल हैं, ऐसे में ये हराम है। इससे पहले पड़ोसी देश चीन ने भी बिटकाइन और इस जैसी अन्य आभासी मुद्राओं के सृजन और लेनदेन पर रोक लगाई है। सितंबर, 2021 में चीन के केंद्रीय बैंक पीपल्स बैंक आफ चाइना ने क्रिप्टो करेंसी से जुड़ी सभी ट्रांजेक्शन को अवैध घोषित कर दिया था। पीपल्स बैंक आफ चाइना ने वर्चुअल करेंसी से जुड़ी कारोबारी गतिविधियों को अवैध वित्तीय गतिविधि के रूप में चिह्नित करते हुए कहा था कि ऐसी आभासी मुद्राएं जनता की जमापूंजी की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा हैं। ध्यान रखना होगा कि चीन दुनिया के सबसे बड़े क्रिप्टो करेंसी के बाजारों में से एक है। वहां क्रिप्टो करेंसी में होने वाले उतार-चढ़ाव से अक्सर इन करेंसी की वैश्विक कीमतें प्रभावित होती रही हैं। इसलिए सितंबर में जब चीन ने बिटकाइन पर रोक लगाई तो उस दिन इसकी कीमत दो हजार डालर से ज्यादा गिर गई। सरकारों, केंद्रीय बैंकों और समाजशास्त्रियों की सबसे बड़ी चिंता अब यह है कि कहीं क्रिप्टो को लेकर मची यह सनसनी 2000 के डाट काम बबल जैसी न साबित हो। उस दौर में आइटी कंपनियों का कारोबार बढ़ते देख लोगों ने उनमें पूंजी झोंक डाली थी और बाद में ज्यादातर कंगाल हो गए थे। उसी तरह क्रिप्टो को लेकर पूरी दुनिया आशंकित हो गई है। ये आशंकाएं बेमानी नहीं हैं, क्योंकि क्रिप्टो में स्वर्ण (गोल्ड), कंपनियों के शेयर और सरकारी (केंद्रीय) बैंकों द्वारा जारी की जाने वाली आधिकारिक मुद्राओं के साथ कोई ऐसा आश्वासन भी नहीं जुड़ा है, जो निवेशकों में यह भरोसा जगाता हो कि इनका कारोबार ठप होने पर भी निवेश का कुछ मूल्य तो अवश्य ही मिलेगा। क्रिप्टो करेंसी को आधुनिक समय की महामारी कहने के पीछे सबसे अहम कारण इन मुद्राओं का आभासी (वर्चुअल) होना, सरकारी नियंत्रण से बाहर होना और इनकी कीमतों का बेहद खतरनाक ढंग से चढा (वैल्यूशन) है। अभी निवेशकों में इसका आकर्षण इसीलिए है, क्योंकि आभासी होने के बाद यह खरीदार के पास इसके मालिकाना हक का अहसास कराती है और इसके चोरी होने जैसे खतरे न्यूनतम हैं। लेकिन कुछ ही महीने पहले कर्नाटक से सामने आए बिटकाइन घोटाले से क्रिप्टो के वेबसाइटों की हैंकिंग का खतरा भी उजागर हो गया है। कर्नाटक में श्रीकृष्ण उर्फ श्रीकी ने बिटकाइन एक्सचेंज को हैक करके जिस तरह करोड़ों के बिटकाइन अपने खाते में भेज दिए, उससे क्रिप्टो खरीदारों की पूंजी के कभी भी स्वाहा होने का खतरा साफ दिखने लगा है। पहले से ही साइबर लुटेरों (हैकरों) के कारण संकट में पड़ी इलेक्ट्रानिक या डिजिटल लेनदेन की व्यवस्था को देखते हुए यह आशंका सहज ही उपज सकती है कि क्रिप्टो कहीं सच में एक बुलबुला न साबित हो। निवेशकों को क्रिप्टो की ओर जो दावा करते हुए लुभाया जाता रहा है, उसमें एक तर्क बिटकाइन आदि को डिजिटल गोल्ड की तरह निवेश का एक आकर्षक विकल्प बताना है। लेकिन ध्यान रहे कि सरकारी मुद्राओं से बाहर किसी भी चीज में निवेश उसके मौलिक या आधारभूत मूल्य (फंडामेंटल वैल्यू) से तय होता है। इस मूल्यांकन में फंडामेंटल वैल्यू ऐसी रकम होती है, जिसके आधार पर किसी संपत्ति के पैदा होने की उम्मीद रखी जाती है। मसलन यदि निवेशक किसी कंपनी में निवेश करता है तो ऐसा वह इस प्रत्याशा में करता कि आगे चलकर कंपनी मुनाफा कमाएगी। इससे शेयर की बढ़ी हुई और लाभांश के रूप में निवेशक फायदा उठाने की स्थिति में होगा। इसी तरह केंद्रीय-सरकारी बैंकों की मुद्राओं को एक तय सिस्टम के दायरे में लेनदेन का आसान जरिया माना जाता है, क्योंकि उस मुद्रा पर छपी कीमत के बराबर रकम सरकार देने का वचन देती है। लेकिन क्रिप्टो के मामले में स्वर्ण या शेयर में निवेश और सरकारी मुद्राओं जैसे आश्वासन नहीं हैं। इनमें फंडामेंटल वैल्यू तय करने का कोई आधार या इनके एवज में दी जाने वाली संपत्ति मौजूद नहीं है।

# पीएम ने कृषि क्षेत्र में बजट के प्रावधानों पर की चर्चा, बोले- एक क्लिक पर करोड़ों किसानों के खातों में पैसे ट्रांसफर होना गर्व की बात

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कृषि क्षेत्र में बजट के प्रावधानों को लेकर चर्चा की। मोदी ने कहा कि ये ये सुखद संयोग है कि 3 साल पहले आज ही के दिन पीएम किसान सम्मान निधि की शुरुआत की गई थी। ये योजना आज देश के छोटे किसानों का बहुत बड़ा संबल बनी है। इसके तहत देश के 11 करोड़ किसानों को लगभग पौने 2 लाख करोड़ रुपये दिए जा चुके हैं। इस योजना में भी हम स्मार्टनेस का अनुभव कर सकते हैं। सिर्फ एक क्लिक पर 10-12 करोड़ किसानों के बैंक खातों में सीधे पैसे ट्रांसफर होना अपने आप मे हर भारतीय के लिए गर्व करने वाली बात है। मोदी ने कहा कि बीते 7 सालों में हमने बीज से बाजार तक अनेक नई व्यवस्थाएं तैयार की हैं, पुरानी व्यवस्थाओं में सुधार किया है। सिर्फ 6 सालों में कृषि बजट कई गुना बढ़ा है। किसानों के लिए कृषि लोन में भी 7 सालों में ढाई गुना की बढ़ोतरी की गई है। मोदी ने कहा कि इस बार के बजट में कृषि को आधुनिक और स्मार्ट बनाने के लिए मुख्य रूप से 7 रास्ते सुझाए गए हैं। पहला- गंगा के दोनों किनारों पर 5 कि.मी. के दायरे में नेचुरल फार्मिंग को मिशन मोड पर कराने का लक्ष्य है। दूसरा एग्रीकल्चर और हॉर्टीकल्चर में आधुनिक टेकनॅलॉजी किसानों को उपलब्ध कराई जाएगी। तीसरा- खाद्य तेल के इंपोर्ट को कम करने के लिए मिशन ऑयल पाम को सशक्त करने पर बल दिया गया है। चौथा- खेती से जुड़े उत्पादों के ट्रांसपोर्टेशन के लिए पीएम गति-शक्ति प्लान द्वारा लॉजिस्टिक्स की नई व्यवस्थाएं बनाई जाएंगी। बजट में पांचवां समाधान दिया गया है कि एग्री-वेस्ट मेनेजमेंट को अधिक दुँहँग किया जाएगा, वेस्ट टू एनर्जी के उपायों से किसानों की आय बढ़ाई जाएगी। छठा सॉल्यूशन है कि देश के डेढ़ लाख से भी ज्यादा पोस्ट ऑफिस में रेगुलर बैंकों जैसी सुविधाएं मिलेंगी, ताकि किसानों को परेशानी ना हो। सातवां ये कि एग्री रिसर्च और एजुकेशन से जुड़े सिलेबस में में आज के आधुनिक समय के अनुसार बदलाव किया जाएगा। मोदी ने आगे कहा कि माइक्रो इरिगेशन भी इनपुट कॉस्ट कम करने और ज्यादा प्रोडक्शन करने का बहुत बड़ा माध्यम है।की मांग भी है। केन-बेतवा लिंक परियोजना से बुंदेलखंड में क्या परिवर्तन आएंगे, ये आप सभी भलीभांति जानते हैं। उन्होंने आगे कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस 21वीं सदी में खेती और खेती से जुड़े ट्रेंड को बिल्कुल बदलने वाली है। किसान ड्रोन्स का देश की खेती में अधिक से अधिक उपयोग, इसी बदलाव का हिस्सा है। ड्रोन टेकनॅलॉजी, एक स्केल पर तभी उपलब्ध हो पाएगी, जब हम एग्री स्टार्टअप्स को प्रमोट करेंगे। मोदी ने ये भी कहा कि पराली का मैनेजमेंट किया जाना भी उतना ही जरूरी है। इसके लिए इस बजट में कुछ नए उपाय किए गए हैं, जिससे कार्बन एमीशन भी कम होगा और किसानों को इनकम भी होगी।

# भाजपा ने की नवाब मलिक के इस्तीफे की मांग, सड़कों पर उतरकर किया प्रदर्शन

**नई दिल्ली।** मनी लांड्रिंग और दाऊद इब्राहिम के साथ कनेक्शन को लेकर गिरफ्तार किए गए महाराष्ट्र सरकार के मंत्री और नवाब मलिक की गिरफ्तारी के बाद आज प्रदेश में हंगामा तय है। नवाब मलिक को अदालत ने 3 मार्च तक ईडी की हिरासत में भेजा है। महाराष्ट्र सरकार मलिक की गिरफ्तारी का पुरजोर विरोध कर रही है। गिरफ्तारी के विरोध में महाविकास अघाड़ी के कार्यकर्ता और नेता आज सड़कों पर उतरेंगे। सत्ताधारी पार्टी के कार्यकर्ता ईडी के खिलाफ प्रदर्शन करेंगे। उधर, नवाब मलिक की बेटी नीलोफर ईडी दफ्तर पहुंच चुकी है। ईडी अधिकारी उनसे भी पूछताछ करेंगे। उधर, भाजपा भी आज नवाब मलिक को लेकर सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन कर रही है। महाराष्ट्र भाजपा प्रदेशभर में प्रदर्शन कर रही है। भाजपा के कार्यकर्ताओं ने नवाब मलिक के इस्तीफे की मांग की है। महाराष्ट्र भाजपा कार्यकर्ताओं ने महाराष्ट्र के मंत्री नवाब मलिक के इस्तीफ़े की मांग को लेकर पुणे में विरोध प्रदर्शन किया। मनी लॉन्ड्रिंग मामले में नवाब मलिक को 3 मार्च तक प्रवर्तन निदेशालय की हिरासत में भेजा गया है। महाराष्ट्र सरकार नवाब मलिक का खुलकर समर्थन कर रही है। मलिक की गिरफ्तारी के बाद मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के सरकारी आवास 'वर्षा' पर कैबिनेट मीटिंग की गई। इस मीटिंग में यह फैसला किया गया कि नवाब मलिक का इस्तीफा नहीं लिया जाएगा। शिवसेना नेता संजय राउत ने भी नवाब मलिक का समर्थन किया है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि महा विकास अघाड़ी से आमने-सामने नहीं लड़ सकते, इसलिए पीछे से अफजलखानी युद्ध चल रहा है, चलने दो। किसी मंत्री को कपट से अंदर कर आनंदित हो रहे हैं, तो होने दो। नवाब से इस्तीफा न ले. लड़ते रहें और जीतें। कंस और रावण भी मारे गए। यही हिंदुत्व है। गौरतलब है कि नवाब मलिक पर मुंबई धमाकों के दोषियों के साथ कुछ संपत्तियों के सौदों में संबंध होने का आरोप है। गिरफ्तारी से पहले मलिक से बुधवार को करीब 6 घंटे तक पूछताछ की गई। सुबह 8 बजे मलिक को ईडी अधिकारी उनके आवास से अपने दफ्तर लेकर आ गए थे। 6 घंटे की पूछताछ के बाद मलिक को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के बाद मलिक ने कहा कि हम लड़ेंगे, जीतेंगे और सभी को बेनकाब करेंगे।

## संक्षिप्त समाचार

### जल्दी कीजिए कहीं खत्म न हो जाए दिल्ली में सस्ती शराब का आफर, एक बोतल खरीदने पर दूसरी मिलेगी मुफ्त

**नई दिल्ली।** दिल्ली-एनसीआर में रहते हैं और शराब पीने के शौकीन हैं तो यह खबर जरूर पढ़ें, क्योंकि ऐसा शानदार आफर फिर शायद ही कभी मिलेगा। 'एक बोतल खरीदने पर दूसरी बोतल फ्री' और 'एक पेटी खरीदने पर दूसरी पेटी फ्री' का आफर दिल्ली में शराब की दुकानों पर काफी दिनों से चल रहा है। इसके मार्च अंत तक चलने की उम्मीद है, लेकिन सस्ती शराब का यह आकर्षक आफर कब तक चलेगा इसका फैसला शराब के स्टाक पर होगा है। शराब की दुकानों पर मौजूद स्टाक के खत्म होने के साथ ही आफर खत्म हो जाएगा। वहीं, दिल्ली की शराब की दुकानो पर जारी इस लुभावने आफर को भुनाने वालों में सिर्फ दिल्ली ही नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश और हरियाणा के भी लोग हैं, जो आसपास के शहरों में रहते हैं। दरअसल, शराब के साथ ही बीयर भी 30 प्रतिशत तक सस्ती हो गई है। जो बीयर 125 रुपये की थी जो अब 95 रुपये की हो गई है। इसी तरह जो बीयर पहले 150 की बोतल थी, यह अब 130 की हो गई है। बडवाइजर ब्रांड की बीयर भी 140 से घटकर 130 की हो गई है और हेवर्ड-5000 भी 140 से घटकर 130 की हो गई है। दिल्ली में बीयर के 50-60 के करीब ब्रांड है, मगर बाजार में इन्हीं ब्रांड का दबदबा है। इसी तरह शराब का पापुलर ब्रांड टीचर्स पर 120 रुपये कम हो गए हैं। यह पहले 1560 रुपये की थी जो अब घटकर 1440 की रह गई है। वहीं शराब के अन्य ब्रांड पांच से लेकर सात प्रतिशत महंगे हुए हैं। फिलहाल दिल?ली सरकार की नई आबकारी नीति की वजह से कई शराब की दुकानों पर एक बोतल की खरीद पर दूसरी बोतल मुफ्त है, जबकि कुछ जगहों पर एक पेटी खरीदने पर दूसरी पेटी फ्री मिल रही है।गौरतलब है कि दिल्ली सरकार की नई नीति के तहत शहर में कुल 849 दुकानें खोलने की अनुमति मिली है। वहीं, 564 दुकानें पहले ही खुल चुकी हैं और बाकी बचीं 134 दुकानें जल्द ही खुल जाएंगी

# नवनियुक्त युवजन सभा के राष्ट्रीय सचिव अमित यादव का किया गया डासना व मसूरी में भव्य स्वागत

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** नवनियुक्त युवजन सभा के राष्ट्रीय सचिव अमित यादव का डासना स्थित कृष्णा धाम फार्म हाउस में योगेश यादव व उनकी पूरी टीम के द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इस मौके पर अमित यादव ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि वह लगभग प्रदेश के काफी जनपदों का दौरा करके आए हैं हर जगह लोगों ने परिवर्तन का मन बना लिया है। लोग वर्तमान सरकार की नीतियों से खफा है और लोग अपने आप को ठगा सा महसूस कर रहे हैं इस बार प्रदेश में चारों तरफ सपा की लहर है ।10 तारीख के बाद वर्तमान सरकार की विदाई तय है और भारी बहुमत के साथ समाजवादी पार्टी की सरकार अखिलेश यादव के नेतृत्व में बनने जा रही है। स्वागत समारोह में मौजूद मुख्य लोगों में राष्ट्रीय कार्यकारिणी योगेश यादव व रुकामकेश यादव पूर्व दिल्ली उपाध्यक्ष सदस्य इमरान, रिजवान, अनु नंबरदार ,हरेंद्र यादव ,महावीर यादव ,मदन यादव ,रतन यादव ,उस्मान प्रधान ,दिनेश प्रधान ,रवि यादव ,राजीव यादव ,पिंटू यादव, सुधीर यादव ,कामिल आदि लोग मौजूद रहे।

# 48 घंटे के अंदर हत्या की आरोपि प्रभा बर्मन को गिरफ्तार कर न्यायालय मे पेस किया गया

**श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय सतना धर्मवीर सिंह के कुशल निर्देशन,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री सुरेन्द्र जैन एवं श्रीमान एसडीओपी महोदय मैहर सुश्री हिमाली सोनी के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी मैहर के नेतृत्व में चौकी देवी जी मैहर को मिली बड़ी सफलता**

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिनेश यादव

**मैहर ।** घटना विवरणः गौरतलब है कि दिनांक 19.02.22 को सूचना प्राप्त हुई कि महाराजा नगर देवी जी मैहर मे अपने घर के अंदर संतु उर्फ संतोष बर्मन नाम के व्यक्ति की मृत्यु हो गई है जिस की लाश घर में पड़ी है सूचना पर तत्काल मौके से चौकी प्रभारी उप निरी संतोष सिंह उलाड़ी अपने

पुलिस बल के साथ मौके पर पहुँचकर घर का ताला संतोष बर्मन की पत्नी के द्वारा खुलवाया गया जो कमरे के एक कोने में खटिया के नीचे एक पोटरी बंधी रखी मिली जिसे पंचों के समक्ष खुलवा कर देखा गया जो पोटरी के अंदर संतु उर्फ संतोष बर्मन की लाश खून से लथपथ मिली जो मौके पर देहाती मर्ग क्र.0/22 धारा 174 जाफौ कायम कर जाँच मे लिया घटनास्थल एवं शव का निरीक्षण किया तथा शव का पीएम कराया गया घटनास्थल से मिले साक्ष्य एवं मृतक के शव पर चोटो के निशान हत्या को प्रमाणित कर रहे थे जिस संबंध में मृतक के पुत्र शिवा बर्मन उम्र 15 वर्ष से पूछताछ कर कथन लेख किए गए जो अपने कथन में बताया कि आरोपीया प्रभा बर्मन पति स्व संतु उर्फ संतोष बर्मन उम्र 34 वर्ष निवासी महाराजा नगर देवी जी मैहर के द्वारा पति संतु उर्फ संतोष बर्मन के द्वारा मेहनत मजदूरी न करने आए दिन शराब पीकर घर में आकर मारपीट करने पर दिनांक 18- 19/02/22 की दरमियानी रात धारदार औजार से संतोष उर्फ संतु बर्मन कि सिर व चेहरा में मारपीट कर हत्या करना तथा शव को कंबल गद्दा में रस्सी से बांधकर लास को खाट के नीचे छुपाना तथा कच्चे फर्श पर लगे खून को साफ कर गोबर से लीप कर सबूत को छुपाना बताया जो तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया जाकर उनके मार्गदर्शन में थाना मैहर मे अप.क्र.177/22 धारा 302 ,201 भादवि. आरोपीया प्रभा बर्मन के विरुद्ध कायम कर विवेचना मे लिया जाकर आरोपीया प्रभा बर्मन को गिरफ्तार किया गया जिससे हिकमत अमली से पूछताछ करने पर पति के शराब पीने की बात पर झगड़ा करना व क्रोध मे उत्तेजित होकर पति संतु उर्फ संतोष बर्मन की हत्या करना स्वीकार किया जो आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा मे रखने हेतु न्यायालय मैहर में पेश किया गया है । गिरफ्तार आरोपी-1. प्रभा बर्मन पति स्वर्गीय संतु उर्फ संतोष बर्मन उम्र 34 वर्ष निवासी महाराजा नगर थाना मैहर सराहनीय भूमिका - उप निरी संतोष सिंह उलाडी चौकी प्रभारी देवी जी मैहर, प्र.आर. अनिल त्रिपाठी , प्र आर नरसिंह शर्मा , आर. उमेश सिंह, आर प्रदीप मिश्रा आर मोहन दांगी आर धनेंद्र पटले।

# समाज की सेवा करना ही परम धर्म : पीके गुप्ता

**डेंटल के नए छात्रों को चिकित्सीय गुणों से रूबरू कराया अस्पताल के चेयरमैन ने बेहतर डॉक्टर बनने के गुर सिखाए**

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** शारदा अस्पताल के स्कूल ऑफ डेंटल साइंस की ओर से कॉलेज के सभागार में ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें अस्पताल के चेयरमैन पीके गुप्ता ने पहले दिन छात्रों का स्वागत किया और उन्हें अच्छे चिकित्सीय गुणों से रूबरू कराया। कार्यक्रम का शुभारंभ शारदा विश्वविद्यालय के चांसलर और अस्पताल के चेयरमैन पीके गुप्ता, प्रो चासंलर वाई के गुप्ता और डेंटल स्कूल के डीन डॉ एम सिद्धार्थ ने मां सरस्वती की मूर्ति के सामने दीप प्रज्ज्वलन करके किया। इसमें 2021 बैच के डेंटल में नामांकन लेने वाले सभी 90 बच्चों ने भाग लिया। इस मौके पर पीके गुप्ता ने नए छात्रों को मेडिकल क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि आज देश में हर तीसरे व्यक्ति दंत रोग से पीडित है। ऐसे में दंत चिकित्सक की समाज के प्रति काफी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। उन्होंने सभी छात्रों को सलाह दी कि वह अपने आप को दंत चिकित्सा के क्षेत्र में विकसित करें एवं मरीजों का सम्मान करें। उन्होंने कहा कि मेहनत और लगन से की गई पढ़ाई कभी बेकार नहीं जाती है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मेडिकल पढ़ाई करने के बाद छात्रों का उद्देश्य व्यवसायिक गतिविधि चलाना नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज की सेवा करना ही परम धर्म होना चाहिए। इस मौके पर प्रो चांसलर वाई के गुप्ता ने नए छात्रों को फूल देकर स्वागत किया। उन्होंने निष्ठा और ईमानदारी के साथ काम करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि बच्चों को सामने देखकर काफी खुशी हो रही है। कोरोना महामारी की वजह से दो साल के दौरान बहुत चीजें रूटीन में नहीं हो पाईं। डेंटल कॉलेज के डीन एम सिद्धार्थ ने फैकल्टी के सदस्यों से छात्रों का परिचय कराया। इस अवसर पर अस्पताल के नामचीन डॉक्टर और गणमान्य लोग मौजूद रहे।

# 5 वर्ष के बालक को बनाया गया पुलिस आरक्षक

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिनेश यादव

**मैहर ।** खेलने कूदने की उम्र में अब 5 वर्षीय मासूम बालक पुलिस विभाग में बाल आरक्षक कहलाएगा। पुलिस लाइन कटनी में इसकी पदस्थापना की गई है, पदस्थापना के बाद यह मप्र पुलिस का सबसे नन्हा बाल आरक्षक बन गया है। दरअसल 2017 में पुलिस में नौकरी के दौरान पिता की हार्ट-अटैक से मौत हो गई थी । इसके बाद 5 साल के बच्चे को अनुकंपा नियुक्ति मिली है। बाल आरक्षक को शर्तों के अधीन 7वें वेतनमान 19 हजार 500 रुपये का आधा शासन द्वारा स्वीकृत मंहगाई भत्ता मिलेगा।

# श्रीनगर में मौसम हुआ साफ, हवाई अड्डे से फ्लाइट संचालन शुरू, स्पाइसजेट एयरलाइन की पहली फ्लाइट उतरी

**श्रीनगर।** श्रीनगर में बर्फबारी के बाद आसमान में छाई धुंध अब छटना शुरू हो गई है। दृश्यता में सुधार होते ही श्रीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उड़ान संचालन शुरू हो गया है। श्रीनगर एयरपोर्ट अथारिटी के निदेशक कुलदीप सिंह ने इस बात की जानकारी देते हुए कहा कि दृश्यता 800 से बढ़कर 1500 हो गई है। यह उड़ान संचालन के लिए सही है। हमने फ्लाइट संचालन फिर से शुरू कर दिया है। संचालन के आदेश जारी होते ही दिल्ली से उड़ा स्पाइसजेट (एउ-160) श्रीनगर हवाई अड्डे पर उतरने वाली पहली एयरलाइन है। सुबह से ही कम दृश्यता होने की वजह से न तो किसी दूसरे राज्य से हवाई जहाज श्रीनगर हवाई अड्डे पर उतर पाए और न ही श्रीनगर से कोई जहाज किसी अन्य जगह के लिए उड़ान भर पाया। हालांकि श्रीनगर एयरपोर्ट अथारिटी ने पहले ही उम्मीद जाहिर की थी कि दोपहर बाद मौसम में सुधार हो जाएगा और फ्लाइट संचालन को पुनः बहाल कर दिया जाएगा।

# ब्लॉक कांग्रेस कमेटी ब्योहारी का घर चलो घर घर चलो अभियान जोरों पर

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

**ब्योहारी।** मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष कमलनाथ के निर्देश पर जिला कांग्रेस कमेटी शहडोल के अध्यक्ष आजाद बहादुर सिंह के आवाहन पर एवं संगठन प्रभारी राजेंद्र मिश्रा के मार्गदर्शन में ब्लाक कांग्रेस कमेटी ब्योहारी द्वारा लगातार 19वें दिन गुरुवार को ब्योहारी विधानसभा क्षेत्र के 5 गांवों ग्राम चरखरी 2 पोलिंग भमरहा 2 पोलिंग भननै 2 पोलिंग खामडाढ़ 3 पोलिंग मऊ 4 पोलिंग कुल 13 पोलिंग बूथों में डोर टू डोर जनसंपर्क कर ग्राम वासियों से गांव में व्याप्त समास्याओं को जाना और भाजपा राज में पड़ रही महंगाई बेरोजगारी महिला उत्पीडन बाल आपराध किसानों की समस्याओं की मार झेल रहे आम जनता ने बताया कि जब से प्रदेश में भाजपा की जनविरोधी सरकार स्थापित हुई है तब से लेकर अब तक लगातार हर वर्ग का शोषण हो रहा है इनके कुशासन में महंगाई बेरोजगारी महिला उत्पीडन बाल आपराध जैसे कई समास्याएं जो आज तक आम आदमी की मुश्किलें बढ़ा कर रख दी है वहीं दूसरी तरफ सत्ता के नशे में चूर भाजपाइ जनता के अरमानों को ऐसे रौद रहे हैं जैसे आम आदमी की कोई वैल्यू ही ना हो हर तरफ अराजकता डर भय का माहौल है देश का किसान हताश है युवा बेरोजगार है व्यापारी मंदी की मार झेल रहा है अपराधियों के हौसले बुलंद है मानो प्रदेश में कानून व्यवस्था नाम मात्र रह गई है अभियान का नेतृत्व कर रहे ब्लाक कांग्रेस कमेटी ब्योहारी के अध्यक्ष विनोद ताम्रकार ने जनता से संवाद कर भाजपा की कुनिति को उसके किए गलत कार्यों को सबक सिखाने का समय नजदीक आ गया है समय आ गया है इन्हें इनकी असली जगह दिखाने का समय आ गया है अपने ऊपर हुए हर अत्याचार का हिसाब लेने का अभियान के दौरान कांग्रेस पार्टी द्वारा चालाए जा रहे सदस्यता अभियान के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं युवाओं किसानों को भारी तादाद में कांग्रेस की रिती निती से अवगत करा कर सदस्यता ग्रहण करवाई गई व अन्याय के खिलाफ सशक्त लड़ाई लड़ने का आवाहन किया गया व भाजपा के 18 वर्षो के कुशासन को उजागर करने हेतु कमलनाथ द्वारा जारी पम्पलेट का वितरण कर भाजपा की कुनिति का पर्दाफाश किया गया अभियान के दौरान मुख्य रूप से यह रहें उपस्थित संगठन महामंत्री हरिशंकर कोरी लाल बहादुर सिंह नगर युवा कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पेंद्र पटेल युवा कांग्रेस महासचिव सतेन्द्र त्रिपाठी पिंटू महिला कांग्रेस अध्यक्ष जारीना खातुन आईटीसेल कांग्रेस अध्यक्ष आयुष ताम्रकार कमला कोरी पिंकी पटेल रामसजीवन शर्मा आनंद सिंह बघेल आदित्य सिंह बृजवासी कोल सेमाली कोल जयलाल कोल अरूण बैस नागेन्द्र वर्मा रामकृष्ण कुशवाहा सहित सैकड़ों कार्यकर्ता व आम जन मानस उपस्थित रहे।

# महाशिवरात्रि का महत्त्व एवं शिवजी को अभिषेक करने का शास्त्राधार महाशिवरात्रि

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** पृथ्वी का एक वर्ष स्वर्गलोक का एक दिन होता है । पृथ्वी स्थूल है । स्थूल की गति कम होती है अर्थात स्थूल को ब्रह्मांड में यात्रा करने के लिए अधिक समय लगता है । देवता सूक्ष्म होते हैं एवं उनकी गति भी अधिक होती है । इसलिए उन्हें ब्रह्मांड में यात्रा करने के लिए कम समय लगता है । यही कारण है कि, पृथ्वी एवं देवता इनके काल गणना में एक वर्ष का अंतर होता है । शिवजी रात्रि एक प्रहर विश्राम करते हैं । उनके इस विश्राम के काल को 'महाशिवरात्रि' कहते हैं । महाशिवरात्रि दक्षिण भारत एवं महाराष्ट्र में शक संवत् कालगणनानुसार माघ कृष्ण चतुर्दशी तथा उत्तर भारत में विक्रम संवत् कालगणनानुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को आती है **महाशिवरात्रि का शास्त्रीय दृष्टि से महत्त्व** महाशिवरात्रि पर शिवजी जितना समय विश्राम करते हैं, उस काल को 'प्रदोष' अथवा 'निषिथकाल' कहते हैं । इस समय शिव ध्यानावस्था से समाधि-अवस्था में जाते हैं । पृथ्वी पर यह काल सर्वसामान्यतः एक से डेढ घंटे का होता है । इस काल में किसी भी मार्ग से, ज्ञान न होते हुए, जाने-अनजाने में उपासना होने पर भी अथवा उपासना में कोई दोष अथवा त्रुटी भी रहे, तो भी उपासना का 100 प्रतिशत लाभ होता है । इस दिन शिवतत्त्व अन्य दिनों की तुलना में एक सहस्र गुना अधिक कार्यरत रहता है । इस दिन की गई शिव की उपासना से शिवतत्त्व अधिक मात्रा में ग्रहण होता है । इस कालावधि में शिवतत्त्व अधिक से अधिक आकर्षित करनेवाले बेलपत्र, श्वेत पुष्प इत्यादि शिवपिंडी पर चढाए जाते हैं । इनके द्वारा वातावरण में विद्यमान शिवतत्त्व आकृष्ट किया जाता है । शिवतत्त्व के कारण अनिष्ट शक्तियों से हमारी रक्षा होती है । महाशिवरात्रि के दिन शिवतत्त्व के अधिक मात्रा में कार्यरत होने से आध्यात्मिक साधना करने वालों को विविध प्रकार की अनुभूतियां होती हैं । **शिवजी का अभिषेक करने का महत्त्व एवं शास्त्राधार** महाशिवरात्रि पर कार्यरत शिवतत्त्व का अधिकाधिक लाभ लेने हेतु शिवभक्त शिवपिंडी पर अभिषेक भी करते हैं । इसके रुद्राभिषेक, लघुरुद्र, महारुद्र, अतिरुद्र ऐसे प्रकार होते हैं । रुद्राभिषेक अर्थात रुद्र का एक आवर्तन, लघुरुद्र अर्थात रुद्र के 121 आवर्तन, महारुद्र अर्थात 11 लघुरुद्र एवं अतिरुद्र अर्थात 11 महारुद्र होते हैं । **शिवपिंडी पर सतत अभिषेक की धारा क्यों की जाती है** शिव-पार्वती को जगत के माता-पिता मानते हैं । अभिषेक पात्र से गिरने वाली सतत धारा के कारण पिंडी एवं अरघा नम रहते हैं । अरघा योनि का प्रतीक है । जगन्माता की योनि निरंतर नम रहना अर्थात गीली रहना शक्ति के निरंतर कार्यरत होने का प्रतीक है । शक्ति शिव को कार्यान्वित करने का कार्य करती है । शिव तत्त्व कार्यान्वित होना अर्थात शिव का निर्गुण तत्त्व सगुण में प्रकट होना । अभिषेक करने से पूजा करने वाले को शिव जी की सगुण तरंगों का लाभ मिलता है । पिंडी में शिव-शक्ति एकत्रित होने के कारण अत्यधिक मात्रा में ऊर्जा निर्मित होती है । सामान्य दर्शनार्थियों में यह ऊर्जा सहने की क्षमता न होने के कारण उन्हें इस ऊर्जा से कष्ट हो सकता है । इसलिए पिंडी पर निरंतर पानी की धारा प्रवाहित की जाती है । इससे दर्शनार्थियों के लिए वहां की शक्ति सहने तथा ग्रहण करने योग्य बनती है । **बिल्वार्चन - शिव जी को बिल्व के पत्ते क्यों चढ़ाते है** महाशिवरात्रि पर कुछ लोग विशेष रूप से शिवजी को बिल्वार्चन अर्थात बेल पत्र अर्पित करते हैं । शिवजी के नाम का जप करते हुए अथवा उनका एक-एक नाम लेते हुए शिवपिंडी पर बिल्वपत्र अर्पण करने को बिल्वार्चन कहते है इस विधि में शिवपिंडी को बिल्वपत्रों से संपूर्ण ढक दिया जाता है । शिवजी को अगरबत्ती दिखाते समय तारक उपासना के लिए चमेली एवं हिना की गंधों की अगरबत्तियों का उपयोग किया जाता है तथा इन्हीं सुगंधों के इत्र अर्पण करते हैं । परंतु महाशिवरात्रि के पर्व पर शिवजी को केवडे की सुगंध वाला इत्र एवं अगरबत्ती का उपयोग बताया गया है । महाशिवरात्रि के पर्व पर शिवजी की पूजा में केवडे की सुगंध वाले इत्र एवं अगरबत्ती का उपयोग क्यों करें केवडे में ज्ञानतरंगों के प्रक्षेपण की क्षमता अधिक होती है । केवडा ज्ञानशक्ति के स्तर पर मारक रूपी कार्य करता है । इसलिए उसे पूर्णतः लयकारी कहा गया है । पूजाविधि लयकारी शक्ति से संबंधित नहीं है, इसलिए जहां तक संभव हो, शिव पूजन में केवडे का उपयोग नहीं करते । तत्पश्चात भी अनिष्ट शक्तियों के कष्टों पर उपाय स्वरूप केवडे के पत्ते का उपयोग किया जाता है । इस दृष्टि से महाशिवरात्रि के पर्व पर शिव जी के मारक रूप की उपासना के लिए केवडे की सुगंध वाला इत्र एवं अगरबत्ती का उपयोग करने के लिए कहा गया है ।

# पहले चार चरणों में भाजपा का सूपड़ा हुआ साफ : दीपक विग

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** सपा नोएडा के महानगर अध्यक्ष दीपक विग ने भाजपा पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में चुनाव के चार फेज समाप्त हो गए हैं। पहले चार फेज के चुनाव में भाजपा का सूपड़ा साफ हो गया है। बसपा, कांग्रेस पार्टी दिखाई नहीं पड़ रही है। केवल और केवल सपा और साइकिल निशान का झंडा बुलंद है। चार चरणों की वोटिंग के बाद बीजेपी के नेता कार्यकर्ता सुन्न और बीजेपी शून्य हो गई है। समाजवादी पार्टी हर चरण में आगे जा रही है, पार्टी चौथे चरण में ही दो शतक लगा चुकी है। सातवें चरण में बीजेपी के बूथों पर भूत नाचेंगे। बीजेपी के खिलाफ जनता में करंट है। डबल इंजन की सरकार में किसानों की आय तो दोगुनी नहीं हुई लेकिन भ्रष्टाचार और महंगाई दोगुनी हो गई है। यह उत्तर प्रदेश को बचाने का चुनाव है। सांड सड़कों पर घूम रहे हैं। गोशालाएं खाली पड़ी हैं। चुनाव आते ही भाजपा सरकार ने तीनों काले कानूनों को वापस ले लिया। किसानों को फसल का उचित दाम नहीं मिल पा रहा है। पहले, दूसरे चरण में सपा को मिले भारी समर्थन के कारण बाबा के चेहरे पर 12 बज गए हैं। भाजपा के नेता जो गर्मी निकाल रहे थे उनके चेहरे से धुआं निकलने लगा है। भाजपा का जो जितना बड़ा नेता वह उतना बड़ा झूठ बोल रहा है। झूठ बोलने के लिए उत्तर प्रदेश में बाहरी राज्यों के नेताओं को बुलाया जा रहा है। चुनाव पूरे होने के बाद बाबा गोरखपुर रवाना हो जाएंगे। भाजपा सरकार में सबसे ज्यादा असुरक्षित बहन व बेटियां हैं। उननव की बेटी को कितना लड़ना पड़ा, संघर्ष करना पड़ा। सरकार बनने पर 300 यूनिट तक किसी को बिल नहीं देना होगा। किसानों को फ्री बिजली मिलेगी। सपा पुरानी पेंशन बहाल करेगी।

# कलेक्टर साहब एक नजर इस आदेश की ओर

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिनेश यादव

**मैहर।** वैसे तो जिला के स्वस्थ विभाग कुछ करता नही लेकिन जब करता है तो केवल कागजो तक ही सीमित रह जाता है कार्यवाही जमीनी स्तर पर नही हो पाता और लोग कहते रहते है कि शिकवा और शिकायत पर कार्यवाही नही होती लेकिन सूत्रों से मिली इस धूल खा रही लगभग 7 महीने की पुरानी आदेश की कापी इस बात को साबित कर रही है कि जिले के किसी न किसी बड़े नेता का फोन का असर होगा जो आदेश का असर मैहर वेल केयर तक नही पहुच पाया है लगभग 7 महीने आदेश को हो चुके लेकिन न तो वेल केयर नर्सिंग होम बन्द हुआ न ही आदेश जारी करने के बाद स्वस्थ विभाग ने देखने की जरूरत नही समझी, अब जब वेल केयर हॉस्पिटल की रजिस्ट्रेशन निरस्त हो चुकी है तो ऐसे में अगर कोई इलाज रत मरीज के साथ कोई घटना हो जाती है तो कौन जिम्मेदार होगा अवैध नर्सिंग होम संचालक रूबी सिंह या स्वस्थ विभाग जो निरस्त का आदेश देकर अपनी जिम्मेदारी को भूल गए कि आदेश का पालन हुआ कि नही देखने तक नही गए।कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला सतना मध्य प्रदेश आदेश दिनांक 2,8,2021 दिनांक 2,7, 2021 को मैहर स्थित वेल्केर हॉस्पिटल का निरीक्षण किया गया जहां कई कमियां पाई गई जो कि निम्न अनुसार थे (1) हॉस्पिटल में कोई भी चिकित्सक एवं पैरामेडिकल स्टाफ उपस्थित नहीं पाया गया (2) हॉस्पिटल में भर्ती मरीजों संबंधी दस्तावेज संधारण व्यवस्था नहीं था (3) हॉस्पिटल में मरीजों की आकस्मिक चिकित्सा व्यवस्था नहीं पाई गई, कमियों के संबंध में संचालक वेल केयर हॉस्पिटल मैहर डॉ रूबी सिंह को कार्यालयीन पत्र क्रमांक मु,ची,अ/ नर्सिंग होम कॉल 5689-90 सतना दिनांक 2,7,2021

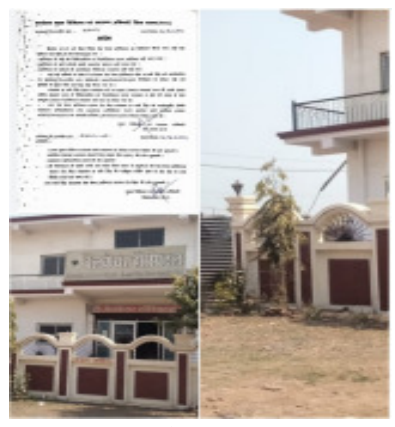

द्वारा निरीक्षण के दौरान पाई गई कमियों में सुधार किए जाने हेतु लेट किया गया था संचालक डॉ रूबी सिंह द्वारा कार्यालय को पत्र द्वारा अवगत कराया गया कि उनके द्वारा कोविड-19 कोरोना काल में चिकित्सकीय एवं पैरामेडिकल स्टाफ उपलब्ध ना होने की वजह से माह अक्टूबर 2020 से हॉस्पिटल संचालन कार्य बंद कर दिया गया है वेल केयर हॉस्पिटल सतना रोड मैहर संचालक डॉ रूबी सिंह को रु जो उपचार संबंधित स्थापना रजिस्ट्रीकरण तथा अनुज्ञापन अधिनियम 1973 अंतर्गत जारी पंजीयन क्रमांक एनएच / 8727/ 2019 एवं लाइसेंस क्रमांक 8744/ 2019 निरस्त किया जाता है। आदेश की कॉपी 5 विभागों को भेजा गया लेकिन मैहर क्षेत्र के सिविल अस्पताल मैहर के प्रभारी या बीएमओ को नही भेजा गया सूचनार्थ में इस संबंध में जब फोन पर सिविल अस्पताल मैहर के प्रभारी डॉ प्रदीप निगम से बात की गई तो बताया गया कि हमारे पास वेल फेयर हॉस्पिटल के सम्बंध में किसी भी तरह की कोई आदेश की कापी या जानकारी नही है इस बारे में जिला अधिकारी से ही बात करे।(1) अपर मुख्य सचिव मध्य प्रदेश शासन लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की ओर सूचनार्थ (2) क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य सेवाएं रीवा संभाग रीवा मध्य प्रदेश की ( 3) कलेक्टर महोदय जिला सतना की ओर, (4) टीकमदास प्रभारी एमपी ऑनलाइन जिला सतना से अनुरोध है कि बेल केयर हॉस्पिटल सतना रोड मैहर संचालक डॉ रूबी सिंह की पंजीकृत नर्सिंग होम के डेटाबेस से नाम डिलीट करने का कष्ट करें। (5) रूबी सिंह संचालक बेल केयर हॉस्पिटल सतना रोड मैहर की ओर सूचनार्थ किया गया,

# 'गंगूबाई काठियावाड़ी' संजय लीला भंसाली की है 10वीं फिल्म, अब तक इन 9 फिल्मों से हासिल कर चुके हैं मील का पत्थर

**नई दिल्ली।** संजय लीला भंसाली बॉलीवुड के दिग्गज निर्देशकों में से एक हैं। उनकी फिल्मों में भग्य सेट और अलग कहानी हमेशा से दर्शकों के दिलों को जीतती रहती है। संजय लीला भंसाली ने अब तक बॉलीवुड में कई हिट फिल्में दी हैं। उनका जन्म 24 फरवरी 1963 को मुंबई में एक गुजराती परिवार में हुआ था। संजय लीला भंसाली का बचपन आर्थिक रूप से काफी मुश्किलों में गुजरा है। संजय लीला भांसाली की मां कपड़े सिलने का काम करती थीं और घर चलाती थीं। मां की इस मेहनत और संघर्ष की वजह से भंसाली को अपनी मां से खास लगाव रहा है रिपोर्ट्स की मानें तो संजय ने अपनी मां को ट्रीब्यूट देने के लिए ही अपने नाम के बीच में उनका नाम 'लीला' नाम जोड़ा है। उन्होंने हिंदी सिनेमा में अपनी शुरुआत निर्देशक विधु विनोद चोपड़ा के असिस्टेंट के तौर पर की थी। उनके साथ संजय लीला भंसाली ने परिंदा, 1942: ए लव स्टोरी और करीब जैसी फिल्मों में काम किया। इसके बाद उन्होंने खुद के निर्देशन में फिल्में बनाने का फैसला किया। बतौर निर्देशन संजय लीला भंसाली ने साल 1996 में आई सलमान खान और मनीषा कोइराला की फिल्म खामोशी से डेब्यू किया था। हालांकि उनकी यह फिल्म बड़े पर्दे पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकती। उन्हें असली पहचान फिल्म हम दिल दे चुके सनम से मिली थी। इसके बाद संजय लीला भंसाली अपने करियर में कुछ फिल्में ऐसी बनाई हैं जो मील का पत्थर साबित हुई हैं। उन्होंने हम दिल दे चुके सनम, देवदास, ब्लैक, गोलियों की रासलीला रामलीला, बाजीराव मस्तानी, पद्मावत भंसाली के करियर की यह वो फिल्में हैं जिनकी गूंज बॉलीवुड में अब भी सुनाई देती है, और शायद सालों साल सुनाई देती रहेगी। संजय लीला भंसाली कितने सफल निर्देशक हैं इस बात का अंदाजा उनके पुरस्कारों के लगाया जा सकता है। निर्देशक की अपनी झोली में नेशनल अवॉर्ड से लेकर फिल्मफेयर और बाफ्टा अवॉर्ड तक डाल चुके हैं। भंसाली की फिल्म 'देवदास' को बेस्ट पॉपुलर श्रेणी में नेशनल अवॉर्ड मिला था। इसके बाद उनकी फिल्म 'ब्लैक' को बेस्ट फीचर फिल्म कैटेगरी में नेशनल अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इनके अलावा 'बाजीराव मस्तानी' के लिए संजय लीला भंसाली को बेस्ट डायरेक्शन के लिए नेशनल अवॉर्ड मिल चुका है।

इसके बाद रिलीज हुई संजय लीला भंसाली की फिल्म 'पद्मावत' ने बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर कैटेगरी में नेशनल अवॉर्ड जीता है। इस तरह कुल मिलाकर अलग-अलग कैटेगरी में संजय लीला भंसाली 5 बार नेशनल अवॉर्ड हासिल कर चुके हैं। साल 2015 में निर्देशक को भारत सरकार की तरफ से पद्मश्री अवॉर्ड से भी नवाजा था। संजय लीला भंसाली बतौर निर्देशक 10 फिल्में बना चुकी हैं। उनकी 10वीं फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी जल्द सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। इस फिल्म में आलिया भट्ट और अजय देवगन जैसे बड़े कलाकार मुख्य भूमिका में हैं।

# जान्हवी कपूर की तरफ से ठग सुकेश चंद्रशेखर संग कनेक्शन पर आई सफाई, गिफ्ट लेने पर कही ये बात

**नई दिल्ली।** 200 करोड़ की ठगी मामले में जेल की सलाखों के पीछे ठग सुकेश चंद्रशेखर को लेकर चल रही जांच में हाल ही में कई और बॉलिवुड ऐक्ट्रेसेस के नाम सामने आएं हैं। जैकलीन फर्नांडिस और नोरा फतेही के बाद सुकेश की लिस्ट में जान्हवी कपूर, सारा अली खान और भूमि पेडनेकर का भी नाम सामने आया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक सुकेश ने इन तीनों को भी काफी महंगे गिफ्ट्स भेजे थे। बताया जा रहा है कि सुकेश ने जान्हवी को 18 लाख रुपए का गिफ्ट भेजा था। अब इस मामले में जान्हवी कपूर के करीबी सूत्र ने कुछ खुलासे किए हैं। जान्हवी के क्लोज फ्रेंड ने दैनिक जागरण को बताया कि एक्ट्रेस का सुकेश से कोई डायरेक्ट कॉन्टैक्ट नहीं था। फ्रेंड ने बताया कि सुकेश चंद्रशेखर

के साथ जान्हवी कभी टच में नहीं रही हैं। फ्रेंड ने यह भी बताया कि जो भी रहता है वो उनकी टीम और मैनेजिंग एजेंसी से होकर गुजरता है। सूत्र ने कहा कि एक्ट्रेस इस तरह की बातों को एंटरटेन नहीं करतीं और न ही उनकी टीम या एजेंसी भी कभी सुकेश के टच में रही है। हमें मिली जानकारी के अनुसार जान्हवी एक नेल आर्ट स्टूडियो से जुड़े इवेंट में शामिल होने बेंगलुरु गईं थीं, जहां सुकेश भी मौजूद था। लेकिन जान्हवी की सुकेश या उसके साथ जुड़े लोगों से किसी भी काम या डील को लेकर कोई डायरेक्ट बातचीत नही हुई थी। खबर है कि सुकेश ने जैकलीन और नोरा के अलावा सारा अली खान, जान्हवी कपूर और भूमि पेडनेकर पर भी अपना इम्प्रेशन बनाने की कोशिश की थी। रिपोर्ट्स ऐसी भी है कि कि सारा अली को वॉट्सऐप मेसेज कर उन्हें महंगी गाड़ी गिफ्ट में देने की बात कही थी। हालांकि सारा ने ऐसा कोई गिफ्ट किसी से नहीं लिया, यह बात भी सामने आई है। जिनके नाम सामने आ रहे हैं उनकी तरफ से अभी किसी तरह का कोई अधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है।

# आइटम नंबर्स करने पर सुष्मिता सेन का बड़ा खुलासा कहा 'मेरे दो मैनेजर ने मुझे छोड़ दिया था क्योंकि वो सोचते थे कि मैं पागल हूं

**नई दिल्ली।** सुष्मिता सेन बॉलीवुड की दिग्गज और मशहूर अभिनेत्रियों में से एक हैं। उन्होंने कई फिल्मों में अपनी शानदार एक्टिंग से फैंस और दर्शकों के दिलों को जीता है। सुष्मिता सेन एक्टिंग के अलावा फिल्मों में आइटम नंबर कर भी खूब सुर्खियां बटोर चुकी हैं। उन्होंने कई फिल्मों में आइटम नंबर किए हैं जिन्हें दर्शकों का खूब

प्यार मिला है। अब आइटम नंबर्स करने को लेकर सुष्मिता सेन ने बड़ी बात की है। अभिनेत्री ने हाल ही में अंग्रेजी वेबसाइट फिल्म कंपेनियन से बातचीत की। इस दौरान सुष्मिता सेन ने अपने फिल्मी करियर को लेकर ढेर सारी बातें कीं। अभिनेत्री ने कहा कि उन्होंने कई फिल्मों में आइटम नंबर किए है। सुष्मिता सेन ने जब वह आइटम नंबर किए थे तो लोगों को सोच दूसरी तरह की थी। लोग ऐसे गानों को एक बड़े कलाकार के लिए अच्छा नहीं मानते थे। सुष्मिता सेन ने कहा, 'मुझे इस बात का बहुत गर्व है कि ऐसे समय में जब वे 'आइटम नंबर' कहते थे मैंने किए मैन लीड एक्टर और एक्ट्रेसेस आइटम नंबर नहीं करते है। इज्जत खराब हो जाएगी। मुझे ले लो। जब मैंने आइटम नंबर किए तो मेरे पास दो मैनेजर थे जिन्होंने मुझे छोड़ दिया क्योंकि वे उस समय सोचने लगे थे कि 'मैं पागल हूं कि मै एक आइटम सॉन्ग करने के लिए हां कह रही है, और आप मुझे एक पूरी फिल्म में लेने की कोशिश कर रहे थे'। दिग्गज अभिनेत्री ने मैनेजर्स के रिएक्शन के बारे में बात करते हुए आगे कहा उन दिनों अगर आपने अपने मैनेजर को किसी चीज के बारे में नहीं बताया या आपने कहा है कि आपको लगता है कि यह एक बुरा आइडिया है लेकिन मैं फिर भी इसे करना चाहती हूं', तो वह इस तरह कहेंगे कि हमारा कोई महत्व नहीं है। हम इतने सालों से इंडस्ट्री में हैं, हम जानते हैं कि यह कैसे करना है। क्योंकि आप खुद 22 साल के हैं, इसलिए अधिक लोग इस बात पर ध्यान देना शुरू कर देते हैं कि वह नहीं सुन रही है कि हम यहां इतने लंबे समय से है।' इसके अलावा सुष्मिता सेन ने और भी ढेर सारी बातें कीं। आपको बता दें कि सुष्मिता सेन कई फिल्मों में आइटम नंबर्स कर चुकी हैं। उन्होंने 'मैं कुड़ी अनजानी हूं' (फिल्म जोर), महबूब मेरे (फिल्म फीजा), दिलबर दिलबर (फिल्म सिर्फ तुम), शाकाला बेबी (फिल्म नायक) और शकीरा (फिल्म नो प्रॉब्लम) जैसे कई आइटम नंबर्स किए हैं।

# पिता महेश भट्ट की दूसरी पत्नी से इसलिए नफरत करती थीं पूजा भट्ट, सोनी राजदान का नाम लेते ही भड़क जाती थीं एक्ट्रेस

**नई दिल्ली।** बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री पूजा भट्ट का जन्म 24 फरवरी 1972 को मशहूर निर्माता-निर्देशक महेश भट्ट के घर में हुआ था। वह महेश भट्ट की पहली पत्नी किरण भट्ट की बेटी हैं। घर में फिल्मों का माहौल होने की वजह से पूजा भट्ट को बचपन से ही अभिनय की ओर रुचि रही थी। इसी वजह से उन्होंने महज 17 साल की उम्र में बॉलीवुड में कदम रख दिया था। पूजा भट्ट ने साल 1989 में पिता महेश भट्ट के निर्देशक साल 2004 में फिल्म पाप से बॉलीवुड में डेब्यू किया। इसके बाद पूजा भट्ट हॉलीडे, धोखा, कजरारे और जिस्म 2 जैसी फिल्मों को निर्देशन किया। फिल्मों के अलावा पूजा भट्ट अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी काफी सुर्खियों में रहती हैं। एक समय ऐसा था जब वह अपनी सौतेली मां सोनी राजदान को बिल्कुल पसंद नहीं करती थीं। इस बात का खुलासा खुद पूजा भट्ट ने अपने एक इंटरव्यू में किया था। सोनी राजदान के

निर्देशन में बनी फिल्म डैडी से अभिनय की शुरुआत की। इस फिल्म को दर्शकों का काफी प्यार मिला था। इसके बाद पूजा भट्ट ने दिल है के मानता नहीं, सड़क, सर, हम दोनों और चाहत जैसी कई शानदार फिल्मों में बतौर अभिनेत्री काम किया था। उनकी इन सभी फिल्मों को दर्शकों को काफी प्यार मिला। पूजा भट्ट 90 के दशक की जानी-मानी अभिनेत्री बन गई थीं। लंबे समय तक अभिनय करने के बाद पूजा भट्ट ने निर्देशक के तौर पर भी फिल्मों में हाथ आजमाया। उन्होंने बतौर साथ पिता महेश भट्ट के रिश्ते के बारे में जानने के दिन के बारे में बात करते हुए, पूजा ने मैगजीन स्टारडस्ट को बताया था, 'उन्होंने (महेश भट्ट) मुझसे कभी कुछ नहीं छिपाया। एक बार जब मैं गहरी नींद में सो रही थी और सुबह करीब डेढ़ बजे उन्होंने मुझे जगाया और मुझसे कहा कि पूजा मैं एक दूसरी औरत को देख रहता हूं। मेरा उसके साथ अफेयर चल रहा है और मैं चाहता हूं कि आप पहले जान लें'। यह मेरी मां के जाने से पहले ही था।

# फ्लाइट में चित्रांगदा सिंह के साथ हुई बदतमीजी के बाद अब आया गो एयर का रिएक्शन मामले पर कही ये बात

**ई दिल्ली।** बॉलीवुड अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह के साथ हाल में गो फर्स्ट फ्लाइट (गो एयर) में बदतमीजी की गई है। यह बदतमीजी फ्लाइट की एयर होस्टेस ने की है। इस बात की जानकारी चित्रांगदा सिंह ने सोशल मीडिया के जरिए दी। उन्होंने सोशल

मीडिया पर बदतमीजी करने वालों के नाम का खुलासा कर गो फर्स्ट फ्लाइट के खिलाफ पोस्ट लिखा था। जिसके बाद अब फ्लाइट कंपनी ने अभिनेत्री के साथ बदतमीजी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। गो फर्स्ट फ्लाइट ने चित्रांगदा सिंह के साथ बदतमीजी करने वाली सभी एयर होस्टेस के खिलाफ जांच शुरू कर दी है। इस बात की जानकारी फ्लाइट के प्रवक्ता ने की है। प्रवक्ता ने हाल ही में अंग्रेजी वेबसाइट टाइम्स ऑफ इंडिया से बात की। इस दौरान उन्होंने चित्रांगदा सिंह के साथ फ्लाइट में हुई बदतमीजी के लिए माफा मांगी और इस पूरे मामले की जांच करने का आश्वासन दिया है। फ्लाइट के प्रवक्ता ने कहा, 'मामले की जांच की जा रही है। जांच के निष्कर्षो के आधार पर, यह तय किया जाएगा। लेकिन ऐसे मामलों में हमारी जीरो टॉलरेंस की नीति है।' इतना ही नहीं अभिनेत्री को फ्लाइट कंपनी की तरफ से कॉल भी किया गया है। गौरतलब है कि हाल ही में चित्रांगदा सिंह ने दिल्ली से मुंबई के लिए फ्लाइट ली थी। इस दौरान गो फर्स्ट फ्लाइट की एयर होस्टेस ने उनके साथ बदतमीजी की थी। जिसके बाद अभिनेत्री ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम की स्टोरी पर पोस्ट शेयर कर अपना गुस्सा जाहिर किया था। चित्रांगदा सिंह ने पोस्ट में लिखा था, 'फ्लाइट 91 गो एयर दिल्ली से मुंबई। इसमें की एयर होस्टेस सबसे बदतमीज है। इनमें रिंकू सिंह, जैमी, क्रिस्टोफर और मिनल सभी को तमीज सिखाइएं। सभी बहुत ज्यादा बदतमीज है। इन सभी का व्यवहार बहुत बुरा है। मुझे अपने एयर इंडिया से जुड़े बुरे अनुभव की याद आ गई है।' चित्रांगदा सिंह ने यह भी लिखा है, 'यह हादसा मेरे साथ नहीं हुआ है लेकिन जो व्यक्ति मेरे बगल में बैठा था, उसके साथ हुआ। उसके साथ बहुत ही दुर्व्यवहार किया जा रहा था जबकि वह बहुत ही अच्छा भी भाषा में बात कर रहा था। कर्मचारियों को इतना घमंड अच्छा नहीं लगता। सोशल मीडिया पर चित्रांगदा सिंह का पोस्ट वायरल होने के बाद फ्लाइट कंपनी ने जांच का अश्वासन दिया है। बात करें अभिनेत्री के वर्कफ्रंट की तो चित्रांगदा सिंह ने सुधीर मिश्रा की फिल्म हजारों ख्वाहिशें से डेब्यू किया था। इस फिल्म में अलावा उन्होंने ये साली जिंदगी और देसी बॉयज जैसी फिल्मों में काम किया है। वह हाल ही में बॉब बिश्वास में नजर आई है। वह सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय है।

# विक्रम वेधा में कुछ ऐसे दिखेंगे सैफ अली खान, ऋतिक रोशन ने कहा सालों से उनका प्रशंसक रहा हूं.....

**नई दिल्ली।** विक्रम वेधा इस साल की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में शामिल है। इस फिल्म में ऋतिक रोशन और सैफ अली खान पहली बार एक साथ नजर आएंगे। सैफ के साथ काम करने को लेकर ऋतिक भी काफी उत्साहित हैं, जिसका अंदाजा उनकी पोस्ट से हो जाता है। सैफ अली खान सोशल मीडिया

प्लटफॉर्म्स पर नहीं, लिहाजा ऋतिक ने फिल्म से उनके लुक की पहली झलक साझा की और सैफ के साथ काम करने के अपने अनुभव के बारे में भी लिखा। यहां बता दें, विक्रम वेधा एक पुलिस–गैंगस्टर ड्रामा है, जिसकी कहानी लोकप्रिय माइथोलॉजिकल कहानी विक्रम और वेताल से प्रेरित है। गैंगस्टर के किरदार में ऋतिक रोशन हैं, जबकि सैफ पुलिस अफसर का रोल निभा रहे हैं। फर्स्ट लुक में आंखों पर चश्मा और स्टबल के साथ सैफ काफी इंटेंस दिख रहे हैं। वहीं, इस किरदार के लिए जरूरी फिटनेस भी नजर आ रही है। ऋतिक ने फर्स्ट लुक के साथ लिखा विक्रम। बेहतरीन कलाकार और साथियों में से एक, जिनका मैं सालों से प्रशंसक रहा हूं, के साथ काम करने के अनुभव को उम्रभर संजोकर रखूंगा। विक्रम वेधा का इंतजार है। बता दें, इससे पहले अपने बर्थडे 10 जनवरी को ऋतिक ने अपना यानी वेधा का फर्स्ट लुक साझा किया था, जिसमें बढ़ी हुई दाढ़ी और लम्बे बालों के साथ ऋतिक खून से लथपथ नजर आ रहे थे। इस लुक को उनके फैंस ने खूब पसंद किया था। तमिल सिनेमा की सुपरहिट विक्रम वेधा 2017 में रिलीज हुई थी। इस फिल्म में आर माधवन और विजय सेतुपति ने पुलिस ऑफिसर और गैंगस्टर के किरदार निभाये थे। फिल्म का निर्देशन पुष्कर–गायत्री ने किया था, जो हिंदी रीमेक का निर्देशन भी कर रहे हैं। फिल्म में सबसे पहले सैफ अली खान की एंट्री हुई थी। फिर चर्चा चली की सैफ के साथ आमिर खान फिल्म में नजर आएंगे। हालांकि, बाद में विजय वाले किरदार के लिए ऋतिक की एंट्री फिल्म में हुई। विक्रम वेधा में सैफ और ऋतिक के अलावा राधिका आप्टे, रोहित सर्राफ और शारिब हाशमी भी अहम किरदारों में दिखेंगे। 2019 की सुपर हिट फिल्म वॉर के बाद ऋतिक इस फिल्म के साथ बड़े पर्दे पर लौटेंगे। वहीं, सैफ की आखिरी रिलीज भूत पुलिस है, जो 2021 में डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर रिलीज हुई थी।

# सबसे अमीर जज हैं अशनीर ग्रोवर, अरबों की संपत्ति के साथ जीते हैं ऐसी लक्जरी लाइफ

**नई दिल्ली।** छमज वतजीरू श्शार्क टैंक इंडिया टीवी का एक सबसे पॉपुलर रियलिटी शो बन गया है। शो की इस अपार सफलता ने भारतीय टेलीविजन में एक नई शैली की शुरुआत की है। शो के जो

सबसे पॉपुलर शार्क हैं वो हैं भारत के संस्थापक अशनीर ग्रोवर। अशनीर फिर से खबरों में है लेकिन किसी अच्छे कारण से नहीं। उनकी पत्नी माधुरी जैन को एक आंतरिक जांच के बाद, भारतपे के साथ अपने समय के दौरान धन की कथित हेराफेरी के लिए कंपनी से निकाल दिया गया है। माधुरी जैन भारत में नियंत्रण प्रमुख के रूप में काम करतीं थीं। हाल ही में श्द कपिल शर्मा शोश में सारे शार्क एक साथ नजर आए। इस दौरान अपनी आदत से मजबूर कपिल ने इन सबकी टोटल वर्थ दर्शकों को बताई। आपको बता दें कि शार्क टैंक के सभी जजेज में से अशनीर ग्रोवर सबसे अमीर हैं। जीक्यू इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतपे के प्रबंध निदेशक है, जिसकी भारत में टॉप मॉडल की कीमत 1.89 करोड़ रुपए है, मर्सिडीज मेबैक एस650 की कीमत 2.5 करोड़ रुपए है, मर्सिडीज बेंज जीएलएस 350 जिसकी कीमत भारत में 1. 14 करोड़ रुपए से शुरू होकर ऑडी ए6 है, जिसकी कीमत शुरू होती है 58.80 लाख रुपए से। अशनीर ग्रोवर अपने परिवार के साथ एक आलीशान घर में रहते हैं। दिल्ली के पंचशील पार्क में उनके विशाल घर की कीमत कथित तौर पर 30 करोड़ रुपए से अधिक है। अशनीर ग्रोवर एक सक्रिय निवेशक रहे हैं। उन्होंने अपना पैसा गेमिंग, फिनटेक, एल्कोबेव, हेल्थ–टेक, को–वर्किंग और स्टाफिंग सहित इंजस्ट्री चेन में निवेश किया है। उनका लगभग 22 स्टार्टअप्स में निवेश है, जिनमें (लॉयल्टी), रेको एग्रीगोर लैब्स (ट्रेडिंग एनालिटिक्स), वेस्टेड (ब्रोकरेज), एटम फाइनेंस (निवेश उपकरण), जुपिटर (नियोबैंकिंग), लेनडेन क्लब, शामिल हैं।, लिक्विलोन्स (पी2पी एनबीएफसी), एंजेललिस्ट इंडिया (निवेश), रुपीफी (उधार), एम2पी (कार्ड जारी करना), इंडिया गोल्ड (गोल्ड लोन), यूनी (उपभोक्ता क्रेडिट), जूनियो (बच्चों के लिए भुगतान), क्रेडियोजेनिक्स (कलेक्शन सास), डलभ्फ (सह–कार्यस्थल), बीरा (सबवइमअ), रुी (वैकल्पिक तंबाकू), नजर (गेमिंग), पार्क (पार्किंग सहायक), मेडडो (प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल), वाहन (स्टाफिंग), अन्य।

# दोनों हाथों से खुद को समेटे नजर आईं फ्लोरा सैनी, गंदी बात एक्ट्रेस की टॉपलेस तस्वीर को देख फैंस बोले– ये फ्लोरा नहीं फायर है

**नई दिल्ली।** बॉलीवुड अभिनेत्री फ्लोरा सैनी अपने बोल्ड अंदाज को लेकर काफी सुर्खियों में रहती हैं। वह बहुत सी फिल्मों और वेब सीरीज में बोल्ड सीन करके के काफी चर्चा में रह चुकी हैं। इन दिनों फ्लोरा सैनी सोशल मीडिया पर अपनी हॉट और बोल्ड तस्वीरों को लेकर सुर्खियों में बनी हुई हैं। बीते कुछ दिनों से उन्होंने अपनी ऐसी कई तस्वीरें शेयर की हैं, जो जमकर वायरल हो रही हैं। एक बार फिर से फ्लोरा सैनी अपने बेहद हॉट और बोल्ड तस्वीर को लेकर चर्चा में हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी टॉपलेस तस्वीर शेयर की है। फ्लोरा सैनी सोशल मीडिया पर

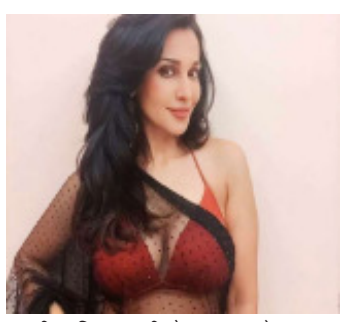

काफी सक्रिय रहती हैं। वह अपने फैंस से रूबरू होने के लिए अक्सर खास तस्वीरें और वीडियो शेयर करती रहती हैं। फ्लोरा सैनी ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर अब अपनी टॉपलेस तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में शगंदी बातश एक्ट्रेस दोनों हाथों से खुद से समेटे हुए दिखाई दे रही हैं। तस्वीर में फ्लोरा सैनी ने अपने बालों को खोला हुआ है और टॉपलेट दिखाई दे रही हैं। तस्वीर में उनका हॉट और बोल्ड अंदाज साफ देखने को मिल रहा है। सोशल मीडिया पर फ्लोरा सैनी की यह तस्वीर तेजी से वायरल हो रही है। अभिनेत्री के फैंस उनकी इस तस्वीर को खूब पसंद कर रहे हैं। साथ ही कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया भी दे रहे हैं। कई सोशल मीडिया यूजर्स और फ्लोरा सैनी के फैंस ने उनकी इस तस्वीर पर कमेंट करते हुए लिखा, सुपर हॉट। वहीं एक सोशल मीडिया यूजर ने लिखा, ये फ्लोरा नहीं फायर है। इनके अलावा और भी कई सोशल मीडिया यूजर्स ने कमेंट कर फ्लोरा सैनी की तस्वीर की तारीफ की है। आपको बता दें कि फ्लोरा सैनी गंदी बात इनसाइड एज और पौरषपुर जैसी वेब सीरीज में अपने हॉट और बोल्ड अंदाज दिखाकर काफी सुर्खियां बटोर चुकी हैं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।